प्रभात

अंदर के पन्नों में .....

★ पीएलजीए की 8वीं वर्षगांठ मनाओ! 4
★ नेपाल के चुनावी नतीजों पर प्रेस विज्ञप्ति 6
★ नयागढ़ हमलों पर बीआर का साक्षात्कार 9
★ आदिवासी जन और जंगल 12
★ खाद्यान्न संकट के हल पर 14
★ आदिवासियों की अशिक्षा पर 18
★ शहीदों की जीवनियां 21
★ पीएलजीए की लड़ाइयों की खबरें 41

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी का तिमाही मुख-पत्र

वर्ष-21 अंक-3&4 जुलाई-दिसंबर 2008 सहयोग राशि-10 रुपए

माओवादियों की जनता से अपील

झूठे विधानसभा चुनावों का बहिष्कार करो!
जनता के सच्चे लोकतंत्र की स्थापना के लिए संघर्ष करो!!

प्यारे लोगो,

छत्तीसगढ़ विधानसभा के लिए चुनावों की घोषणा होते ही पूरे प्रदेश में दलाल राजनीतिक सरगर्मियां तेज हुईं। चोर राजनेता हाथ जोड़ने की मुद्रा में आकर मुंह पर नकली मुस्कान चिपकाकर गांव-गलियों के चक्कर काटने लगे हैं। सभी पार्टियां खुद को जनता के सच्चे 'सेवक' साबित करने की होड़ में लगी हुई हैं। पैसा-दारू का लालच, बाहुबल, धार्मिक उन्माद, क्षेत्रीयवाद, जातिवाद और भाई-भतीजावाद का गंदा खेल फिर एक बार सक्रिय हो गया। दूसरी तरफ, टिकट कटने पर नाराज तथाकथित 'दिग्गज' व 'कर्मठ' नेता अपनी ही पार्टी की हाई कमान के खिलाफ कुत्तों की तरह लड़-झगड़ रहे हैं। सत्ता मोह का आलम यह है कि कई नेता अपना दल बदल रहे हैं। इधर क्रांतिकारी संघर्ष के इलाकों में सरकार ने हजारों सशस्त्र बलों को उतारकर खुलेआम घोषणा कर दी कि यह 'बैलेट और बुलेट' के बीच जंग है। दरअसल इस जुमले का असली अर्थ यह है कि गोलियां बरसाकर भी वोटों को पाना। इस सबके बीच, आगामी 14 व 20 नवम्बर को जनता को यह तय करने का 'मौका' दिया जा रहा है कि आगामी पांच सालों तक कौन-सी पार्टी के लुटेरों के हाथों में सत्ता सौम्पी जानी चाहिए।

61 सालों की यह झूठी आजादी 50 प्रतिशत लोगों को भी साक्षर नहीं बना पाई। देश के करीब 70 फीसदी लोग रोजाना 20 रुपए की आमदनी से पेट की भूख को शांत करने की नाकाम कोशिशें कर रहे हैं। देश की आधी से ज्यादा आबादी गरीबी रेखा से नीचे है। अपार प्राकृतिक संसाधनों के धनी हमारे छत्तीसगढ़ प्रदेश की हालत और भी खराब है। छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद शुरूआती 3 साल कांग्रेस पार्टी और उसके बाद 2003 से अब तक भाजपा का शासन चलता रहा। नदियों के निजीकरण से लेकर राज्य परिवहन के निजीकरण तक कांग्रेस ने किया था। ठेकेदारी प्रथा, केजुवल प्रथा के जरिए शिक्षकों, डॉक्टरों आदि शासकीय कर्मचारियों की नियुक्ति की। बड़े पूंजीपतियों व बहुराष्ट्रीय कंपनियों के साथ समझौते किए। विडम्बना यह है कि यह सब सम्पन्न धरती के सबसे गरीब लोगों के 'विकास' के ही नाम पर किया था। अपनी जायज मांगों के लिए आंदोलनरत सभी लोगों पर दमन बढ़ाया। बस्तर में जारी जनयुद्ध को कुचलने के लिए अप्रैल 2003 की शुरूआत में सीआरपीएफ को उतारा।

दिसम्बर 2003 में सत्तारूढ़ हुई भाजपा सरकार ने अपनी पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार की नीतियों का न केवल अनुसरण किया, बल्कि उन्हीं नीतियों पर और ज्यादा तेजी से अमल किया। बड़े पूंजीपतियों को बहुत सारी छूटें व रियायतें देने वाली औद्योगिक नीति और मजदूरों के अधिकारों का हनन करने वाली श्रम नीति बनाई। खदानों के निजीकरण की नीति बनाई। सत्ता में आने के बाद 24 घण्टों के अन्दर शिक्षाकर्मियों की समस्याओं को हल करने का वादा करने वाली भाजपा ने उनके साथ धोखेबाजी ही की। लोगों के हर जायज संघर्ष का जवाब भाजपा सरकार ने लाठी

2 दिसम्बर 2008 - पीएलजीए की 8वीं वर्षगांठ
क्रांतिकारी जोशोखरोश के साथ मनाओ!

और गोली से ही दिया। हिरासत में कई दलित व गरीब युवाओं की हत्याओं, कुनकुरी चावल घोटाला जैसे अनगिनत घोटालों और 'विकास' योजनाओं के नाम से लोगों के जबरिया विस्थापन के लिए भाजपा का पिछले 5 सालों का शासन बदनाम रहा।

पल्लामाड़, चारगांव, रावघाट, कुव्वेमारी, बुधिवारीमाड़, आमदाईमेट्टा, बेलाडीला और भी कई खदानों को टाटा, निको, गोदावरी इस्पात, रायपुर एल्लायज, आदि बड़ी कंपनियों को लीज पर दिया गया। टाटा, जिंदल, मित्तल और एस्सार कम्पनियों के साथ बड़े इस्पात संयंत्रों की स्थापना के समझौते हुये हैं। इनके लिए 50 हजार एकड़ से भी ज्यादा जमीन उपलब्ध कराने के लिए सरकार आदिवासी किसानों के साथ जोर-जबरदस्ती कर रही है। टाटा के लिए 10,000 एकड़ जमीन किसानों से जब्त करने सरकार लोहण्डीगुड़ा क्षेत्र के लोगों पर कहर बरपा रही है। इन उद्योगों के लिए पानी और बिजली उपलब्ध कराने इन्द्रावती नदी पर बोधघाट बांध परियोजना को सामने ला रही है। विस्थापन व विनाश का खेल खेलने दल्ली-रावघाट-जगदलपुर रेल लाइन एवं सड़कें बिछाने की योजनाओं पर अमल कर रही है। सारी चुनावी पार्टियां इसमें भाजपा के साथ खड़ी हैं।

हमारी पार्टी के नेतृत्व में दण्डकारण्य में पिछले 28 सालों से जारी संघर्ष की बदौलत गांव-गांव में जनता की जनवादी राजनीतिक सत्ता के निकाय 'जनताना सरकारों' का गठन हो रहा है। जनयुद्ध को तेज करते हुए और भी उच्च स्तर की जन सरकारों का गठन करने के प्रयास जारी हैं। अपने शोषण एवं शासन को खत्म होते देख बौखलाई सरकार ने जून 2005 से सलवा जुडूम नामक फासीवादी दमन अभियान चालू किया। 'सबको मारो, सब कुछ लूटो, सब कुछ ध्वस्त करो' - यही सलवा जुडूम का मूलमंत्र है। घरों व गांवों को जलाकर आदिवासियों को जल-जंगल-जमीन से बेदखल करके सड़क किनारे कैम्पों-थानों के बगल में स्थापित 'राहत शिविरों' (रणनीतिक बसाहाटों) में कैद किया गया है। अब इन 'राहत' शिविरों को मतदान केन्द्र का दर्जा भी दिया गया है। इसका मतलब है, 'लोकतंत्र' के नाम से इन्हीं केन्द्रों पर सारे अंदरूनी गांवों का मतदान फर्जी तौर पर करने की तैयारियां पूरी कर ली गईं। यानी अब बस्तर क्षेत्र में न सिर्फ बंदूकों के साये में, बल्कि पुलिस-अर्द्ध सैनिक बलों के कैम्पों या उनके द्वारा संचालित तथाकथित राहत शिविरों में ही मतदान की नौटंकी रची जाने वाली है।

चुनाव बहिष्कार क्यों?

जनता की वास्तविक समस्याएं संसद और विधानसभाओं में कभी भी न तो चर्चा का विषय बन सकती हैं और न ही उनके समाधान पर बात हो सकती है। सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण तो यह है कि संसद-विधानसभाओं पर साम्राज्यवादियों, दलाल बड़े व्यापारिक घरानों, बड़े जमींदारों, ठेकेदारों और माफियाओं का नियंत्रण है। चुनाव की व्यवस्था एक बड़ा झूठ है और जनता को इस खर्चीले उत्सव की कोई आवश्यकता नहीं है। ऐसी व्यवस्था को लोकतंत्र कतई नहीं कहा जा सकता जहां वोटों को शराब और पैसे से, धर्म और जातिगत भावनाओं के नाम पर खरीदा जाता है। यहां तक कि चुनाव के बाद, बाजार में खरीदे जाने वाले सामानों की तरह, विधायकों और सांसदों को खरीदा जाता है जिसका नंगा रूप हालिया 'नोट के बदले वोट' कांड में सामने आया। जब गुजरात में हजारों मुसलमानों का हत्यारा नरेन्द्र मोदी चुनाव जीतकर दुबारा मुख्यमंत्री बन सकता है, जब अपराधी, डकैत और कुख्यात भ्रष्ट राजनेता चुनाव जीत सकते हैं और जब वोट बंदूक की ताकत एवं बूथ कब्जाने, धमकाने के आधार पर पाये जाते हैं तब इसे लोकतंत्र कहना सबसे बड़ा मजाक होगा। इसीलिए हमारी पार्टी संसदीय व्यवस्था के बहिष्कार का आह्वान करती है। संसदीय संस्थाएं भ्रम पैदा करने के अलावा और कुछ नहीं कर सकतीं। सिर्फ और सिर्फ जनता के संगठित प्रतिरोध और व्यापक संघर्षों के जरिए ही जन समस्याओं का हल हो सकता है। दरअसल जनवाद के तहत जनता को वोट देने और न देने के दोनों अधिकार रहने चाहिए। पर चुनाव बहिष्कार का फैसला लेने वाली जनता को बंदूक की नोंक पर वोट देने पर मजबूर करना किस लोकतंत्र का हिस्सा है, इसका जवाब किसी के पास नहीं है।

जनवादी ताकतों, जन संगठनों और जनता से अपील

चुनाव की नौटंकी फिर एक बार सामने है। सत्ता के लिए फिर से भाजपा व कांग्रेस आमने-सामने हैं। वोटों की भीख मांगते हुए आपके सामने आ रही हैं। तीन रुपए में किलो चावल जैसी लोक लुभावन योजनाओं एवं विकास यात्रा के नाम पर रमन सिंह वोट मांग रहा है। आदिवासियों का हिन्दूकरण भाजपा का पुराना एजेन्डा है। इसकी सरकार ने 'विशेष जन सुरक्षा कानून' के नाम से एक काला कानून बनाकर दर्जनों जन संगठन कार्यकर्ताओं और बिनायक सेन जैसे मानवाधिकार कार्यकर्ता को जेल में ठूंस दिया। धार्मिक उन्माद भड़काकर लोगों, खासकर आदिवासियों के कत्लेआम करने का ताजा उदाहरण ओडिशा के कंधमाल से मिल जाता है, जबकि सलवा जुडूम के भयावह परिणाम आंखों के सामने हैं। वैसे आदिवासियों के खून से कांग्रेस के हाथ भी सने हैं। सलवा जुडूम की रूपरेखा खुद कांग्रेस-नीत यूपीए सरकार ने तैयार की जबकि उसके गुण्डा नेता महेन्द्र कर्मा ने उसकी अगुवाई की। अपने चुनावी घोषणा-पत्र में सलवा जुडूम पर चुप्पी साधकर भी कांग्रेस उसमें अपनी भूमिका से पल्ला नहीं झाड़ सकती। इसलिए इन पार्टियों को गांव में घुसने मत दीजिए। इन पार्टियों के नेताओं को मार भागाइए। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीएम) आदिवासियों के दमन के मामले में शासक वर्गीय पार्टियों से अलग नहीं है। नंदीग्राम की जनता ने इसका लाल नकाब उतार फेंका है। वोट के लिए आने पर इसे सबक सिखाइए। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी

(सीपीआई) हालांकि सलवा जुडूम को बंद करने की मांग कर रही है, लेकिन यह भी एक अवसरवादी एवं संशोधनवादी पार्टी है। यह अपना वोटबैंक बढ़ाने के लिए ही ऐसा कर रही है। दलित-बहुजनों की भलाई की बात करने वाली बसपा भी अवसरवादी और दलाल पार्टी ही है जिसको लेकर जनता को कोई भ्रम नहीं होना चहिए। पृथक बस्तर राज्य पार्टी के नाम से अभी-अभी एक छोटी-सी क्षेत्रीय पार्टी सामने आई है जो पृथक बस्तर राज्य के प्रति प्रतिबद्धता जता रही है। चुनाव के पहले कभी इस मांग को लेकर कोई विरोध-प्रतिरोध या संघर्ष न करके चुनाव के ऐन मौके पर ऐसे वादे करने से सहज ही इसकी नीयत को लेकर सवाल उठते हैं। पृथक व जनवादी बस्तर का निर्माण संघर्ष से हो सकेगा, न कि चुनाव लड़ने से।

चुनाव के जरिए वर्तमान शोषणकारी व्यवस्था खत्म नहीं होगी। जनता की बुनियादी जरूरतों की पूर्ति नहीं होगी। वर्तमान व्यवस्था का अमूल-चूल परिर्वतन संभव नहीं होगा क्योंकि यह लोकतंत्र सच्चा नहीं है, झूठा है। सच्चा लोकतंत्र का स्वरूप है 'जनताना सरकार'। जनता की अपनी सरकार। बड़े पैमाने पर जनयुद्ध में शामिल होकर उसे तेज करते हुए गांव स्तर से लेकर उन्नत स्तर तक जनताना सरकारों का गठन मजबूती एवं उसके विस्तार के लिए प्रयास करना ही हमारे सामने कर्तव्य है। इसके लिए इन फर्जी चुनावों का बहिष्कार आवश्यक है।

✶ आदिवासियों की हत्यारी और जन विरोधी पार्टियों - भारतीय जनता पार्टी एवं कांग्रेस को मार भगाओ!!

✶ वोट मांगने आने वाले अन्य पार्टियों के नेताओं से जवाब मांगो!!

क्रांतिकारी अभिनन्दन के साथ...

दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

25 अक्टूबर 2008 **भाकपा (माओवादी)**

(...पृष्ठ 11 का शेष)

नहीं चाहते थे हम उन्हें छोड़कर जाएं। उन्होंने कहा कि हम वापस आएं, हथियारों को ठिकाने पर पहुंचाकर फिर से आएं। नयागढ़ शहर के लोग आपरेशन के दौरान हमारे चारों ओर जमा हो गए और ओडिया भाषा में नारे लगाने लगे जैसे - 'माओबादी जिंदाबाद', 'इंकलाब जिंदाबाद', 'नव जनवादी क्रांति जिंदाबाद' और 'जोतने वालों को जमीन बांटो' आदि। यह वहां की जनता में हमारी बेहद लोकप्रियता को दर्शाता है।

नयागढ़ एक ऐसा जिला है जहां क्रूर सामंती शोषण है और जमींदारों व बुरे शरीफज़ादों के अत्याचार वहां रेजमर्रा का विषय है। जनता ने सुन रखा है कि आंध्रा-ओडिशा बार्डर स्पेशल जोनल कमेटी व बिहार-झारखंड सेक के तहत ओडिशा के इलाकों में हमारी गतिविधियां शुरू होने के बाद कैसे जमींदार गांव छोड़कर भाग गए थे और यह भी कि कैसे दण्डकारण्य के कुछ इलाकों में जनता की सत्ता स्थापित हुई है। हमें पूरा विश्वास है कि ओडिशा में हर जगह जनता हमें खुले दिल से स्वागत करेगी। यहां मौजूद बुरे शोषण की स्थिति, गरीबी, भूख, अभाव, पुलिस व वन अधिकारियों के अत्याचार, ठेकेदारों, जमींदारों, व्यापारियों, बड़े दलाल घरानों द्वारा जारी शोषण - ये सब व्यापक जन समुदायों को क्रांति के पथ पर लाने के लिए काफी हैं, जब हम उन्हें संगठित करना शुरू करेंगे।

✶ एमआईबी - अंत में, नयागढ़ से लाए अत्याधुनिक हथियारों से खुद को लैस करने के बाद क्या आपकी पीएलजीए भारतीय राज्य के खिलाफ युद्ध को तेज करेगी?

✶ बीआर - निश्चित रूप से। हम भारत की वर्तमान पतनशील, भ्रष्ट, शोषक और उत्पीड़क सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ अपने जायज युद्ध को तेज करेंगे ताकि मुक्त और लोकजनवादी संघीय देश की तथा शोषणविहीन समाज की स्थापना की जा सके। इसे प्राप्त करने के लिए हमारा फौरी कार्यभार है कि गुरिल्ला युद्ध को चलायमान युद्ध में बदला जाए ताकि इस अर्द्ध-सामंती व अर्द्ध-उपनिवेशिक भारतीय राज्य के प्रतिक्रियावादी सशस्त्र बलों के खिलाफ जारी युद्ध में बड़ी-बड़ी कामयाबियां हासिल की जा सकें; कि पीएलजीए को पीएलए में तथा गुरिल्ला जोनों को आधार इलाकों में बदला जाए। हमें कई और नयागढ़ पैदा करने होंगे ताकि जन समुदायों और पीएलजीए को हथियारबन्द किया जा सके और वर्तमान जनयुद्ध को फैलाया जा सके।

✶ एमआईबी - आप ओडिशा की जनता को क्या संदेश देना चाहेंगे?

✶ बीआर - सबसे पहले, हमारी पार्टी के केन्द्रीय सैन्य आयोग की ओर से भारतीय जनता को मैं अपनी क्रांतिकारी शुभकामनाएं देना चाहता हूं। उपनिवेशी दुराक्रमणकारियों, सामंती प्रभुओं और साम्राज्यवादी डकैतों के खिलाफ सशस्त्र विद्रोहों और जुझारू संघर्षों की शानदार परम्परा भारतीय जनता की रही है। उनके दृढ़ समर्थन व लोकयुद्ध में भागीदारी से हम एक शक्तिशाली जन मुक्ति सेना का निर्माण कर हमारे प्यारे देश से साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाह पूंजीवाद और सामंतवाद को उखाड़ फेंकेंगे। दुश्मन के खिलाफ चलाए गए कई महत्वपूर्ण कार्यनीतिक प्रत्याक्रमणों के दौरान जनता से हमें पादार्थिक व सक्रिय समर्थन मिला था। हाल के नयागढ़ हमलों में भी जनता का समर्थन एक बहुत बड़ा पहलू रहा जिसका इस आपरेशन की कामयाबी में बड़ा योगदान रहा। पीएलजीए को दिए समर्थन के लिए मैं नयागढ़ और ओडिशा की जनता को अपना क्रांतिकारी अभिनन्दन पेश करता हूं। मैं आपको आश्वस्त करना चाहता हूं कि ओडिशा में एक शक्तिशाली सामंतवाद-विरोधी व साम्राज्यवाद-विरोधी आन्दोलन का निर्माण करने तथा प्रदेश में एक और दण्डकारण्य व बिहार-झारखण्ड पैदा करने में हम कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। ✶

2 से 8 दिसम्बर तक पीएलजीए की 8वीं वर्षगांठ क्रांतिकारी जोशोखरोश के साथ मनाओ!

जनयुद्ध को नई ऊंचाइयों पर पहुंचा कर दुश्मन के कमांडो बलों, कार्पेट सेक्यूरिटी और खुफिया नेटवर्क को तहस-नहस कर डालो!!

पीएलजीए में बड़ी संख्या में भर्ती होकर दण्डकारण्य को आधार इलाके में बदल दो!!!

संघर्षशील लोगो और कॉमरेडो,

2 दिसम्बर को हमारी पीएलजीए (जन मुक्ति छापामार सेना) के 8 वर्ष पूरे हो रहे हैं। वर्ष 2000 में इसी दिन, जो हमारे वीर शहीद कॉमरेड्स श्याम, महेश और मुरली की पहली बरसी का दिन था, भारत की धरती पर पहली बार उत्पीड़ित जनता की अपनी सेना का उदय हुआ। यह सेना दिनोंदिन आगे बढ़ते हुए दुश्मन पर कई कार्यनीतिक जीतें हासिल कर रही है। जैसे कि माओ ने कहा, 'अगर जनता के पास एक जन सेना नहीं है तो उसके पास कुछ भी नहीं है।' पिछले 28 सालों से दण्डकारण्य में जारी संघर्ष के जरिए जनता को मिली उपलब्धियों और गांव से लेकर क्षेत्रीय स्तर तक संगठित हो रही जनता की अपनी सरकार 'जनताना सरकार' की रक्षा करने के एक मुख्य साधन के रूप में हमारी पीएलजीए उभरी है। दण्डकारण्य को आधार इलाके में बदलने के कार्यभार, जिसे हमारी एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस ने केन्द्रीय कार्यभार के तौर पर निर्देशित किया है, को पूरा करने के प्रयासों के तहत हमारी पीएलजीए ने पिछले एक साल के दौरान दुश्मन पर कई जबर्दस्त हमले किए। कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल कीं।

इनमें गोल्लापल्ली (बट्टिगूडेम), तड़िकेल, कुरसनार, मुरलीगुड़ा, कोंगापल्ली ऐम्बुश महत्वपूर्ण हैं जबकि इसके अलावा छिंदपाल, अड़ेझरी (दल्ली राजहरा), बट्टुम, चेरीबेड़ा, बारसुर, अहेरी क्षेत्र (गड़चिरोली) आदि ऐम्बुशों में भी पीएलजीए को सफलताएं मिलीं। ऐतिहासिक 'दंतेवाड़ा जेलब्रेक' का कारनामा भी इसी एक साल के दौरान हुआ है। गादेराज, मारडुम, कटेकल्याण, किरन्दुल आदि एकल कार्रवाइयां कर कई दुश्मनों को मौत के घाट उतारकर हथियार छीने गए। इसके अलावा भी कई और छोटी व मध्यम किस्म की कार्रवाइयां हुई।

सलवा जुडूमी हमलों के शिकार इलाकों में हजारों ट्रैप तैयार कर अपने पूरे इलाके को दुश्मन के लिए अभेद्य किला बनाने का कारनामा, दक्षिण बस्तर के जेगुरगोण्डा इलाके में विस्फोटकों के बिना ही पुलिया को ध्वस्त करने, बड़े पूंजीपतियों की कम्पनी एस्सार पर हमले कर दर्जनों वाहनों को जला देने की घटना, महामाया खदानों पर हमला कर पौने दो टन विस्फोटक जब्त करने की कार्रवाई - ये सारी कार्रवाइयां बढ़ते हुए जनयुद्ध में जनता और जन मिलिशिया की सक्रिय भूमिका और पहलकदमी की कहानी बयां करती हैं।

इन सबसे बढ़कर ऐतिहासिक 'नयागढ़ ऑपरेशन' का जरूर जिक्र करना होगा, जो हमारे सीएमसी के नेतृत्व में हुआ। इसमें जिला मुख्यालय में हमला बोल, सैकड़ों हथियारों को जब्त किया गया। इसके अलावा 29 जून को आंध्र-ओडिशा बार्डर जोन में आतंक का पर्याय बने आंध्र ग्रेहाउण्ड्स पर बलिमेला जलाशय में ताबड़तोड़ हमला कर 38 भाड़े के कमाण्डों और 16 जुलाई को ओडिशा के ही मलकनगिरी के पास माइनप्रूफ गाड़ी को शक्तिशाली माइन से उड़ाकर 24 पुलिस वालों को पीएलजीए ने मौत के घाट उतार दिया। इसके अलावा बिहार के झाझा के रेलवे पुलिस थाने पर की गई रेइड और झारखण्ड के बुंडू के पास हुई कार्रवाइयां बिहार-झारखण्ड स्पेशल एरिया में हुई पीएलजीए की कुछ महत्वपूर्ण कार्रवाइयां रहीं।

पिछले एक साल के दौरान देश भर में करीब 160 कॉमरेड्स शहीद हुए हैं। इनमें करीब 80-90 कॉमरेड्स हमारे दण्डकारण्य से हैं। केन्द्रीय कमेटी सदस्या कॉमरेड जानकी दीदी की मलेरिया से असमय मृत्यु हुई। शत्रु बलों पर किए गए ऐम्बुशों और मुठभेड़ों में बहादुराना लड़ाई लड़ते हुए कम्पनी कमाण्डर कॉमरेड्स रणदेव, मधु और तिरुपति; पलटन कमाण्डर कॉमरेड्स जगदीश, रतन और चैतू; सेक्शन कमाण्डर कॉमरेड्स चूटे, आयतू, बामन और राधा समेत कुछ अन्य कॉमरेड्स शहीद हुए हैं। अपने अनमोल प्राणों को न्यौछावर कर भारत की नई जनवादी क्रांति की सफलता के लिए अपने हिस्से का योगदान देने वाले इन तमाम कॉमरेडों को हमारी एसजेडसी श्रद्धांजली अर्पित करती है और उनके बलिदानों को बंद मुट्ठी से लाल सलाम पेश करती है।

जब दुश्मन ने बड़े पैमाने पर कोवर्ट नेटवर्क और मुखबिर तैयार कर हमें कंचाल जैसे भारी नुकसान पहुंचाने की साजिशें रचीं, तब हमने कंचाल हत्याकाण्ड के लिए जिम्मेदार कोवर्टों के साथ-साथ कई मुखबिरों का सफाया कर दुश्मन की साजिशों को विफल कर दिया। 2005 से 'सलवा जुडूम' के नाम से शुरू हुए बेहद पाशविक व फासीवादी अभियान से व्यापक तबाही मची हुई थी, लेकिन संघर्षशील जनता की सक्रिय भागीदारी से क्रांतिकारी गुरिल्ला युद्ध में तेजी व व्यापकता लाते हुए इसका मुंहतोड़ जवाब दिया गया है, जिससे यह अभियान अब अपनी आखिरी सांसें गिन रहा है।

अब सभी नक्सल प्रभावित राज्यों में कमाण्डो बलों का गठन किया जा रहा है। उनके सुदृढ़ीकरण और बढ़ोत्तरी जारी हैं। ग्रेहाउण्ड्स बलों की संख्या में और बढ़ोत्तरी की गई है। वो छत्तीसगढ़ की सीमाओं में घुसकर हमले कर रहे हैं। महाराष्ट्र में एएनओ (एंटी नक्सलाइट ऑपरेशन्स) के नाम से कमाण्डो बल का गठन किया गया। इनकी संख्या 500-600 तक है। छत्तीसगढ़ में भी एक हजार की संख्या से एसटीएफ कमाण्डो बलों का गठन किया है, जिसे 'ब्लैक पैंथर्स' (काले चीते) के नाम से पुकारा जा रहा है। नक्सलवादी अन्दोलन के उन्मूलन में केन्द्र सरकार प्रत्यक्ष रूप से दखल दे सके, इसके लिए उसने 'कोबरा' (COBRA - कम्बैट बटालियन फॉर रिजल्यूट एक्शन) बटालियनों

का गठन शुरू किया। आंध्र के ग्रेहाउण्ड्स की तर्ज पर 10 बटालियनों का गठन किया जा रहा है। इसके साथ-साथ, कार्पेट सेक्यूरिटी के नाम से हर 3-5 किलोमीटर की दूरी में एक कैम्प बिठाया जा रहा है ताकि जनता को आतंकित किया जा सके। सबसे पहले इसे दंतेवाड़ा और बीजापुर जिलों में लागू किया जा रहा है। ये दो जिले दमन की पाइलट परियोजना के लिए चुने गए 8 जिलों में शामिल हैं। अब दुश्मन खुफिया (इंटेलिजेन्स) नेटवर्क के गठन पर खासा जोर लगा रहा है। इसके तहत आंध्र, छत्तीसगढ़ व महाराष्ट्र की पुलिस और सीआरपीएफ अलग-अलग खुफिया नेटवर्क तैयार कर रहे हैं।

दण्डकारण्य के क्रांतिकारी आन्दोलन के उन्मूलन के लिए केन्द्र-राज्य सरकारों द्वारा जारी प्रति-क्रांतिकारी युद्ध का मुकाबला कर उसे परास्त करने के लिए हमें मुख्य रूप से तीन बिन्दुओं पर - कमाण्डो बलों का उन्मूलन; कार्पेट सेक्यूरिटी को ध्वस्त करना; और शत्रु के खुफिया नेटवर्क का हिस्सा बने कोवर्टों और मुखबिरों का सफाया करने पर जोर देना होगा।

शिकारी कुत्तों (ग्रेहाउण्ड्स), काले चीतों (ब्लैक पैंथर्स), सांपों (कोबरा) आदि खूंखार जानवरों के नाम से बन रहे कमाण्डो बलों का मुकाबला करने के लिए हम मुख्य रूप से मनुष्य की अत्युन्नत चेतना पर ही निर्भर करेंगे। गोसामा लड़ाई और बलिमेला ऐम्बुश हमारे लिए नमूने रहेंगे। इसके अलावा उरपलमेट्टा से लेकर कोंगापल्ली तक हुए कई शौर्यपूर्ण ऐम्बुशों की तर्ज पर हमें कमाण्डो बलों के छक्के छुड़ाने होंगे। इन सभी में पीएलजीए के प्रधान बलों के साथ-साथ जनता और जन मिलिशिया की भूमिका महत्वपूर्ण रहेगी। दुश्मन की कार्पेट सेक्यूरिटी को तहस-नहस करने के लिए हमें हर खेत, नदी-नाले और खेतुल को पुलिस बलों के लिए मौत के आंगन बना देने होंगे। हर उपलब्ध संसाधन का हमें सुचारू रूप से इस्तेमाल करना चाहिए। दुश्मन को इस कदर हैरान-परेशान कर देना होगा कि वे अपने कैम्पों में भी रातों को चैन की नींद न सो सकें। दुश्मन पैसों और नौकरी का लालच दिखाकर जनता में फूट डालकर मुखबिर तैयार कर रहा है। उसके खुफिया नेटवर्क का हिस्सा बने कोवर्टों और मुखबिरों की समस्या से निपटने के लिए हमें सबसे पहले व्यापक जनता को क्रांतिकारी व वर्ग राजनीति से सचेतन बनाना होगा।

प्यारे भाइयो और बहनो,

आज साम्राज्यवाद एक अभूतपूर्व आर्थिक संकट का सामना कर रहा है। दुनिया की तमाम वित्तीय कार्रवाइयों को नियंत्रित करने वाली अमेरिकी अर्थव्यवस्था भरभराकर गिर रही है। विश्व जनता का नंबर एक दुश्मन अमेरिका में अगस्त 2007 से सब-प्राइम संकट के रूप में शुरू हुआ यह बवंडर सभी देशों की अर्थव्यवस्थाओं को आर्थिक मंदी की तरफ धकेल रहा है। इस अभूतपूर्व आर्थिक संकट से निकलने के लिए अमेरिका, अपने साम्राज्यवादी चरित्र के अनुरूप अन्यायपूर्ण युद्धों की तरफ बढ़ रहा है। दूसरे देशों के संसाधनों को लूट कर अपना संकट दूर करने के लिए उन्हें धमकियां दे रहा है। इन संसाधनों और बाजारों की लूट में मोटा हिस्सा हथियाने की होड़ में साम्राज्यवादी ताकतों में अंतरविरोध भी बढ़ रहे हैं।

देश के पैमाने पर देखेंगे तो अक्टूबर के पहले सप्ताह में हस्ताक्षरित अमेरिका-भारत परमाणु समझौते के दुष्परिणाम आने वाले दिनों में सामने आने वाले हैं। इसके परिणामस्वरूप भारत की तमाम राजनीतिक, आर्थिक और फौजी नीतियां अमेरिकी हितों के अनुरूप ही बन जाएं, ऐसा खतरा है। साम्राज्यवाद-निर्देशित नीतियों के चलते पहले ही भारत की खेती-किसानी चौपट हो चुकी है और उस पर निर्भर अधिकांश जनता भीषण गरीबी से जूझ रही है। पेट्रोल की कीमतों में बढ़ोत्तरी होने और रोजमर्रा की जरूरी चीजों की कीमतें आसमान छू लेने से मध्यम वर्ग का जीवन भी बुरी तरह प्रभावित हुआ है। इससे आने वाले दिनों में अंतर्राष्ट्रीय और देश के स्तर पर आर्थिक संकट और उसके पीछे-पीछे राजनीतिक संकट और ज्यादा तेज होने वाले हैं। इन संकटों के परिणामस्वरूप जनता में उठने वाले असंतोष और गुस्से को दबाने के लिए और ज्यादा फासीवादी दमन चलाया जाएगा।

लेकिन, दमन चाहे जितना भी करें, साम्राज्यवाद-निर्देशित आर्थिक नीतियों से तबाह हुए किसान और अन्य लोग जरूर संघर्ष करते रहेंगे। यह बात सिंगूर के संदर्भ में फिर एक बार साबित हुई है। इसके बावजूद भी कि सीपीएम सरकार ने नंदीग्राम में अत्यंत फासीवादी तरीके से दमन किया, फिर भी सिंगूर के किसानों ने अपनी जमीनें बचाने के लिए संघर्ष को जारी रखकर टाटा को बंगाल से भगा दिया। नंदीग्राम और सिंगूर के रास्ते में देश भर में किसान जुझारू संघर्ष कर रहे हैं। इस प्रकार देश-दुनिया में क्रांति के अनुकूल बने हालात का फायदा उठाकर हम अपने देश में नई जनवादी क्रांति को सफल बनाने के लिए तेज कदमों के साथ आगे बढ़ेंगे।

- **गांव-गांव और घर-घर से बड़ी संख्या में पीएलजीए में भर्ती हो जाओ!**
- **जन मिलिशिया में बड़ी संख्या में शामिल हों! जनताना सरकारों की रक्षा करते हुए मजबूत करो!!**
- **पीएलजीए को शक्तिशाली बनाओ! उसे पीएलए में बदलो!**
- **गुरिल्ला युद्ध को तेज करो! उसे चलायमान युद्ध में तब्दील करो!**
- **जनयुद्ध को तेज करो! दण्डकारण्य को आधार इलाका बना दो!**
- **साम्राज्यवाद, सामंतवाद और दलाल नौकरशाही पूंजीवाद को उखाड़ फेंको!**
- **मजदूरों, किसानों और छोटे-मध्यम पूंजीपतियों की सांझी राजसत्ता की स्थापना करो!**
- **भाजपा-आरएसएस-वीएचपी-बजरंग दल आदि सांप्रदायिक फासीवादी गिरोहों को ध्वस्त करो!**

क्रांतिकारी अभिनन्दन के साथ...

दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

10 नवम्बर 2008 **भाकपा (माओवादी)**

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
केन्द्रीय कमेटी
<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

24 अप्रैल 2008

नेपाली जनता का फैसला सामंती राजशाही, भारतीय विस्तारवाद और अमेरिकी साम्राज्यवाद के खिलाफ जनादेश है! नेपाल के मामलों में साम्राज्यवादियों, खासकर अमेरिकी साम्राज्यवादियों और भारतीय विस्तारवादियों की दखलंदाजी का विरोध करो!!

नेपाल के चुनावी नतीजों ने वहां के सड़े-गले सामंती राजशाही शासन, भारतीय विस्तारवादियों के धमकियों और दबाव तथा अमेरिका के शोषण-उत्पीड़न के खिलाफ नेपाली जनता के जबर्दस्त गुस्से को साबित कर दिया। ये नतीजे लोकतंत्र, जमीन, आजीविका और साम्राज्यवादी व सामंती शोषण से सच्ची मुक्ति के लिए नेपाली जन समुदायों में बढ़ रही आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति हैं। जनता की इन्हीं आकांक्षाओं के चलते, जिन पार्टियों ने पूर्व में राजा और/या भारतीय शासक वर्गों का समर्थन किया था, या फिर सामंती व साम्राज्यवादी उत्पीड़न तथा नेपाल में भारत की दखलंदाजी के खिलाफ दृढ़ता से सामने आने से कतराया था, उन पार्टियों को लोगों की भारी बहुमत ने बुरी तरह पराजित किया। इसलिए, जब सीपीएन(एम) जैसा एक विकल्प उनके सामने आया तो जन समुदाय उत्साह के साथ माओवादियों की तरफ हो गए। सीपीएन(एम) ने सामंती राजशाही को हमेशा के लिए रद्द करने, भारत के साथ नेपाल के पूर्ववर्ती शासक वर्गों द्वारा कर लिए गए तमाम असम समझौतों को रद्द करने तथा समाज के उत्पीड़ित तबकों - यानी दलितों, आदिवासियों, अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं और महिलाओं को लोकतंत्र और समानता सुनिश्चित करने की खुले तौर पर प्रतिबद्धता दोहराई थी। सामंती, साम्राज्यवाद-परस्ती व भारत-अनुकूल दलाल पार्टियों को ठुकराकर, नेपाल की सड़ी-गली सामंती व्यवस्था में एक सच्चे बदलाव हेतु मतदान करने के लिए भाकपा (माओवादी) नेपाली जन समुदायों का अभिनन्दन करती है। प्रतिक्रियावादी ताकतों के खिलाफ जारी अपने संघर्ष, जो पिछले 10 साल के बहादुराना संघर्षों का चरम स्तर था और जिसमें 10 हजार लोगों ने अपने अनमोल प्राणों को न्यौछावर किया, में विजय हासिल करने पर हम उन्हें हार्दिक क्रांतिकारी बधाई देते हैं।

इन लम्बे संघर्षों ने, जिनकी परिणति चुनावी नतीजों के रूप में सामने आई, न सिर्फ 239 साल पुरानी राजशाही के लिए मौत की घंटियां बजा दीं, बल्कि भारतीय विस्तारवादी शासक वर्गों द्वारा लगातार जारी दबदबा, दखलंदाजी और धमकियों को भी करारा झटका दिया। और तो और, उन्होंने ऐसी तमाम दलाल-सामंती चुनावी पार्टियों का पत्ता साफ कर दिया जो भ्रष्ट, देश को बेचने वाली, जन-विरोधी तथा साम्राज्यवादियों, सामंती ताकतों और भारतीय विस्तारवादियों की वफादार कठपुतलियां साबित हो चुकी थीं। आम लोगों की नजर में ये पार्टियां संकीर्ण व स्वार्थी डकैत भर हैं जो गरीबों और शोषितों की कीमत पर अपनी जेबें भर लेती हैं। ये नतीजे उन ताकतों को सबक हैं जो महिलाओं, दलितों, अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं और आदिवासियों के दमन, शोषण और उत्पीड़न का समर्थक साबित हो चुकी थीं।

असली परीक्षा तो अब शुरू हुई जबकि सीपीएन (एम) के हाथों में सत्ता आ गई। मार्क्सवाद का यह बुनियादी उसूल है कि मौजूदा राज्य को ध्वस्त किए बिना व्यवस्था में आमूलचूल रूप से बदलाव लाना असम्भव है। 'ऊपर से' उठाए जाने वाले कदमों, यानी राजकीय आदेशों और कानूनों से व्यवस्था में सच्चा बदलाव लाना असंभव है। सत्ता में चाहे कोई भी पार्टी रहे, सबसे ज्यादा रैडिकल माओवादी ही क्यों न हों, ज्यादा से ज्यादा यह कर सकते हैं कि कुछ कानून लाएं। लेकिन उन्हें लागू करने के लिए शोषकों और उत्पीड़कों के खिलाफ जनता को गोलबंद करना और वर्ग संघर्ष को आगे बढ़ाना अनिवार्य है। गरीबों के विशाल बहुमत की मुक्ति के लिए रैडिकल (आमूलचूल) बदलाव लाने के लिए भी यह जरूरी है। कठोर संघर्ष के बिना कोई भी शासक वर्ग अपनी

सत्ता नहीं छोड़ेगा और उत्पीड़ित वर्गों के खिलाफ षड़यंत्रपूर्ण व विघटनकारी कार्रवाइयों को अंजाम देने से नहीं रुकेगा। इसलिए, सत्ता के लिए असली, कड़वी और क्रूरतम संघर्ष चुनाव के बाद, अब सामने आएगा। दरअसल, गरीब और उत्पीड़ित वर्गों के पक्ष में नेपाल का संविधान का प्रारूप तैयार करना खुद-ब-खुद एक कठोर और कड़वा संघर्ष होगा। प्रतिक्रियावादी हरेक बदलाव का पुरजोर विरोध करेंगे। संविधान सभा में बहुमत के अभाव में संविध ान में रैडिकल बदलाव लाने में माओवादी शक्तिहीन रहेंगे। या तो उन्हें प्रतिक्रियावादी ताकतों के एक तबके से संधि-समझौते करने होंगे जिसके बदले में उत्पीड़ित जनता के हितों में कटौतियां करनी पड़ेंगी, जिनके लिए वे सत्ता में आए थे। या फिर, संघर्ष को तेज करने के लिए उन्हें जनता को हर तरीके से गोलबंद करना होगा। सशस्त्र विद्रोह का तरीका भी अपनाना पड़ेगा ताकि सच्चे लोकतंत्र को लागू किया जा सके और जनता की राजसत्ता की स्थापना की जा सके। कोई दूसरा विकल्प नहीं है।

सीपीएन(एम) को हमारी पार्टी आगाह करती है कि वह अमेरिका-नीत साम्राज्यवादियों, भारतीय प्रतिक्रियावादी शासक वर्गों, नेपाल की सामंती दलाल ताकतों की साजिशों से सावधान रहे। वे सैनिक तख्तापलट व राजनीतिक हत्याएं करवा सकते हैं। आर्थिक नाकेबंदियों और तोड़फोड़ की कार्रवाइयों से चीजों की कृत्रिम किल्लत पैदा कर सकते हैं और इस तरह पूरी लोकतांत्रिक प्रक्रिया को ही खतरे में डाल सकते हैं। हम सीपीएन(एम) का आह्वान करते हैं कि वह इन प्रतिक्रियावादियों से सशस्त्र तरीकों से मुकाबला करने के लिए तैयार रहे। रैडिकल क्रांतिकारी कार्यक्रम को लागू करने की एक मात्र गारंटी यही है कि विशाल जन समुदायों की राजनीतिक वर्ग चेतना बढ़ाएं, उन्हें वर्ग संघर्ष में गोलबंद करें, शोषकों और प्रतिक्रयावादी ताकतों के खिलाफ लड़ने के लिए उन्हें हथियारबन्द व प्रशिक्षित करें ताकि अपने लम्बे वर्ग व जन संघर्षों की बदौलत मिली उपलब्धियों को बचाया जा सके। विजय से बेपरवाह हो जाने और प्रतिक्रियावादियों की पलटवारों को नजरअंदाज करने से बढ़कर वर्तमान परिस्थिति में कोई दूसरा खतरा नहीं होगा। यह ध्यान में रखना बहुत जरूरी है कि चुनाव के जरिए सत्ता में आई हुई सरकार द्वारा मिल सकने वाली उपलब्धियां काफी सीमित ही रहेंगी। उसे कई महत्वपूर्ण मामलों में तुष्टिकरण की नीति अपनानी पड़ती है, तभी इस तरह की सरकार का बचना संभव हो पाएगा। इसलिए माओवादी सरकार द्वारा समाज में या अर्थव्यवस्था में रैडिकल बदलाव लाए जाने की संभावनाओं का अति आंकलन भ्रामक ही होगा और वह वर्ग संघर्ष को जारी रखने में पार्टी की दक्षता और संभावना पर भी पानी फेर देगा।

चुनाव के पहले कोइराला गिरोह के पक्ष में जनमत पैदा करने की भारतीय विस्तारवादियों की कोशिशों का हमारी पार्टी पुरजोर खण्डन करती है। वे इस हद तक चले गए थे कि राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार एमके नारायणन ने टीवी पर खुलेआम ही कहा था कि वे कोइराला की जीत के पक्ष में हैं। बनावटी जनमत सर्वेक्षणों के हवाले से उन्होंने मीडिया में यह प्रचारित करवाया कि माओवादी तीसरे स्थान पर होंगे। उनके तमाम गणित को झुठलाकर जब माओवादी जीतने लगे थे तब मीडिया में खबरों को नियंत्रित किया गया। इस क्षेत्र में अमेरिका के नए गुर्गे की तरह उभर रहे भारतीय विस्तारवादियों को नेपाल के अंदरूनी मामलों में दखलंदाजी तुरंत बंद कर देनी चाहिए। भारत सरकार को आरएसएस के गुण्डों पर तुरंत रोक लगानी चाहिए, जिन्हें कि सीमा पार कर तेराई क्षेत्र में आतंक मचाने की छूट दी गई है। वहां पर सामंती तत्वों के खिलाफ संघर्षरत माओवादियों और उत्पीड़ित जनता पर वे हमले कर रहे हैं और हत्याएं कर रहे हैं। आरएसएस और उसके हिन्दुत्व गुण्डे अभी भी पतनशील राजशाही और उसके विशाल आर्थिक साम्राज्य का समर्थन करने की हताशापूर्ण कोशिशें कर रहे हैं। नेपाल के अंदरूनी मामलों में दखलंदाजी करने वाले और वहां की सड़ी-गली पुरानी सामंती व्यवस्था का समर्थन करने वाले इन प्रतिक्रियावादियों की भारत की जनता और भाकपा (माओवादी) कड़ी निंदा करती हैं। भारतीय विस्तारवादियों को नेपाल से दूर रहना चाहिए। अपने भविष्य का फैसला नेपाल की जनता खुद कर लेगी।

भाकपा (माओवादी) आज के नेपाल में ऐसी प्रबल संभावनाओं को देखती है कि जन समुदायों पर निर्भर रहते हुए और देश में साम्राज्यवादी/विस्तारवादी आधिपत्य के खिलाफ तथा असली भूमि सुधारों के लिए वर्ग संघर्ष को तेज किया जाए। और साथ ही साथ, प्रतिक्रियावादियों की सभी कुटिल योजनाओं और साजिशों के खिलाफ सावधान रहें। यह तभी संभव होगा जब माओवादी पार्टी का प्रमुख नेतृत्व सरकार का हिस्सा न बने और जन समुदायों को गोलबंद करते हुए वर्ग संघर्ष को जारी रखने के प्रधान कार्यभार पर जोर लगा दे। वरना, प्रतिक्रियावादी पार्टियों और साम्राज्यवादियों के साथ नियमरहित समझौते करने, पार्टी नेतृत्व और काडरों का पतन होने तथा मजबूत नौकरशाही वर्ग के उभर आने का पूरा-पूरा खतरा रहेगा। ऐसी सूरत में, अब तक प्राप्त तमाम उपलब्धियां बेकार जाएंगी और जन समुदायों के असंतोष का फायदा उठाकर प्रतिक्रियावादी पार्टियां फिर एक बार सत्ता में आ जाएंगी।

(आजाद)
प्रवक्ता,
केन्द्रीय कमेटी,
भाकपा (माओवादी)

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
केन्द्रीय कमेटी

प्रेस विज्ञप्ति

19 सितम्बर 2008

ईसाई समुदाय पर सरकारी समर्थन प्राप्त भगवा आतंकवादियों के बर्बर हमलों की निंदा करो! ओडिशा के भगवा फासीवादी व आतंकी सरगना लक्ष्मणानंदा का सफाया करने की जिम्मेदारी हमारी है!!

भगवा आतंकवादियों ने देश भर में ईसाई समुदाय पर क्रूर किस्म के हमले छेड़ दिए। इसके भयावह रूप ओडिशा, कर्नाटका और मध्यप्रदेश में देखे जा सकते हैं। इन राज्यों की पुलिस व सरकारी अमला न सिर्फ धार्मिक अल्पसंख्यकों के जानमाल की रक्षा करने में विफल हुए, बल्कि वे इन हिन्दू फासीवादी अपराधियों व आतंकवादियों की मदद कर और प्रोत्साहन देकर प्रत्यक्ष सहभागी भी बन गए। कर्नाटका के मुख्यमंत्री येदियूरप्पा ने यह कहकर कि मंगलूर, चिकमगलूर, कोलार और अन्य जगहों पर ईसाइयों के गिरिजाघरों और घरों पर हुए हमले कथित तौर पर ईसाई संगठनों द्वारा किए गए 'जबरिया धर्मांतरण' की सहज प्रतिक्रिया है, अपने हिन्दू फासीवादी चेहरे को सामने लाया। उसने यह आरोप भी लगाया कि इसके लिए ईसाई मिशनरियों को विदेशों से पैसे मिलते हैं। गृहमंत्री आचार्य ने बजरंगदल के लंपट गुण्डों को क्लीन चिट दे डाला। इन हमलों में शामिल बजरंगियों के बारे में वीडियो सबूत होने के बावजूद इसकी जांच के आदेश देने का कष्ट भी नहीं किया। इससे भी बदतर तो यह है कि येदियूरप्पा के पुलिस जवानों ने गिरिजाघरों और कॉन्वेंटों में घुसकर ननों (सन्यासिनों) और दूसरी ईसाई महिलाओं की पिटाई कर ईसाई समुदाय का अपमान किया।

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) संघ गिरोह के नव-नात्सी दरिंदों द्वारा छेड़े गए साम्प्रदायिक फासीवादी आतंक की निंदा करती है और धर्मनिरपेक्ष व लोकतांत्रिक ताकतों को एकजुट होने का आह्वान करती है ताकि धार्मिक अल्पसंख्यकों की रक्षा की जा सके और हिन्दू कट्टरपंथियों को अलग-थलग किया जा सके। येदियूरप्पा को, जिसने बहुत कम समय में ही कर्नाटका के नरेन्द्र मोदी के रूप में अपनी पहचान बना ली, साम्प्रदायिक उन्माद को भड़काने और ईसाई अल्पसंख्यकों पर हमलों को जायज ठहराने के लिए तत्काल गिरफ्तार करना चाहिए। बंद और हड़ताल के खिलाफ फैसले सुनाने वाली तथाकथित न्यायव्यवस्था ने इस पर चुप्पी साध ली जबकि हिन्दू कट्टरपंथी और पुलिस अल्पसंख्यकों पर हमले कर रहे हैं।

यह दिन के उजाले की तरह साफ है कि भगवा आतंकवादियों ने एक साजिश रची है कि धार्मिक अल्पसंख्यकों का कत्लेआम मचाया जाए और ईसाइयों को दोबारा हिन्दू धर्म अपनाने पर मजबूर किया जाए। भगवा गिरोह ने खुलेआम ही यह घोषणा की कि वे तब तक चैन की सांस नहीं लेंगे जब तक कि सभी गैर-हिन्दुओं को फिर से हिन्दुओं में धर्मांतरित न किया जाता।

ओडिशा में नवीन पटनायक सरकार की शह पर ईसाई समुदाय पर हमले लगातार बढ़ते जा रहे हैं। अशोक सिंघल, विनय कटियार, प्रवीण तोगड़िया, सुभाष चौहान आदि भगवा कट्टरवादी नेता लगातार घोषणा कर रहे हैं कि फासीवादी सरगना स्वामी लक्ष्मणानंदा की हत्या ईसाई मिशनरी संगठनों ने की, जबकि हमारी पार्टी ने स्पष्ट रूप से ऐलान किया कि हमारे पीएलजीए गुरिल्लों ने लक्ष्मणानंदा को उसके जलेसपेट आश्रम में यह सजा दी क्योंकि वह ईसाई समुदाय पर बर्बर हमलों के लिए जिम्मेदार था। इन हिटलरी गिरोहों ने यहां तक कि हमारी पार्टी के नाम से पोस्टर चस्पा दिए कि जलेसपेट आश्रम में हमले के लिए माओवादी जिम्मेदार नहीं हैं। याद रहे कि हिटलर ने रीचस्टैग (जर्मनी की संसद) को जला दिया था ताकि सामाजिक जनवादियों का दमन किया जा सके और सत्ता हथियाकर फासीवादी शासन लागू किया जा सके। भारत में हिटलर की औलादें, यानी भगवा आतंकवादी, बम विस्फोट करवाकर धार्मिक अल्पसंख्यकों को बदनाम कर रही हैं। हमारी केन्द्रीय कमेटी फिर एक बार साफ तौर पर ऐलान करती है कि लक्ष्मणानंदा को उसके दुष्कर्मों और ईसाई समुदाय पर साम्प्रदायिक हमले करने के कारण हमारे दस्तों ने ही मार डाला। भारत के हर नागरिक को अपनी मर्जी से किसी भी धर्म को चुनने और अपनी मर्जी से अपने धर्म को बदलने का अधिकार है। हिन्दू फासीवादी ताकतें धार्मिक अल्पसंख्यकों को डरा-धमकाकर इस आजादी को दबा नहीं सकतीं। हम भगवा आतंकवादियों को चेतावनी देते हैं कि हमारी पीएलजीए उनके नेताओं पर तब तक हमले जारी रखेगी, जब तक कि धार्मिक अल्पसंख्यकों पर हमले बंद नहीं करते और सांप्रदायिक उन्माद और विद्वेष भड़काना बंद नहीं करते।

(शेष पृष्ठ 17 में...)

केन्द्रीय सैन्य आयोग (सीएमसी) के चीफ कॉमरेड बसवाराज से साक्षात्कार

ऐतिहासिक नयागढ़ आपरेशन के संदर्भ में कॉमरेड बसवाराज का यह साक्षात्कार **'माओइस्ट इनफॅरमेशन बुलेटिन'** के मई 2008 अंक में छपा था, जो हमें इंटरनेट से प्राप्त हुआ। यह साक्षात्कार किसी गुरिल्ला जोन में लिया गया था। इसका हिन्दी अनुवाद हम 'प्रभात' के पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं।

– संपादक मंडल

★ एमआईबी – नयागढ़ में भाकपा (माओवादी) के नेतृत्व में पीएलजीए ने एक बड़ी रेइड को अंजाम दिया। परंतु पुलिस व सरकारी प्रवक्ता मीडिया में रिपोर्ट कर रहे थे कि रेइड के पहले ही दिन गोसामा के जंगल में 22 गुरिल्ले मारे गए और अगले दिन यह संख्या दोगुना बता रहे थे। क्या ऐसी रिपोर्टें सच हैं?

★ **बीआर** – नयागढ़ में मात खाने के बाद, कुछ सफलताएं दिखाने के लिए पुलिस द्वारा यह जानबूझकर फैलाया गया झूठ था। पुलिस आमतौर पर ऐसे झूठों का प्रयोग करती है ताकि क्रांतिकारी कतारों में भ्रम की स्थिति बनाई जा सके और पुलिस बलों का कुछ मनोबल बढ़ाया जा सके। यह मनोवैज्ञानिक युद्ध का हिस्सा है जो शासक वर्गों द्वारा हर जगह प्रयोग किया जाता है। हमारे केवल 2 कामरेड ही शत्रु के साथ मुकाबले में शहीद हुए हैं। दुश्मन के कुल तीन लोग मारे गए और बहुत सारे घायल भी हुए हैं। मैं संक्षेप में कुछ तथ्य दूंगा –

रात के 12.30 बजे आपरेशन सफल बनाकर हमारे पीएलजीए बल 16 फरवरी की सुबह गोसामा पहुंचे थे। 9 बजे के आसपास एसओजी के बल उस स्थान पर पहुंचे, तभी हमारे कामरेडों ने जवाबी गोलीबारी की। वे तुरंत ही भाग खड़े हुए। हमें मालूम था कि वो फिर आएंगे इसलिए हम भी तैयार थे, भीषण संघर्ष के लिए। 3 बजे वो सीआरपीएफ के साथ फिर आ गए। करीब 120 की संख्या थी उनकी। हमारे कामरेडों के पहले दफे की फायरिंग में ही उनके तीन जवान ढेर हो गए जिनमें एक सहायक कमांडेन्ट भी था। शुरूआत में ही वो चकरा गए और भागने लगे। 2 किलोमीटर तक हम उन्हें दौड़ाते रहे। वो भी लगातार भागते ही रहे। बाद में गांव वालों से पता चला कि वो यहां से 20 किलोमीटर दूर भाग गए थे। अमाने-सामने की लड़ाई में एंटी-नक्सलाइट फोर्स की यही 'बहादुरी' है!!

एक दिलचस्प तथ्य यह है कि पुलिस वाले 24 घंटे के बाद भी अपने मरे हुए जवानों की लाशें लेने वापस नहीं आए। 17 तारीख की शाम को गांव वालों की मदद से लाशें उठवा ले गए। 'साहसिक' एसओजी बल गोसामा में लाशों को इकट्ठा करने भी वापस नहीं आए।

हमने इस मुठभेड़ में 2 कॉमरेडों को खो दिया – कॉमरेड रामबती और कॉमरेड इकबाल, एक 7वीं कंपनी से और एक 9वीं कंपनी से। बाकी सभी अगली सुबह गोसामा से रिट्रीट हुए। इस घटना के बाद हमारा एक भी कामरेड हताहत नहीं हुआ।

★ एमआईबी– नवीन पटनायक का बयान है कि हमने 80 प्रतिशत हथियार पुनः प्राप्त कर लिए हैं, क्या यह सच है?

★ **बीआर**– यह एक और बड़ा झूठ है। पुलिस को ऐसा कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ है। हमने भारी मात्रा में हथियार व गोली-बारूद जला डाले क्योंकि उन सभी को साथ लाना मुश्किल था। हमारा अंदाजा था कि वहां 400-500 हथियार ही होंगे। उसके लिए हम तैयार भी थे। लेकिन वहां तो दोगुने से ज्यादा हथियार मिले थे। चूंकि वह जगह हमारे संघर्ष के मजबूत इलाके से काफी दूर थी, इसे देखते हुए उन सबको लाना असंभव था। इसलिए हमने 400 के आसपास घटिया किस्म के हथियारों को जला दिया, जिन्हें पुलिस ने पुनः प्राप्त कर लेने का दावा किया। हमने अपेक्षाकृत निम्न किस्म के हथियारों को ही आग के हवाले कर दिया और अत्याधुनिक हथियारों को आपने साथ ले आए, (वो गुरिल्लों के कंधों पर सुसज्जित नए चमकते हथियारों की और इशारा करते हैं) इन जैसे!

★ एमआईबी – आप अपने आपरेशन को सफल बताते हैं, लेकिन पुलिस व ओडिशा सरकार इसके विपरीत दावा कर रही हैं?

★ **बीआर** – अगर आप इस कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण की आपरेशन के लक्ष्यों और इस आपरेशन के पहले हमारी उम्मीदों के नजरिए से देखते हैं, तो मैं कहता हूं कि हम सफल हुए हैं। पहले की योजना और अनुमान की तुलना में हमने कहीं ज्यादा हथियार छीन लिए। हमारा हरेक कॉमरेड दो-दो, यहां तक कि कुछ तो तीन-तीन हथियार और गोली-बारूद भी ढोकर लाए। इतनी भारी मात्रा में, और इतनी दूर हथियारों को लाना बहुत ही मुश्किल काम था। दरअसल, हमें इतने सारे स्वचालित व अर्द्ध-स्वचालित हथियार मिलने की उम्मीद नहीं थी। इस दृष्टि से यह एक महान सफलतापूर्ण आपरेशन है। हालांकि हमें कुछ हथियारों को जलाना पड़ा क्योंकि हम उन्हें नहीं ला सकते थे। यह हमारे लिए कार्यनीतिक सबक रहेगा। अगर हमें यह जानकरी होती कि नयागढ़ में इतने सारे हथियार हैं तो हमारी योजना कुछ और ही रहती।

★ एमआईबी – इस सफल रेइड के बाद ओडिशा सरकार और केन्द्र सरकार की क्या प्रतिक्रिया रही?

★ **बीआर** – इसका अंदाजा आपने रेइड के बाद मीडिया में आई खबरों से लगाया ही होगा। ओडिशा सरकार इतनी भयभीत हो गई थी कि उसने भुवनेश्वर के पुलिस थानों की सुरक्षा पुख्ता कर दी क्योंकि राज्य की राजधानी से नयागढ़ 100 किलोमीटर

से भी कम दूर है। यहां तक कि नव उदारवादी 'मार्क्सवादी' बुद्धदेव ने भी कोलकाता शहर की सुरक्षा पुख्ता कर दी। ये मूर्ख शासक गुरिल्ला युद्ध के मूलभूत नियमों को कभी नहीं समझते कि हम दुश्मन के कमजोर बिन्दुओं पर प्रहार करते हैं, न कि राज्य की राजधानी में जहां वह मजबूत रहता है।

बाद में उन्होंने हताशा में कुछ कदम उठाए ताकि थोड़ी बहुत सफलता को दिखाया जा सके। 600 सीआरपीएफ के जवानों को, 1,000 से ज्यादा ओडिशा के एसओजी बलों को, आंध्र प्रदेश से 200 ग्रेहाउंड्स को भी बुला लिया। गोसामा जंगल में जमीनी बलों की मदद के लिए भारतीय वायु सेना ने दो हेलिकॉप्टर उपलब्ध करवाए। वास्तव में यह दो देशों के बीच युद्ध जैसा था। लेकिन यहां, इस गृहयुद्ध में फर्क यह है कि आम जनता हमारी तरफ है, जबकि दुश्मन के बल हेलिकॉप्टरों, टोही विमानों आदि के प्रयोग के लिए मजबूर हो गए क्योंकि जनता से कोई सूचना नहीं मिल रही थी। इससे दुश्मन बल इस हद तक बौखला गए थे कि उन्होंने ओडिशा में इन हमलों के बाद मासूम लोगों पर हमले किए। 300 से ज्यादा आम, निर्दोष लोगों को उन्होंने अलग-अलग स्थानों से गिरफ्तार कर लिया। इनमें से एक भी नयागढ़ हमलों में शामिल नहीं था, न ही किसी को इस सम्बन्ध में कोई जानकारी थी। उदाहरण के लिए गंजाम जिला के बंजरनगर के एक आदिवासी युवक को सीआरपीएफ ने गोली मार दी।

ये सभी गिरफ्तार लोग निर्दोष और भूमिहीन किसान थे। गांव के सभी नौजवान उनको संदिग्ध माओवादी नजर आते हैं। कुछ गांवों व माओवादियों के कुछ संदिग्ध ठिकानों पर बमबारी करने की भी बात उठी थी। लेकिन विभिन्न पार्टियों और जनता से विरोध उठने के डर से गृहमंत्री शिवराज पाटिल ने इस प्रस्ताव को रोका। चूंकि यह चुनावी साल भी है, इसलिए वो माओवादियों और आदिवासी गांवों पर ऐसे कदम उठाने से पहले राजनीतिक सहमति का इंतजार कर रहे थे। जनता पर ओडिशा पुलिस व सीआरपीएफ की ज्यादतियां और प्रताड़नाएं लगातार बढ़ रही हैं। लेकिन ये भाड़े के बल और शासक वर्ग जितनी हिंसा करेंगे उतना ही वे जनता से अलग-थलग पड़ जाएंगे।

★ एमआईबी - नयागढ़ रेइड के बाद पुलिस आपरेशन में आंध्र के ग्रेहाउंड्स की भूमिका को लेकर खूब बात हुई थी। क्या आपके कैडरों के मनोबल पर इसका कोई प्रभाव पड़ा, क्योंकि ग्रेहाउंड्स की छवि आंध्रप्रदेश के माओवादी आंदोलन को दबा देने की बनी हुई है?

★ **बीआर** - आंध्र के ग्रेहाउंड्स की क्षमता, साहस और लड़ने की दक्षता एक बहुत बड़े मिथक (भ्रम) के अलावा कुछ नहीं है। आंध्र में हमारे आंदोलन को लगा झटका ग्रेहाउंड्स के कारण नहीं, बल्कि उसके कई और प्रमुख कारण हैं। आंध्र के ग्रेहाउंड्स का गठन तो 1989 में ही हो गया था जबकि आंध्र प्रदेश में माओवादी आंदोलन कई छलांगें मारता हुआ 1997 तक विकसित होता रहा। दरअसल उन्हें तथाकथित सफलताएं माओवादी गुरिल्लों के सामने वास्तविक जमीनी युद्ध लड़ने से हासिल नहीं हुईं। वो घृणित तरीके से कार्रवाइयों को अंजाम देते हैं, जैसे कि गुरिल्लों के खाने में जहर मिलवाकर बेहोश कर देना, कोवर्ट घुसाना आदि, जैसे मार्च में पामेड़ में हुआ था। हमारे कई नेताओं की शहादत एपी एसआईबी द्वारा कई जगहों से पकड़ कर जंगल में ले जाकर ठंडे दिमाग से हत्या करने के कारण हुई है, जिसे एपी ग्रेहाउंड्स की विजय के रूप में प्रचारित किया जा रहा है। कामरेड बीके व उनकी जीवन साथी कामरेड करूणा, संदे राजमौली (मुरली) सोमन्ना आदि - सभी सीसी सदस्यों व राज्य कमेटी सदस्यों की हत्याएं इसी तरह से की गई हैं।

गोसामा में भी वो हमारे निकल जाने के बाद में आए थे क्योंकि उन्हें मालूम था कि आमने-सामने होने से उन्हें नुकसान हो सकते हैं। दरअसल ग्रेहाउंड्स बल बहुत धूर्त और चालाक किस्म के हैं। जब उनको थोड़ा सा भी जोखिम का काम महसूस होता है तो वो आगे नहीं बढ़ते। जब उनको पीएलजीए की गतिविधियों के बारे में अपने कोर्वटों व मुखबिरों के जरिए पुख्ता जानकारी मिल जाती है, तभी भारी संख्या में आकर हमला करते हैं। और उन्हें सबसे बढ़िया हथियारों, यानी ग्रेनेड लांचर, राकेट लांचर, मोर्टार आदि क्षेत्रीय हथियार उपलब्ध किए जाते हैं। उनको मजबूत साजोसामन की सहायता मिलती है और उच्च केन्द्रीकृत तालमेल व कमाण्ड के साथ हमले करते हैं। इसके साथ-साथ हवाई मदद भी उनको मिलती है। कुल मिलाकर, मैं कह सकता हूं कि इन तथाकथित इलीट एंटी-नक्सल स्पेशल बलों की वस्तविक लड़ाई से ज्यादा नुमाइशी की जाती है। इसके उलट एसओजी के जवान तो मुर्खता से आगे आए थे जिन्हें हमारे बलों ने मार-मार कर भगा दिया। हम अपनी जमीन पर ग्रेहाउंड्स को अच्छा-खासा झटका देने को बेताब थे, लेकिन वे मैदान में आने में जानबूझकर देरी की। जब हमारे पीएलजीए बलों ने रेइड के बाद सुन लिया कि ग्रेहाउंड्स बल भी पहुंच गए हैं, तो हमारे लड़ाके बार-बार कह रहे कि कुछ दिन यहीं रुककर इस तथाकथित इलीट बल के छक्के छुड़ा दें। अगर वो हमारे इलाके में कदम रखने का साहस करेंगे तो हम उनको मटियामेट कर देंगे।

★ एमआईबी - आपकी पीएलजीए के कितने लड़ाकों ने इन रेइडों में भाग लिया?

★ **बीआर** - केवल 175 कामरेड थे, जिनमें 20 जन मिलिशिया के सदस्य थे। केवल 90 साथियों के पास ही पुख्ता हथियार थे।

★ एमआइबी - तब आपने इतनी बड़ी संख्या में मौजूद फोर्स को कैसे काबू कर लिया?

★ **बीआर** - यह आश्चर्य और साहस का मामला था, जिसका उम्दा प्रदर्शन किया हमारे पीएलजीए के बहादुर लड़ाकों व कमांडरों ने। नयागढ़ की पुलिस प्रशिक्षण स्कूल में 400 पुलिस जवान थे और हम केवल 52 थे। मात्र दो मिनट के अंदर हमने उसे अपने नियंत्रण में ले लिया था। पुलिस मुख्यालय पर 100 से ज्यादा पुलिस वाले तैनात थे मगर हमारे मात्र 32 गुरिल्ला योद्धाओं ने उसे अपने नियंत्रण में ले लिया। सभी रास्तों से आने वाले दुश्मन के बलों को रोके रखने के लिए हमारे पास पर्याप्त बल

नहीं थे। लेकिन हम दुश्मन को रोकने में कामयाब हुए और सुरक्षित वापस आ गए। इस आपरेशन का नाम हमने 'आपरेशन रोप-वे' दिया। इसका मतलब यह है कि हमारे गुरिल्ला बलों की ऐसी रणनीति थी कि जिस प्रकार रोप-वे से उतर जाते हैं उसी प्रकार दुश्मन पर सीधा जाकर टूट पड़ना था। सब कुछ ठीक वैसे ही हुआ जैसे कि हमने तय किया था। सिर्फ एक अपवाद यह रहा कि हथियार और गोली-बारूद भारी मात्रा में थे, इसलिए उन्हें लोड करने के लिए हमें ज्यादा समय वहां रहना पड़ा।

✶ एमआईबी - रेइड का लक्ष्य क्या था?

✶ बीआर - यह सार्वभौमिक सच्चाई है कि शोषक-शासक वर्ग पूरी दुनिया में कहीं भी बिना निर्मम संघर्ष के अपनी जन विरोधी नीतियों व अपनी राजनीतिक सत्ता को अंत तक नहीं छोड़ देते। जब जनता जायज और बराबरी पर आधारित सामाजिक व्यवस्था के निर्माण के लक्ष्य से शोषण और उत्पीड़न के खिलाफ न्यायपूर्ण संघर्ष करती है तो वे क्रूरतम दमन करते हैं। जैसे कि माओ ने बहुत पहले कहा था 'अगर जन सेना नहीं है तो जनता के पास कुछ नहीं है'। सभी अन्य जन संगठन और जन संघर्ष कुछ मांगों को प्राप्त करने में जनता की सहायता करते हैं, लेकिन बिना हथियारबंद संघर्ष के जनता वर्गीय उत्पीड़न से अपनी सच्ची मुक्ति कभी प्राप्त नहीं कर सकती। अगर आप इस बात को समझेंगे तो नयागढ़ रेइड साहित कोरापुट, गिरडीह आदि हमलों का मकसद भी समझ सकते हो।

नयागढ़ में इस कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण का मकसद था जनता को हथियारबंद करना और ज्यादा शक्तिशाली, बेहतर साधन-सम्पत्ति से लैस और बेहतर प्रशिक्षण प्राप्त शत्रु बलों के खिलाफ जनयुद्ध को तेज कर उसे देश भर में फैलाना। जनता की सेना होने के नाते हमारी पीएलजीए को मुख्यत: दुश्मन के सशस्त्र बलों से छीने हुए हथियारों से ही लैस होना है।

✶ एमआईबी - नवीन पटनायक का कहना है कि आपकी पार्टी हताशा से ऐसी कार्रवाइयां कर रही है और आपके साथ जनता का कोई समर्थन नहीं है। क्या आप सोचते हैं कि ओडिशा की जनता नयागढ़ हमले की प्रशंसा करेगी?

✶ बीआर - (मुंह फैलाकर हंसते हुए) एक मूर्ख के सिवाए यह बात कोई नहीं कह सकता कि यह हताशा से की गई कार्रवाई थी। नवीन पटनायक हताशा शब्द का अर्थ भी नहीं समझता। सैकड़ों मासूम लोगों को गिरफ्तार करना, उन्हें प्रताड़ित कर यातनाएं देना, जो भी विरोध करता है उन पर झूठे आरोप मढ़ना, प्रदेश की खनिज व प्राकृतिक सम्पदाओं को साम्राज्यवादी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और दलाल पूंजीपति घरानों को बेच डालने की सरकार की नीतियों के खिलाफ आवाज उठाने वालों को गोली मार देना, क्रांतिकारियों के खिलाफ शांतिसेना जैसे निजी हत्यारे गिरोहों का गठन कर उन्हें प्रशिक्षण व हथियार देना, आरडीएफ जैसे संगठनों पर प्रतिबंध लगाना - इन सबको कहते हैं हताशापूर्ण कार्रवाइयां। इसके विपरीत, हम जन सेना को अत्याधुनिक हथियारों से लैस करने और देश भर में जनयुद्ध को फैलाने के लक्ष्य से ऐसी बड़ी कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण की कार्रवाइयों, जैसी कि नयागढ़ में की गई, की योजना सर्वोच्च स्तर पर बनाते हैं।

✶ एमआईबी - नवीन पटनायक सरकार ने प्रस्ताव रखा था कि अगर माओवादी हथियार छोड़ दें तो हम उनके साथ वार्ता के लिए तैयार हैं। इस पर आपकी पार्टी की क्या प्रतिक्रिया है?

✶ बीआर - वार्ता को लेकर उसके इस तथाकथित प्रस्ताव को हमारी पार्टी सिरे से खारिज कर चुकी है। आप इस बारे में हमारी केन्द्रीय कमेटी के प्रवक्ता कामरेड आजाद की प्रेस विज्ञप्ति पढ़ सकते हैं। पटनायक द्वारा रखे गए बातचीत के प्रस्ताव में कोई दम नहीं है। यह कुछ नहीं एक धोखा है। जनवादी व मानवाधिकार संगठनों के दबाव से वह ऐसा बयान देने पर मजबूर हुआ।

हम कभी ऐसी सरकार के साथ बातचीत की नहीं सोच सकते जो साम्राज्यवादी दैत्यों व दलाल पूंजीपति घरानों के लिए आम जनता के जीवन से खिलवाड़ करती हो। पटनायक एक देशद्रोही है जिसने प्रदेश की सम्पदाओं को पोस्को, टाटा, एस्सार, जिंदल, मित्तल आदि मुठ्ठी भर शोषकों के हाथों में बेच डाला। जनता के कत्लेआम करने से भी वह नहीं हिचकिचाता है जिसे हम कलिंगनगर हत्याकाण्ड में देख सकते हैं। और काशीपुर, पोस्को और अन्य जगहों में प्रदर्शनकारियों पर इसने कई बर्बर हमले करवाए। उसके हाथ बहुत सारे माओवादी क्रांतिकारियों व क्रांति के समर्थकों के खून से रंगे हुए हैं। उसने संघर्ष के इलाकों में भारी तादाद में सीआरपीएफ, एसओजी और ओएसएपी को तैनात किया। और केन्द्र से और ज्यादा बल भेजने की लगातार मांग कर रहा है। वह एपी ग्रेहाउंड्स जैसे बल बनाकर ओडिशा के ग्रामीण इलाकों में खून की होली खेलने की कोशिश कर रहा है। उसने आरडीएफ जैसे जनवादी संगठन को गैरकानूनी घोषित कर, जन आंदोलनों और जनवादी संगठनों पर भी अघोषित प्रतिबंध लगा रखा है। इस तरह उसने अपने आपको साम्राज्यवादियों व दलाल पूंजीपति घारानों के नमक हलाल सेवक साबित किया है। वह ओडिशा की जनता का दुश्मन है। जनता, खासकर आदिवासियों के इस दुश्मन को हमारी पार्टी सही सबक सिखाएगी।

✶ एमआईबी - पुलिस के लिए नयागढ़ सबसे कम अपेक्षित लक्ष्य था क्योंकि वहां आपका कोई संगठन नहीं है, न ही लोगों का समर्थन। सभी स्थानों में से आपने इसे ही क्यों चुना? क्या जनता आपकी कार्रवाई की प्रशंसा करेगी?

✶ बीआर - यह सच है कि नयागढ़ में हमारा कोई संगठन नहीं है। परंतु वहां की जनता में हमारा खासा प्रभाव है। नयागढ़ की जनता तथा कंधमाल, फूलबनी, गंजाम जैसे उसके आसपास के जिलों की जनता अपने जिलों में हमारी उपस्थिति को बेहद चाह रही है। दरअसल बहुत से लोगों ने हमसे आग्रह किया कि हम उनके गांवों का दौरा करें। नयागढ़ में आपरेशन के बाद लोग

(शेष पृष्ठ 3 में...)

आदिवासी जन और जंगल

प्रकृति की संतान आदिवासी जनता हजारों सालों से प्रकृति की गोद में खेल कर अपना जीवन व्यतीत करती आई है। वे जंगलों की रक्षा करते, जंगल से ही अपने जीवन की सभी जरूरतें पूरी करते उन्मुक्त रूप से रहते आये हैं। भोजन, घर, वस्त्र, दवाइयों, कृषि औजारों के लिए इन्हीं जंगलों पर निर्भर रहते हैं। यहां मौजूद बहुमूल्य खनिज संसाधनों एवं वन संसाधनों की जो मानव समाज की संपत्ति है, की रक्षा करते आए हैं। कभी आदिवासी जनता ने जंगलों का नुकसान किया हो, इतिहास में ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता। हां, जंगलों का नाश करने आये तत्वों से जान की बाजी लगाकर संघर्ष करने के अनेकों उदाहरण हमें इतिहास के पन्नों में मिलते हैं। अपढ़ और पिछड़े कहे जाने वाले आदिवासी जनों ने जंगल और विकास का जो वैज्ञानिक संबंध कायम किया है उसकी तथाकथित सभ्य समाज पर्यावरण असंतुलन की दुहाई दे रहा है। लेकिन उनकी यह दुहाई दुहाई देने तक ही सीमित हो रही है। विकास के आंकड़ों में वे उलझ कर रह गये हैं। अकूत धन संपदा जो जंगलों और पर्वतों में है, उसका दोहन करने के लिए पूंजीवाद और साम्राज्यवाद गिद्धदृष्टि लगाये बैठे हैं। आदिवासी जनता इसकी रक्षा करने के लिये पहले भी तत्पर थी व आज भी प्रकृति को इनके चंगुल से बचाने के लिये जान की बाजी लगाने के लिए तैयार है। तैयार क्यों न हो, आखिर जंगल के खात्मे का अर्थ है आदिवासी जीवन का ही खात्मा! उसके अस्तित्व का ही खात्मा।

वैसे तो सामंती युग से ही आर्यों द्वारा एरिया कब्जा के लिये अनार्यों (आदिवासी) को मारना, भगाना चालू हो गया था। रामायण और महाभारत की कहानियां इसका उदाहरण है। लेकिन पूंजीवाद और साम्राज्यवाद की लूट ने आदिवासी जन के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। साम्राज्यवाद ने अपनी लूट का जाल पूरी दुनिया में फैलाया है, जिसकी मार सबसे ज्यादा आदिवासी जनता पर ही पड़ी। दुनिया से कुछ आदिवासी जातियों का अस्तित्व ही मिट गया है। कुछ जगहों पर मिटने के कगार पर है। कुछ इलाकों में मिटने की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। कुछ जगहों पर आदिवासी जनता जान हथेली पर रख कर साम्राज्यवादी मंसूबों को नाकाम करने के लिए युद्धरत है। केवल वही आदिवासी जनता के अस्तित्व की गारंटी दे सकती है।

अपने को दुनिया के सबसे बड़ा लोकतंत्र बताकर ढिंढ़ोरा पीटने वाले अमरिका में वहां की आदिवासी जनता 'रेड इंडियन्स' लगभग विलुप्त हो चुकी है। सोने व चांदी की खदानों पर ग्रेट ब्रिटेन से आये पूंजीपतियों ने बेरहमी से रेड इंडियन्स की हत्या की थी। कभी पूरे अमेरिका में बसने वाले रेड इंडियन्स को मार डाला गया। अमेरिका की पूरी संपत्ति व जमीनों पर अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया और अपने को ब्रिटेन से अलग कर नये अमेरिका का निर्माण किया था, जिसमें वहां के मूल निवासियों का अब अस्तित्व ही नहीं बचा है। अंग्रेजों के इस जघन्य कार्य में निश्चित ही कुछ रेड इंडियन्स दलालों ने अंग्रजों का साथ निभाया होगा। लेकिन अब उनका भी अस्तित्व नहीं है। यही अमेरिका आज विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र का पहरेदार बन बैठा है। मैक्सिको देश की कमोबेश यही कहानी है। लेकिन वहां की मूल जाति शोषकों के खिलाफ लड़ रही है। इसलिये अभी उसका अस्तित्व बचा हुआ है। न्यूजीलैंड में कभी वहां मूल जाति रहती थी, जो अब एक इतिहास बन चुकी है। आस्ट्रेलिया में सोने की खदानों के लालच में पहले अंग्रेजों ने वहां की मूल जनता की बर्बरतापूर्वक हत्या की। बच्चों को उनके माताओं-पिताओं से अलग रखा। पूरे आस्ट्रेलिया देश के मालिक रहे वहां के मूल निवासियों की संख्या नगण्य हो गई। वहां की मूल जातियों के लिए ऐसी नीतियां बनाई गईं कि उनका अस्तित्व खत्म होता गया। नाम के लिए उन्हें आस्ट्रेलिया के प्रजातांत्रिक व्यवस्था में शामिल किया गया है। लेकिन वहां की संसद में वहां की मूल जनता का एक भी प्रतिनिधि नहीं है। अभी हाल ही में आस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री ने पूर्व के अत्याचारों के लिए माफी मांगी है। यह घड़ियाली आंसू बहाने के सिवाये कुछ नहीं है। यह माफी इसलिए क्योंकि वहां की मूल निवासियों के लिए अपनाई गई नीति जो उन्हें जड़ से खत्म कर देगी, के खिलाफ वे कोई विद्रोही कदम न उठा लें।

पेट्रोलियम के लिए अमेरिका के नेतृत्व में इराकी जनता और अफगानिस्तान की जनता का संहार जारी है। लेकिन अमेरिकी मंसूबों को भांपते हुये वहां की जनता जीवन मरण की लड़ाई पर उतारू हो गई है, जो किसी भी हालात में साम्राज्यवादियों के हाथों अपने वजूद को खत्म नहीं होने देगी। लगभग यही हाल लैटिन अमेरिकी तथा अफ्रीकी देशों का है, जिन्हें साम्राज्यवादियों ने भूखमरी और बीमारियों के दरवाजे पर ला खड़ा कर दिया है। यह सब साम्राज्यवादियों की पूरी दुनिया को लूटने की नीति के कारण हुआ है। वहां की बेहाल जिंदगी के लिए साम्राज्यवादी लुटेरों के अलावा और कोई जिम्मेदार नहीं है। लेकिन सब कुछ लूटने के लिए उनका अस्तित्व खत्म करने के अपने मंसूबों में साम्राज्यवाद सफल तो नहीं हुआ है, लेकिन उनकी संख्या बहुत कम कर दी है। उनके जीवन को तहस-नहस कर दिया है। उनकी जिंदगियों को बर्बाद कर दिया है।

जहां तक अपने देश भारत की बात है, यहां की आदिवासी जनता की हालात भी दुनिया के अन्य देशों की आदिवासी जनता के समान ही है। दलाल पूंजीपतियों और साम्राज्यवाद ने वन संपदा, खनिज संपदा और प्राकृतिक संपदा के दोहन के लिए आदिवासी जनता को बेदखल करना शुरू कर दिया है। बांध बनाने, नगर बसाने, खदान खोलने, सड़क बनाने, रेल लाईन बिछाने, कारखाने बनाने आदि सभी विकास के नाम पर किये जाने वाले कामों की मार अधिकांशत: गरीब आदिवासी जनता पर ही पड़ती है। जितने भी वन कानून बने हैं सभी का एक मात्र लक्ष्य है - वनों से

आदिवासी जनता को बेदखल करना। पर्यटन केंद्र के विकास ने तो आम आदिवासी जनता की बेदखली को और भी तेज कर दिया है। 1947 के बाद देश की जनसंख्या वृद्धि का अनुपात देखें तो आदिवासी जनता की संख्या कम से कमतर होती गई है। आदिवासी जनता की कम होती जनसंख्या बुर्जुआ आदिवासी नेताओं को मालूम नहीं, ऐसी बात नहीं है। इन्हें भी मालूम है, अच्छी तरह से मालूम है। लेकिन इनकी विधानसभा तथा संसद की सीट सुरक्षित है, ऐसा इनका अनुमान था। इसलिये ये चुप रहे या चुप थे। कम जन संख्या के कारण जब परसीमन आयोग ने इनकी विधानसभा और संसद की सीटों को कम कर दिया तब इनकी आंखें खुलीं। फिर इन्होंने उल्टे सीधे बयान देना शुरू कर दिया। बस्तर के एक सांसद ने इस पर एक बेतुका बयान देकर आदिवासी जनसंख्या में कमी होने का, शोषक वर्ग के प्रचार को ही मजबूत किया कि आदिवासियों में प्रजनन क्षमता कम होती है। जबकि हकीकत यह है कि आदिवासी जनता की जीवन परिस्थिति से उन्हें अलग करने तथा उनके विकास पर समुचित ध्यान न देने के कारण उनकी यह परिस्थिति हुई है। उनकी जनसंख्या कम होती जा रही है। स्वास्थ्य की सुविधा न होने के कारण बच्चे पैदा होने के बाद बेमौत मारे जाते हैं। स्वास्थ्य की सुविधा न होने के कारण आदिवासी जनता में मृत्यु दर ज्यादा होना उनकी जनसंख्या की कमी में एक बड़ा कारण है, जिसके लिए सीधे तौर पर शासक वर्ग ही जिम्मेदार हैं।

इतिहास में भी हम देखते हैं, जब भी आदिवासी जनता ने जंगल पर अपने अधिकार के लिए संघर्ष का रास्ता अपनाया तब-तब शासक-शोषक वर्ग ने उन पर तीव्र और क्रूरता से उनका संहार किया है। उत्तर पूर्वी भारत, झारखंड, सुंदरवन, श्रीकाकुलम, मध्य भारत के जंगलों में रहने वाले आदिवासियों और दण्डकारण्य में हम इसकी मिसाल देख सकते हैं। यह क्रूरता तब और बढ़ जाती है जब वैज्ञानिक व सुसंगठित नेतृत्व नहीं मिलता। प्रसिद्ध इतिहासकार रामचंद्र गुहा ने अपनी किताब में इसका उल्लेख किया है और उन्होंने कोई गलत उल्लेख भी नहीं किया है। संथाल विद्रोह, मुंडा विद्रोह, उरांव विद्रोह, उत्तर पूर्वी भारत की आदिवासी जनता का विद्रोह, परालकोट, भूमकाल विद्रोह आदि के साथ शासक वर्ग का क्रूरतम दमन इसकी जीती-जागती मिसाल है। तथाकथित स्वतंत्र भारत में आदिवासी जनता के बारे में शासक शोषक वर्ग के रवैये में कोई फर्क नहीं आया है। बल्कि आदिवासी जिंदगी को और भी ज्यादा कठिन और अनिश्चय भरा बना दिया गया है।

बस्तर में जो सलवा जुडूम फासीवादी दमानात्मक सैनिक-सांगठनिक अभियान चलाया जा रहा है, यह बस्तर के खनिज, वनोपजों और प्राकृतिक संसाधनों की दलाल पूंजीपतियों और साम्राज्यवादियों की लूट के लिए रास्ते में फूल बिछाने के अलावा और कुछ नहीं है। सैकड़ों गांवों को आग लगाना, उजाड़ना, हजारों आदिवासी जनता को जबरन उनके गांवों से निकाल कर अस्थाई कैंपों में रखा गया है। सड़कों के किनारे उनके रहने के लिए घर बनाये जा रहे हैं। उन्हें उनकी खेती, गांव, जंगल से बेदखल कर बदहाल जिंदगी जीने के लिए मजबूर किया जा रहा है ताकि दलाल पूंजीपति और साम्राज्यवाद अपनी बेरोकटोक लूट जारी रख सके। उनकी लूट में बाधक बनी दण्डकारण्य की आदिवासी जनता का अपना संगठन दण्डकारण्य आदिवासी किसान मजदूर संगठन, क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन, बाल संगठन और इन्हें संचालित करने वाली भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी), जिसे खत्म करने के लिए दलाल पूंजीपतियों और साम्राज्यवादियों के इशारे पर सभी शासक वर्ग की पार्टियां एक स्वर से और दमन और नाश का राग अलाप रहे हैं। और अधिक सशस्त्र बलों को जनता, संगठन और पार्टी पर हमला करने के लिए उतार रहे हैं।

पूरी दुनिया के साथ-साथ भारत की आदिवासी जनता की हालत एक चिंताजनक तस्वीर पेश करती है। एक यक्ष प्रश्न हमारे सामने खड़ा हो जाता है कि क्या साम्राज्यवाद और दलाल पूंजीपति इस दुनिया से आदिवासी जनता के अस्तित्व को हमेशा के लिए मिटा देंगे। क्या आदिवासी जनता भविष्य में अजायबघर की वस्तु या इतिहास की बात बन कर रह जायेंगे? या कोई रास्ता है जिससे आदिवासी जनता का अस्तित्व सुरक्षित रह पायेगा? उत्तर इसका केवल एक ही है - बिना साम्राज्यवाद और दलाल पूंजीपतियों के अस्तित्व के खात्मे के आदिवासी जनता का अस्तित्व नहीं बच पायेगा। उसके खात्मे के साथ ही मानवजाति के विकास के साथ-साथ आदिवासी जनता का भी विकास होगा।

अनेक बलिदानों के जरिये दण्डकारण्य और झारखंड की आदिवासी जनता अपने देश की और पूरी दुनिया की आदिवासी जनता को अपने अस्तित्व को बचा पाने की रोशनी दिखा रही है। अपने आपको बेहद सुंसगत, वैज्ञानिक और पूरी दुनिया की उत्पीड़ित जनता की मुक्ति के लिए मौजूद मार्क्सवादी-लेनिनवादी-माओवादी सिद्धांत से लैस कर सामंतवाद, साम्राज्यवाद और दलाल पूंजीवाद के खात्मे के लिये और शोषणविहीन समतावादी समाज के निर्माण के लिए संघर्ष कर रही है। इससे पूरे आदिवासी समुदायों का न केवल अस्तित्व रहेगा बल्कि वह फलेगा, फूलेगा व विकसित होगा। वह पूरी मानवजाति के विकास के साथ-साथ विकसित होकर अपने विकास के नये आयामों को चूमेगा।

अब यह समूची आदिवासी जनता, खासकर आदिवासी नव युवक और नव युवतियों पर निर्भर करता है कि वे अपने और अपनी आदिवासी जनता के अस्तित्व को बचाये रखने के लिए माओवादी पार्टी में शामिल होकर दण्डकारण्य की जनता के संघर्ष का हिस्सा बनते हैं या फिर दलाल पूंजीपतियों और साम्राज्यवादियों की लूटकारी साजिशों को मूक दर्शक बनकर बर्दाश्त कर लेते हैं। दण्डकाण्य, बिहार-झारखण्ड और देश के विभिन्न इलाकों के आदिवासी आवाम के बहादुराना इतिहास से यह स्पष्ट हो जाता है कि वे पहले विकल्प को ही चुनेंगे। इसे हम आज देख भी रहे हैं। आशा करते हैं कि उनका यह संघर्ष एक दिन जरूर रंग लाएगा। ★

खाद्यान्न संकट व कृषि संकट - एक विकल्प यह भी!

पिछले कुछ महीनों से बढ़ते खाद्यान्न संकट की खबरें चहुं ओर सुर्खियों में हैं। विश्वस्तर पर खाद्य पदार्थों की बढ़ती कीमतों ने जहां आम आदमी का जीना मुश्किल कर दिया है, वहीं साम्राज्यवादी देशों के शासकों समेत उनके दलाल शासकों की चिंता को भी बढ़ा दिया है। उनकी चिंता है कि कहीं यह खाद्यान्न संकट एक संगठित विद्रोह का रूप न ले ले। भूख से दम तोड़ती जनता हथियार न उठा ले। कई इसे बढ़ती जनसंख्या के कारण पैदा हुआ संकट कह रहे हैं तो अमेरिका इसे भारत-चीन के लोगों की बदलती खाने की प्रवृत्ति को जिम्मेदार ठहरा रहा है। भारत ने इसका विरोध भी किया। लेकिन भारत में यह चर्चा एक बार फिर जोर पकड़ गई है कि दूसरी हरित क्रांति, 'स्थाई हरित क्रांति' ही इस खाद्यान्न संकट का हल हो सकती है। पहली हरित क्रांति जहां 1 लाख 60 हजार किसानों की फांसी का फंदा बन चुकी है तो दूसरी हरित क्रांति की कल्पना मात्र भी दिल दहला देती है। क्या भारत के दलाल शासक वर्गों की भूख इन आत्महत्याओं से नहीं भरी है? क्यों वो और फांसी के फंदे तैयार कर रहे हैं? क्या भारतीय शासकों व साम्राज्यवादियों के पास खाद्यान्न और कृषि संकट का हल है? हरित क्रांति के क्या दुष्परिणाम सामने आये? दूसरी हरित क्रांति क्या है? आखिर कैसे हल हो सकती है यह समस्या? आइए जानने का प्रयास करें।

खाद्यान्न संकट : खाद्यान्न की कमी नहीं!

पाकिस्तान, सूडान, दक्षिण अफ्रीकी देशों, भारत के पश्चिम बंगाल राज्य समेत कई देशों में अनाज को लेकर दंगे हुये। भूखे मरते लोग सरकारी व निजी गोदामों, दुकानों, होटलों व विदेशी पर्यटकों पर टूट पड़े। लोगों को अनाज नहीं मिल रहा, या वह उतना मंहगा हो गया कि आम जनता की खरीद शक्ति से बहुत ऊंचा है। जिसके पेट में 10 दिन से एक दाना तक नहीं गया वो क्या करे? क्या यह खाद्यान्न संकट अनाज के उत्पाद की कमी के कारण पैदा हुआ है? जनता को भूखे मरने की नौबत खाद्य वस्तुओं की कमी से नहीं आ रही, बल्कि वो उन तक नहीं पहुंच पाने से आ रही है। एक समय था जब सूखा-अकाल पड़ने से अनाज की कमी होती थी और भूखी मरती जनता सूखे पत्ते व झाड़ों को पीस कर खाने को मजबूर होती थी। लेकिन आज 21वीं सदी के हाईटेक जमाने की यह कड़वी सच्चाई है, लोग अनाज के गोदाम भरे होने के बाद भी आम की गुठलियां खाने व नमक-मिट्टी चाटने पर मजबूर हैं और दम तोड़ रहे हैं।

क्या भारत में खाद्य वस्तुओं की कमी है? नहीं, हमारे देश में शक्कर का उत्पादन 2005-06 में 19.6 मेट्रिक टन था, 2006-07 मे यह 22.7 मेट्रिक टन था। वहीं इसकी खपत इसके उत्पादन से कम यानी क्रमशः 19 मेट्रिक टन व 20.5 मेट्रिक टन रही। यही कपास की स्थिति रही। गेहूं व चावल के मामले में भारत में जरा सी भी कमी नहीं है। 2006-07 में गेहूं का उत्पादन 750 लाख टन था, वहीं पिछले वर्ष लगभग 690 लाख टन था। लेकिन यह हमारे देश का चीखता प्रश्न है कि हर रोज 32 करोड़ लोग भूखे क्यों सोते हैं? क्यों भारत को 2006-07 में 55 लाख टन गेहूं का आयात करना पड़ा? अब के साल फिर 30 से 50 लाख टन गेहूं का आयात करने की योजना सरकार बना रही है। कृषि प्रधान देश की यह कैसी विंडम्बना है? सरकार अपने किसानों से 8.50 पैसे प्रति किलो समर्थन मूल्य पर खरीद करती है, वहीं विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों से ऊंचे दामों पर घटिया किस्म का गेहूं खरीदती है।

दरअसल गेहूं के ऊपर प्रभुत्व के लिए कारगिल (आस्ट्रेलिया), मोनसेंटो (अमेरिका), सिंजेंटा जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनियां अतरराष्ट्रीय माफिया की भूमिका निभा रही हैं। इनका मकसद है गरीब देशों की कृषि व्यवस्था पर अपना नियंत्रण बनाना, खाद्य वस्तुओं से अपने गोदाम भरना व उनके दामों को अपने नियंत्रण में करना। गरीब देशों के किसानों से सीधा अनाज खरीद कर वे अपने भंडार भर लेती हैं। सरकार उनको कानूनी अधिकार प्रदान करती है व किसानों से अनाज खरीदना कम कर देती है। सरकार का भंडार खाली रहता है, सरकार यह बहाना बनाकर उन्हें सरगनाओं से जोड़कर दलाल, नेता, पूंजीपति चांदी काट रहे हैं। जब सरकार 8.50 पैसे प्रति किलो गेहूं खरीद रही थी तब पिछले 3-4 सालों से हरियाणा, पंजाब की कृषि मण्डियों से कारगिल व मोनसेंटो ने सरकारी एजेंसी भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) से ज्यादा और सरकार से ज्यादा रेट में अनाज खरीदा।

एफसीआई के अुनसार सार्वजनिक वितरण प्रणाली के लिए

फिर भी भूख से मौतें?

- वर्ष 2007-08 में देश का गेहूं उत्पादन 74 अरब किलो था। अगर देश के हर व्यक्ति को 500 ग्राम गेहूं हर रोज दिया जाये तो 80 करोड़ किलो अनाज एक दिन में लगता है। एक साल में ऐसे देने से केवल 18 अरब 25 करोड़ किलो गेहूं ही लगता है। इतना लगने के बाद कुल गेहूं उत्पादन का बचा हुआ 55 अरब 75 करोड़ किलो गेहूं किसके पेट में गया? फिर भी भूख से मौतें क्यों हुई? फिर भी गेहूं के दाम क्यों बढ़े? फिर भी क्यों गेहूं विदेशों से आयत किया गया?
- यही चावल पर भी लागू करें तो देश में चावल का उत्पादन 69 मिलियन टन था यानी 500 ग्राम प्रति व्यक्ति देने के बाद भी एक तिहाई हिस्सा चावल बचता है। पर सवाल तो यही है कि यह जाता किसके पेट में हैं।
- इस साल एफसीआई ने सरकारी खरीद खूब की है यानी 25 अरब किलो लेकिन यह तय है कीमतों में बढ़ोतरी नहीं रुकेगी। मौतें, आयात अब भी नहीं रुकेगा।
- ध्यान रहे कि भारत में इस वर्ष 22 करोड़ 70 लाख टन खाद्यान्न का उत्पादन हुआ है फिर भी देश में 20 प्रतिशत लोग कुपोषण का शिकार हैं।

वर्ष 2001-02 के कुल उत्पादन के 30 फीसदी खरीद से 2006-07 में केवल 15 फीसदी खरीद की गई। कमीशन फॅर एग्रीकल्चर कॉस्टस एंड प्राइसेस के मुताबिक केन्द्रीय भंडार में अक्टूबर 2008 तक चावल का केवल 5.49 मिलियन टन ही स्टाक होगा। वहीं गेहूं का 10.2 मिलियन टन। इसी समय निजी व बहुराष्ट्रीय कंपनियों के गोदाम भरे होते हैं।

इसका फायदा वो उठाते हैं, जो अपने गोदामों में रोक कर रखते हैं व कृत्रिम मांग पैदा की जाती है। वस्तुओं की कमी की अफवाह फैलाकर उनके दाम बढ़ाये जाते हैं। सरकार संकट से निपटने के ड्रामे के तौर पर विदेशों से आयात करती है व पीछे से मोटी दलाली खाती है। 750 लाख टन गेहूं उत्पादन से सरकार ने 150 लाख टन ही खरीदा। आखिरकार 600 लाख टन गेहूं कहां चला गया?

खाद्य तेल व दालों के मामले में सरकार पूरी तरह दोहरी नीति अमल कर रही है। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के तहत सरकार ने 4,883 करोड़ रू. खर्च कर गेहूं, चावल, दलहन, तिलहन के उत्पादन को बढ़ावा देने की बात की है। दूसरी तरफ खाद्य तेलों से लगातार आयात शुल्क में कटौती कर बहुराष्ट्रीय कंपनियों को बुलावा दे रही है। बर्मा जैसे छोटे से पड़ोसी मुल्क में भारतीय निजी कंपनियों को तिलहन का उत्पादन करने के लिए प्रोत्साहित कर वहां से आयात करने की नीति बना रही है।

1994 तक खाद्य तेलों के मामले में भारत एक आत्मनिर्भर देश था। लेकिन सरकार की आयात शुल्क में लगातार कटौती से भारतीय किसान तिलहन की खेती से दूर होता गया। बाहर से आने वाला तेल यहां से सस्ता होने के कारण यहां के किसानों को बहुत नुकसान हुआ। आज स्थिति इतनी बदतर हो चली कि अब मंहगाई से निपटने के लिए शरद पवार (कृषि मंत्री) ने 12,000 टन खाद्य तेल व 9,000 टन दालें आयात करने की घोषणा की। वहीं राज्य सरकारों को प्रति माह 70,000 से 80,000 टन खाद्य तेल आयात करना पड़ता है। सस्ते आयात के चलते लाखों लोगों की अजीविका छिन रही है। 1997-98 में आयात 1.02 मिलियन टन था अब यह 2.98 मिलियन टन से भी ऊपर हो चला है। 1999-2000 में भारत ने 5 मिलियन टन खाद्य तेल का आयात किया व इस प्रकार एक बड़े आयातक देश के रूप में उभर कर सामने आया। 2005 में आयात का बिल 3.2 अरब डालर की ऊंचाई पर पहुंच गया। ज्ञात रहे कि 1995 में भारत ने विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) की सदस्यता ली थी। उसके बाद लगातार साम्राज्यवाद परस्त आयात नीतियों, सीमा शुल्कों में कटौती, 2003 में 1429 वस्तुओं पर से भाजपा के नेतृत्व वाली राजग सरकार द्वारा मात्रात्मक प्रतिबंधों को हटाने से यह स्थिति पैदा हुई है। इसका सीधा असर केरल के 35 लाख छोटे व मझोले किसानों पर पड़ा जो नारियल की खेती करते हैं।

खाद्य तेलों की कीमतों में 19.03 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। दिल्ली के खुदरा बाजारों में मूंगफली तेल 98 से 121 रू, सरसों 55 से 79 रू., वनस्पति तेल 56 से 79 रू. प्रति किलो तक पहुंच गया है। राजस्थान, हरियाणा और पंजाब में तिलहन व दलहन का रकबा लगातार घटा है। भारत का डेयरी उत्पादन भी लगातार बढ़ रहा है। लेकिन आम जनता तक वह नहीं पहुंच पा रहा। भारत के कृषि मंत्रालय, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन उत्पादन को बढ़ाने पर लगातार जोर लगा रहे हैं। लेकिन उसको सर्व सुलभ कैसे बनाया जाये, 32 करोड़ लोगों को जो हर रोज भूखे सोते हैं, जो कालाहंडी, बुंदेलखंड में आम की गुठलियां व चुहे खा रहे हैं, उन तक कैसे अनाज पहुंचाये, इस पर सरकार का जरा सा भी ध्यान नहीं है।

आदमी को नहीं चूहों को ...

सरकारी गोदामों से चूहे 4 लाख टन चावल व 11 लाख 25 हजार टन गेहूं प्रतिवर्ष खा जाते हैं, जिससे 70 लाख लोगों को साल भर खाना दिया जा सकता है। छत्तीसगढ़ में 24 हजार टन चावल चूहों के पेट में समा जाता है। एक आंकड़े के अनुसार भारत में चूहों के कारण 1 लाख 45 हजार करोड़ रू. की फसल हर साल बर्बाद हो जाती है। साफ जाहिर है यह सरकार की घोर लापरवाही का ही नतीजा है।

साम्राज्यवादी देश व शासक वर्ग बढ़ती जनसंख्या के सिर मंहगाई व खाद्यान्न संकट का ठीकरा फोड़ रहे हैं। लेकिन वो इस सच्चाई को छुपा रहे हैं कि उनकी विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपने मुनाफे के लिए ऐसा कृत्रिम संकट पैदा कर रही हैं। अमेरिका आज गेहूं, मकई, गन्ना से बायोडीजल बना रहा है, जिससे लाखों टन अनाज व कृषि उत्पादों को डीजल में बदल रहा है। खाद्य संकट के लिए साम्राज्यवादियों के युद्ध व जन आंदोलनों पर दमन कम जिम्मेवार नहीं है। अमेरिका, जापान, ब्रिटेन, जर्मनी आदि के टैंको-तोपों, जहाजों ने न जाने कितनी हजारों-लाखों एकड़ जमीन को बारूद से पाट दिया है, जहां अनाज तो क्या हिरोशिमा-नागासाकी में घास का तिनका भी पैदा नहीं होता। जन आंदोलनों के दमन से भी जनता कृषि उत्पादन से वंचित होती है, कृषि भूमि पर एसईजेड की स्थापना नंदीग्राम, सींगूर, कलिंगनगर, दण्डकारण्य में सलवा जुडूम के कारण हजारों हेक्टयर जमीन बंजर हो रही है। युद्ध से जूझ रहे इराक, अफगानिस्तान में भी ऐसे ही लाखों एकड़ जमीन पर खेती बंद हुई है। यह खाद्यान्न संकट पूरी तरह से कृत्रिम है, इसके पीछे विदेशी कंपनियों, साम्राज्यवादियों व उनके दलाल शासक वर्गों का षड़यंत्र है।

विश्व स्तर पर उपस्थिति दर्ज करवा रहे इस कृत्रिम खाद्य संकट पर जार्ज बुश से लेकर मनमोहन तक चिंतन कर रहे हैं। स्थाई समाधान के लिए कृषि नीतियों की चर्चा कर रहे हैं। डब्ल्यूटीओ का अध्यक्ष भी अपनी चिंता जाहिर कर चुका है। इन सबकी एक ही चिंता है - मुनाफा कैसे बढ़े? डब्ल्यूटीओ व अमेरिका की चिंता है - गरीब देशों की कृषि व्यवस्था पर अपना नियंत्रण और कैसे कड़ा किया जाये। कृषि को भूमंडलीय बाजार अर्थव्यवस्था से जोड़कर उसका कैसे दोहन किया जाये। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआइ) कैसे घुसाया जाये। यह सब इस खाद्यान्न संकट के हल के नाम पर करना चाहते हैं।

1991 के बाद व खासकर डब्लूटीओ पर 1995 में हस्ताक्षर करने के बाद लगातार खेती को साम्राज्यवादी भूमंडलीकरण के बाजार के हाथों में भारत के शासक वर्ग सौंपते जा रहे हैं। खाद्यान

संकट के नाम पर लाई जा रही कॉन्ट्रेक्ट फार्मिंग, कार्पोरेट फार्मिंग, बीज विधेयक 2005-06 सब साम्राज्यवादी भूमंडलीकरण के सामने आत्मसमर्पण के अलावा कुछ नहीं है। इन सबके जरिये साम्राज्यवादी बहुराष्ट्रीय कंपनियां, पारदेशीय निगम अपनी बाजार व पूंजी शक्ति के दम पर हमारे उत्पादन को अपने नियंत्रण में ले लेंगी। वो तय करेंगी कि यहां क्या बोया जाये? क्या काटा जाये? कैसे किया जाये? कितना रेट हो?

कहां-कहां है उनकी गिद्धदृष्ट?

भूमि - उत्पादन में जमीन एक मुख्य तत्व है। हमारे देश की 65 प्रतिशत आबादी भोजन के लिए व उद्योग कच्चे माल के लिए इसी पर निर्भर हैं। विदेशी कंपनियों की नजर इस क्षेत्र पर टिकी हुई है। विशेष आर्थिक जोनों (एसईजेड) के रूप में उन्होंने लाखों हेक्टेयर जमीन को हड़प लिया है। वो जमीन को अपने नियंत्रण में लेकर अपनी जरूरतों के मुताबिक उत्पादन लेना चाहते हैं। वो इनमें बायो-टेक पार्क, बिजेनस स्कूल, मनोरंजन व पर्यटन के लिए पार्क, क्लब, मल्टीप्लेक्स, शॉपिंगमाल, बड़े-बड़े बागान बनायेंगी। वो हमारी जमीन को और पर्यावरण को भारी हानि पहुंचाने वाली औद्योगिक इकाइयों के लिए प्रयोग करेंगी, जो उनके देश मे प्रतिबंधित हैं।

कार्पोरेट व कान्ट्रेक्ट फार्मिंग को सरकार ने मंजूरी भी दे दी है। इसको देश के पंजाब व आंध्रप्रदेश राज्यों में शुरू कर चुकी है।

कार्पोरेट फार्मींग - सरकार कहती है कि किसान छोटी खेती को संभाल नहीं पा रहा है। वो इसमें निवेश नहीं कर पा रहे हैं। उससे उन्हें नुकसान हो रहा है। इसलिए उन्हें बड़ी कंपनियों के साथ मिलकर बड़े पैमाने पर खेती करनी चाहिये। उनके सामने यही विकल्प है। सरकार किसानों को उनकी ही जमीन पर मजदूर बना रही है। इसमें क्या बोया जाये, अनाज या दाल, फूल या कुछ और यह तय करने का हक किसान का नहीं रहेगा। उसको बेचना भी उसका अधिकार नहीं है, बस उस पर उसे काम करना है। एक कंपनी सैकड़ों छोटे किसान परिवारों की जमीन को ठेके पर लेकर सबको अपने मजदूरों के रूप में काम पर रखेगी।

कांट्रेक्ट फर्मिंग - यह व्यवस्था खेती की, उत्पादन की प्रक्रिया को नियंत्रित करेगी। एक कंपनी उस किसान को बीज, कीटनाशक, उपकरण आदि मुहैया करवाएगी। उसमें क्या पैदा किया जाये, यह कंपनी तय करेगी। यहां तक कि किस कंपनी का बीज, दवाई, खाद प्रयोग किया जाये वही तय करेगी। किसान व कन्ट्रेक्टर के बीच समझौता होगा कि वह उसी कंपनी को उत्पादन बेचे। गुणवत्ता के अलग अलग मानकों के अनुसार कंपनी उत्पादन का मूल्य तय करेगी। कंपनी उत्पादन की गुणवत्ता पर सवाल उठाकर उत्पादन को खरीदने से इंकार कर सकती है या उसको कम कीमत पर खरीद के लिए बोल सकती है, जिसका पूरा नुकसान किसान को ही होगा।

बीज क्षेत्र

भारत का बीज बाजार बहुत बड़ा है। जनसंख्या का 65 प्रतिशत किसान होने के कारण साम्राज्यवादियों की नजर इस क्षेत्र पर लंबे समय से है। लेकिन इस पर कब्जा वो पूरी तरह नहीं कर पा रहे। देश के ज्यादातर किसान पारम्परिक रूप से अपने खेत की पुरानी फसल से ही अच्छे बीज बचाकर उगाता रहा है। लेकिन हरित क्रांति से दुष्प्रभावित इलाकों में षड़यंत्रकारी तरीके से ये स्थिति बदल डाली गई है। किसानों को हाइब्रिड बीजों का आदी बनाया गया। बीज कंपनियों ने बीजों के जीन ढांचे में बदलाव करके ऐसे टर्मीनेटर (बांझ) बीज तैयार किये जो उत्पादन तो ज्यादा देंगे, लेकिन उसको अगले साल बीज के रूप में नहीं बोया जा सकता। उससे आगे बढ़ते हुये ऐसे वर्मीनेटर बीज भी तैयार किये हैं जिसमें बीमारियां पहले से ही लगा दी जाती हैं। अब बीज कंपनी ही तय करेगी कि इसमें किन कंपनियों का कीटनाशक प्रयोग किया जाये। भारत सरकार ने उनके सामने आत्मसमर्पण करते हुये बीज विधेयक 2005-06 पेश किया, जिसमें सुनिश्चित किया गया है कि किसान कंपनियों से ही बीज खरीद कर बोयें। गुणवत्ता तय करने के नाम पर किसान द्वारा अपने घर का बीज बोने पर प्रतिबंध लगाया गया है। यह सब बहुराष्ट्रीय कंपनियों के मुनाफे के लिए किया गया है। हरित क्रांति से पहले हमारे देश में 55,000 किस्मों के धान के बीज पाये जाते थे। पेटेंट व्यवस्था के बाद इनकी संख्या सैकड़ों में ही बची है। बीज बाजार पर कब्जा कर वह हमारी खाद्यान सुरक्षा के लिए खतरा बन गया है। सरकार ने कंपनियों को बीज के ढांचे में बदलाव के लिए छूट देते हुये दो कानून और पास किये। पहला - 'पेटेंट-दूसरा संशोध न कानून'। और दूसरा, 'पौधे उगाने वालों और किसानों के अधि कार कानून-ए'। ये उनके हाथ में एक खतरनाक हथियार हैं।

उर्वरक व कीटनाशक

इन क्षेत्रों पर पूरा प्रभुत्व विदेशी कंपनियों का है। भारतीय किसान पारम्परिक रूप से गोबर का खाद प्रयोग करता रहा है। लेकिन आज खेती में रसायनिक खादों व कीटनाशकों पर निर्भर बना दी गई है। हरित क्रांति की इसमें मुख्य भूमिका रही है। साम्राज्यवादियों के दबाव में भारतीय कृषि विकास कार्यक्रम (आइएडीपी) बनाया। बहुराष्ट्रीय कंपिनयां न केवल रसायनिक खादों का निर्माण कर रही हैं बल्कि भारत के 20 प्रतिशत हिस्से पर उनका कब्जा भी है। कीटनाशक के मामले में तो भारत पूरी तरह बहुराष्ट्रीय कंपिनयों पर ही निर्भर है।

भारत में कीटनाशकों की आपूर्ति 90 प्रतिशत बहुराष्ट्रीय

भूख के कारण दंगे
40 देश बुरी तरह प्रभावित

- मिश्र में अप्रैल 2008 में राष्ट्रपति होसनी मुबारक को सेना को ब्रेड बनाकर बांटने के निर्देष देने पड़े। सरकार के खिलाफ व्यापक विरोध प्रदर्शन हुये थे।
- हैती में सरकार ही बदल गई। मंहगाई के खिलाफ प्रदर्शन और पुलिस फायरिंग में लोग मारे गये।
- केन्या, सीनेगल, बर्किनाफासो, कैमरून, आइवरी कोस्ट, इथियोपिया, फिलीपींस में खाद्यान्न मंहगा होने के कारण जनता गोदामों पर टूट पड़ी।

कंपनियों से होती है। वो यहां पर ऐसे कीटनाशकों को बेचती हैं जो पर्यावरण, खेती, मानव सबके लिए हानिकारक हैं और कुछ तो विकसित देशों में प्रतिबंधित भी हैं, जैसे (डीडीटी)। हमारे देश के बाजार पर पूरी तरह बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का कब्जा है।

भारत के दलाल शासक वर्गों की नई आर्थिक नीतियां व कृषि नीतियां किसानों को भयंकर तबाही की ओर धकेल रही है। उन्हें भूमंडलीकरण के भंवर में फंसा रही हैं। इनकी कोई मंशा नहीं है कि खेती का विकास किसानों के हित में किया जाये। वित्त मंत्री पी. चिंदम्बरम 60,000 करोड़ का कर्जा माफ कर किसानों का हितैषी होने का दावा ठोंक रहा है। लेकिन पिछले 4 सालों में उनकी सरकार ने देश के पूंजीपतियों का 10 लाख करोड़ रुपाए का टैक्स बचाया है। इसको छुपा रहा है। इससे पता चलता है कि सरकार किस वर्ग की सेवा करती है।

देश में न तो खाद्यान्न की कमी है. न ही संसाधनों की। जरूरत है संसाधनों के, खाद्यान्न के उचित वितरण की। एक सही कृषि, आर्थिक नीति अपनाने की। 60 करोड़ लोगों का रोजगार खेती से जुड़ा हुआ है, विश्व का कोई क्षेत्र दूसरा ऐसा नहीं है जो इन सब लोगों के लिए रोजगार पैदा कर सके। कृषि का सही विकास ही किसानों की दशा को सुधार सकता है। और खाद्यान्न संकट को भी हल कर सकता है।

क्या हो हल?

- 'जमीन जोतने वाले को' के आधार पर भूमिहीन व गरीब किसानों को जमीन दी जाये। भू-हदबंदी कानून को लागू कर जमींदारों की जमीन तथा मंदिर, मठों और गुरूद्वारों आदि धार्मिक संस्थाओं की जमीन को बांटा जाये।
- खाद-बीज, तेल, कीटनाशकों की कीमत कम की जाये व किसानों को 50 प्रतिशत तक सब्सिडी दी जाये ताकि खेती की लागतों को कम किया जा सके।
- किसानों की सारी फसल सरकार खरीदे और सार्वजनिक वितरण प्रणाली को मजबूत बनाते हुये आम आदमी तक सर्वसुलभ व सस्ता अनाज पहुंचाने की गारंटी करे। बहुराष्ट्रीय विदेशी कंपनियों, बड़े व्यापारियों व सटोरियों द्वारा खाद्य वस्तुओं की कालाबाजारी व वायदा कारोबार पर रोक लगायें।
- कीटनाशकों व उर्वरकों के मामले में बहुराष्ट्रीय विदेशी कंपनियों पर से निर्भरता खत्म करे। अपने देश में उन्हें प्रतिबंधित करे। पेटेंट कानूनों को रद्द करे, बीज विधेयक को वापस ले और डब्लूटीओ से बहार आये।
- सामुदायिक बीज भंडार बनाये जायें, सामूहिक अनाज भंडार बनाये जायें ताकि किसानों को बीज व खाद्यान्न की गारंटी हो सके व अपने बीज को बचाया जा सके।
- खेती पर आधारित उद्योगों को बढ़ावा दिया जाये।
- भूमिगत जल की बजाये नदियों के जल से व वर्षा के जल भंडारण के द्वारा सिंचाई सुविधा की गारंटी हो व सिंचाई का रकबा बढ़ाया जाये।
- खेती की जमीन पर भारी-भरकम उद्योग लगाना बंद किया जाये। एसईजेड के लिये जमीनें देना बंद हो।
- देश की जरूरत के हिसाब से दलहन, अनाज, तिलहन का रकबा जनसंख्या व खपत के आधार पर तय किया जाये।
- फसल चक्र परिर्वतन के नाम से या बायो डीजल बनाने के नाम से जारी कृषि की आत्मनिर्भरता को खत्म करने की कोशिशें बंद हों। रतनजोत (बगरंडा) आदि खेती को प्रोत्साहन देना बंद करो।

ये नीतियां केवल नव जनवादी सरकार ही लागू कर सकती है। हमें शोषक सरकारों से इन मांगों पर संघर्ष करते हुये राजसत्ता पर कब्जा करने की लड़ाई को तेज करना है। केवल तभी इस नवजनवादी वैकल्पिक मॉडल को लागू कर सकते हैं। तब तक जनता को चाहिये कि वह बड़े जमींदारों, सूदखोरों व सरकारी गोदामों पर कब्जा करके अपनी भूख को मिटाये। वो गोदाम आपकी खून-पसीने की मेहनत से भरे हैं। उन पर आपका ही अधिकार है। ★

(...पृष्ठ 8 का शेष)

भाकपा (माओवादी) की हमारी केन्द्रीय कमेटी सभी धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक ताकतों का आह्वान करती है कि वे धार्मिक अल्पसंख्यकों पर हिन्दू फासीवादियों के बर्बर हमलों का पलटकर जवाब दें। यह जिम्मेदारी सबसे ज्यादा बहुसंख्यक हिन्दुओं के कंधों पर आती है कि वे धार्मिक अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा करें और वे वीएचपी-बजरंग दल-आरएसएस-भाजपा की आड़ में छिपे आतंकवादियों को अलग-थलग कर दें जो सांप्रदायिक विद्वेष भड़काते हैं और अल्पसंख्यकों पर हमले करते हैं।

हमें एक व्यापक आधार पर जन आन्दोलन का निर्माण करना चाहिए ताकि भगवा आतंकवादियों को अलग-थलग किया जा सके और सरकार पर यह दबाव डाला जा सके कि वह कर्नाटका, ओडिशा, मध्यप्रदेश और अन्य जगहों पर ईसाई समुदाय पर अत्याचार और बर्बर हमले करने वालों को गिरफ्तार कर सजा दे। आडवाणी, मोदी, येदियूरप्पा, सिंघल, कटियार, तोगड़िया, नवीन पटनायक, आदि सब जनता के दुश्मन हैं। वर्तमान व्यवस्था इन दरिंदों को कभी सजा नहीं देगी। निश्चित रूप से आखिर में जन अदालतों में ही इन्हें सजा दी जाएगी। हमें धार्मिक अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा करनी चाहिए और एक धर्मनिरपेक्ष और सच्चे लोकतांत्रिक भारत के निर्माण के लिए संघर्ष करना चाहिए. .. एक ऐसा नव भारत जिसमें धार्मिक आजादी तथा सभी धर्मों की सुरक्षा और बराबरी सुनिश्चित हों।

(आजाद)
प्रवक्ता,
केन्द्रीय कमेटी,
भाकपा (माओवादी)

आदिवासियों को अशिक्षा के अंधकार में कौन रखना चाहते हैं?

विगत ढ़ाई सालों में हमारी पार्टी के नेतृत्व में जन मिलिशिया, जन संगठन एवं क्रांतिकारी जनता ने मिलकर बस्तर संभाग में कई शाला-आश्रम भवनों को गिराया है। हाल ही में किरंदुल इलाके के समेली, पोटाली, बूरगुम एवं बीजापुर के उसूर विकासखंड के मुरदपड़ा में भवनों को गिराया गया है। पिछले साल भर में बेनूर, मर्दापाल एवं डौला इलाकों के 25 गांवों के 45 भवनों को, दंतेवाड़ा-बीजापुर जिलों के गावों में 65 भवनों को, कुल मिलाकर सौ से ज्यादा भवनों को गिराया गया। इस अभियान में हजारों लोगों ने स्वेच्छा से भाग लिया।

शाला-आश्रम भवनों को गिराये जाने को मीडिया में माओवादियों की आदिवासी विरोधी एवं विकास विरोधी हरकत के रूप में प्रचारित किया जा रहा है। 'माओवादी आदिवासियों को अज्ञान के अंधेरे में रखना चाहते हैं।' 'आदिवासी पढ़-लिखकर आगे बढ़ेंगे तो उनकी (माओवादियों की) बात नहीं मानेंगे' इसलिए 'उन्हें शिक्षा-स्वास्थ्य से वंचित रखना चाहते हैं।' ऐसा दुष्प्रचार जारी है। लेकिन सच्चाई इसके ठीक विपरीत है। यह वैसा ही है जैसे उल्टा चोर कोतवाल को डांटे। हमारी पार्टी इन आरोपों को सिरे से खारिज करती है। हमारे खिलाफ जारी इस कुटिल प्रचार की हम कड़ी निंदा करते हैं। हमें शाला भवनों को गिराने का शौक नहीं है। हमारे बच्चों को शिक्षा एवं स्वास्थ्य से वंचित रखने का सवाल ही नहीं उठता। छतविहीन करने की शैतानी चाहत नहीं है हमारी। शाला भवनों को गिराना जनता की मजबूरी थी। शाला-आश्रम-अस्पताल भवनों पर कब्जा जमाकर जन जीवन को तहस-नहस करने के सरकारी सशस्त्र बलों के नापाक इरादों को नाकाम करने के लिए ही उन्हें गिराना पड़ा। आदिवासी अस्मिता को बचाने, आजाद जिंदगी को आबाद रखने, सशस्त्र बलों के संगीनों के साये से दूर रखने, आदिवासी आंदोलन से हासिल उपलब्धियों को बरकरार रखने, दण्डकारण्य में जन्म लेती जन राजसत्ता के कुचल दिये जाने से रोकने के लिए यह कदम जरूरी समझा गया। सरकारी सशस्त्र बलों को तमाम संघर्षरत इलाकों में तैनात करके क्रांतिकारी जनयुद्ध को खत्म करने की साजिश के तहत शाला भवनों में कैंप लगाने की सरकारी चाल को भांपकर हमारे जन संगठन एवं जनता ने विगत ढाई सालों में कई शाला-आश्रम भवनों को जमींदोज़ किया।

शाला भवनों को कई जगह बच्चों की पढ़ाई के लिए नहीं बल्कि सशस्त्र बलों की तैनाती के हिसाब से ही लंबे-चौड़े, पक्के भवनों को किलेबंदी की तर्ज पर बनवाया जा रहा है। शाला भवनों के नाम पर थाने बनाने की साजिश चल रही है। बस्तर जिले के लोहण्डीगुड़ा विकासखंड के अंतर्गत पीछ एवं काकानार में 45 कमरों के शाला-आश्रम भवन बनाये गये थे। उसी तरह नारायणपुर जिले के डौला इलाके के कन्हारगांव में भी 45 कमरों वाला भवन बना था। मंडेली एवं गोरडंड में भी ऐसा ही भवन निर्माणाधिन थे। साधारणतया प्राथमिक शाला भवनों के लिए बस्तर-नारायणपुर जिलें में 4,35,000 रू. मंजूर होते हैं। बस्तर जैसे अत्यंत पिछड़े एवं आदिवासी इलाके में प्राथमिक शाला एवं आश्रम भवनों के लिए 45 कमरों वाले भवनों का निर्माण क्या सरकार के 'आदिवासी प्रेम' का सबूत है या नक्सली उन्मूलन अभियान का हिस्सा? शहरी इलाकों में भी प्राथमिक शाला भवन क्या कहीं इतना बड़ा है? प्राथमिक शाला भवन के लिए क्या 45 लाख रू. कहीं और मंजूर किये हैं सरकार ने? अपनी तबाही के अड्डे बनाने से रोकने के लिए यदि जनता ने इन्हें जमींदोज़ किया तो क्या गलत किया?

विगत 28 सालों से हमारी पार्टी दण्डकारण्य के गांवों में आदिवासियों के बीच कार्यरत है। अविभाजित बस्तर जिले के दक्षिणी छोर से शुरू करके आज करीबन सभी इलाकों में हमारी पार्टी जनता को संगठित करने के काम में लगी हुई है। हमारे आंदोलन के चलते इस दौरान आदिवासी अवाम का कभी कत्लेआम नहीं हुआ, उनके घर-गांव नहीं जले, उनकी बहु-बेटियों की इज्जत नहीं लुटी; घर-बार से वंचित होकर दर-दर भटकना नहीं पड़ा, राहत शिविरों के नाम पर बंदी शिविरों में जीवन बिताना नहीं पड़ा। लेकिन अब इस सच्चाई पर कोई परदा नहीं डाल सकता है कि 'नक्सलियों से आदिवासियों की सुरक्षा' के नाम पर सरकार के द्वारा चलाये जा रहे सलवा जुडूम सैनिक अभियान के कारण ही यह सब हो रहा है। दंतेवाड़ा एवं बीजापुर जिलों में 700 से ज्यादा गांव शमशान बन गये हैं। बंदी शिविरों में बंद किये गये लोगों को छोड़कर बाकी लोग सिर छुपाने के लिए जंगलों में भटक रहे हैं या पलायन कर गये हैं। इन्हें न शाला नसीब है और न अस्पताल। शाला-आश्रम-अस्पताल भवनों में पुलिस-अर्ध-सैनिक बल, एसपीओ, नगा (अब नहीं हैं) व मिजो बटालियनों ने अड्डा जमाया है। कारपेट सेक्यूरिटी के नाम पर जगह-जगह कैंप बिठाया जा रहा है।

दंतेवाड़ा, बीजापुर जिलों के भैरमगढ़, उसूर, भोपालपटनम, कोंटा विकासखंडों के चेरपाल, पामुलवाया, चेरामंगी, मुर्कीनार, नैमेड़, माटवाड़ा, जैवाडा, पिनकोंडा, नेलसनार, पोलम, रानीबोदली, तोयनार, गुदमा, पोलमपल्ली, बोदली, इंजरम, मराईगुड़ा, अरनपुर, पालनार आदि कुल मिलाकर 156 शाला आश्रम भवनों में पुलिस व अर्ध-सैनिक बलों के कैंप बिठाये गये हैं। पदेड़ा, पिडिया, तमड़ी, कडेनार, दाडेली, डब्बाकुण्टा आदि कई शालाओं को स्थानांतिरत करके सलवा जुडूम शिविरों में, पुलिस थानों के बगल में, सड़क किनारे के गांवों में चलाया जा रहा है।

बासागुड़ा, उसूर, गंगालूर, मिरतूर, कुटरू, भोपालपटनम, कोंटा, किष्टारम आदि अंदरूनी इलाकों के गांवों की शालाओं को बंद किया गया है। अभी स्थिति यह है कि जो सलवा जुडूम में शामिल हुये हैं, (चाहे अपनी इच्छा से हो या जबरिया) वे ही रमन सरकार की नजर में नागरिक हैं और क्षेत्र की जनता है। सिर्फ उन्हीं के लिए शाला-आश्रम की सुविधा मिल सकेगी। बाकी सभी लोग माओवादी समर्थक हैं और किसी प्रकार की सुविधा पाने के हकदार नहीं हैं। जो लोग अपना घर-बार-जमीन नहीं

छोड़ना चाहते हैं वो सब सरकार विरोधी हैं और उन्हें सिर्फ लाठी-जेल-गोली ही दी जा सकती है। शिक्षा एवं स्वास्थ्य से वंचित करके उन्हें 'जीतना' चाहती है यह सरकार। दंतेवाड़ा जिले में शिक्षा सत्र 2006-07 में प्राथमिक शालाओं में दर्ज छात्र-छात्राओं की संख्या 1 लाख 31 हजार थी, जबकि 40 हजार से ज्यादा बच्चों ने शाला छोड़ दिया। वहीं 11 से 14 वर्ष की उम्र के 57,486 बच्चों की दर्ज संख्या में से 34 हजार से ज्यादा बच्चों ने पढ़ाई छोड़ दी। सलवा जुडूम नामक सरकारी जुल्म का ही नतीजा है यह।

सलवा जुडूम का बस्तर, नारायणपुर एवं कांकेर जिलों में विस्तार करने की सरकार लगातार कोशिश कर रही है। जागरूक जनता एवं जनवादी ताकतों के विरोध के चलते अभी तक इसमें सरकार सफल नहीं हुई। अब सरकार सीधे पुलिस व अर्ध-सैनिक बलों के कैंप बिठाने की पुरजोर कोशिश में लगी है। इसके तहत वायनार, कडियानार, हर्राकोडेर के शाला भवनों को पुलिस के हवाले करने से इनकार करने पर तत्कालीन ओएसडी (पुलिस) आचला ने दो शिक्षकों की पिटाई की थी। नक्सल समर्थक कहकर दंतेवाड़ा जिले में तो कई शिक्षकों की पिटाई की गयी थी। कइका के शिक्षक विजयलाल दुग्गा की शाला में ही हत्या कर दी गयी। वर्तमान में मूंजमेट्टा, वेड़माकोट, नेलवाड़ा, धानोरा, एड़का, इरानार, कुर्सनार, कुकड़ाझोर की शालाओं में पुलिस कैंप चला रहे हैं। यहां छात्रों को एक कोने में या किचन में रहने-पढ़ने पर मजबूर किया गया है। सरकार बंदूकों के साये में 'बढ़िया' पढ़ाई की बात कर रही है। इन शालाओं में पढ़ने वाली कई छात्राएं पुलिस वालों की अश्लील हरकतों से तंग आकर पढ़ाई छोड़ने पर मजबूर हुई हैं। संविधान के अनुच्छेद 39 ने बच्चों को स्वतंत्र व गरिमामय वातावरण में स्वस्थ विकास का अवसर तथा सुविधायें प्रदान करने के साथ ही उन्हें शोषण व नैतिक-आर्थिक परित्याग से सरंक्षण प्रदान किया है। सलवा जुडूम का आतंक फैलाकर एवं शाला भवनों में पुलिस कैंप बिठाकर छत्तीसगढ़ की रमन सरकार क्या संवैधानिक प्रावधानों का खुला उल्लंघन नहीं कर रही है?

शाला भवनों को गिराकर आदिवासी बच्चों को शिक्षा से वंचित करने का हम पर आरोप लगाने वाली सरकार आदिवासी इलाकों में शिक्षा के प्रसार को लेकर कितनी चिंतित है, उपरोक्त स्थिति से राज्य की जनता आसानी से समझ सकती है। वस्तुस्थिति पर नजर डालने से यह बात और भी स्पष्ट हो जायेगी। हम यहां सिर्फ मर्दापाल, बेनूर, डौला इलाकों तक सीमित होकर कुछ सच्चाइयों को सामने लाना चाहते हैं।

शाला भवनों को गिराये जाने के काफी पहले से ही यहां शालाविहीन, शिक्षकविहीन एवं अस्पतालविहीन गांवों की संख्या कम नहीं है। एकल शिक्षक प्राथमिक शालायें, 2 या 3 शिक्षकों की माध्यमिक शालायें (प्राथमिक शाला सहित) बड़ी संख्या में मौजूद हैं। आदेवेड़ा, बेरावेड़ा, हूपाड, किल्लेम, गुमटेर, घोटिया, ताड़नार, बोंडोस, भट्टवेडा, जत्तापारा, मूसनार, मंदोडा, वट्टेकाल, मांडोकी, सोनापाल, माट्टावन, नारिया, गोबल, कोडेनार, कव्वानार, सिवनी, दोडमे, मर्सुकोल, ईतुलवाड़ा, तिरका, पानीगांव, डुव्वलमेट्टा, कोकपाड़, टेमुरगांव, पद्दानार, गडदापाल, कड़हगांव, नाकानार, बांसपाल, टुट्टा, मुण्डपाल, रोहताड़, मुसकुडूम, बहकेर, चमेली, रेंगागोंदी, कोकाड़ी, मडानार, मंगवाल, सिरपुर आदि अनेक गांवों की प्राथमिक शालाओं में एक ही शिक्षक है। प्राथमिक-माध्यमिक शाला एवं आश्रम के लिए कुल मिलाकर 2 या 3 शिक्षकों की नियुक्ति इन इलाकों में बहुत बड़ी बात होती है। इससे आदिवासी बच्चों को किस स्तर की शिक्षा नसीब होती है, इसका अंदाजा लगाना आसान ही है। शाला एवं शाला भवनों के बावजूद ऐसे भी कई शिक्षक हैं जो नक्सली खतरा बताकर अपनी सेवायें देने की जिम्मेदारी से निजात पाते हैं। केंद्र की सर्वेक्षण रिपोर्ट में कहा गया है कि छत्तीसगढ़ में 40 फीसदी शिक्षक शालाओं से गायब रहते हैं। एक तो बस्तर के घने जंगलों के अंदरूनी गांव, ऊपर से नक्सली 'खतरा'। अब सोचिए जरा, शालाओं में शिक्षकों की उपस्थिति और उनके अध्यापन के बारे में! माड़ (सरकारी शब्द में अबूझमाड़) के कोहकामेट्टा एवं कुतुल गांवों में अस्पताल भवन तैयार हैं। चिकित्सकों की नियुक्ति भी हुई है। पिछले दो सालों में गांव वाले कई बार अधिकारियों को ज्ञापन भी दे चुके हैं। लेकिन अभी तक वहां डॉक्टर नहीं पहुंचे हैं। अधिकारियों की मिलीभगत से शिक्षक एवं चिकित्सक शाला-अस्पतालों में अपनी सेवायें देने से बचते हैं। यह रिवाज बर्षों पुराना है। हमारे आंदोलन से भी पुराना है। भ्रष्ट अधिकारीगण एवं शिक्षक-चिकित्सक ग्रामीणों के द्वारा लगातार दबाव बनाने व ज्ञापन देने के बावजूद जानबूझकर लापरवाही बरतते हैं। जन विरोधी राजनेताओं के सरंक्षण प्राप्त घूसखोर अधिकारी कुछ शिक्षकों के साथ मिलकर शालाओं में मध्यान्ह भोजन कार्यक्रम के अमल में गड़बड़ी करके बच्चों के मुंह से निवाले छीन रहे हैं। कागजों पर आंकड़ों की हेराफेरी करके करोड़ों रुपए डकार रहे हैं। ऊपर से ये लोग बेशर्मी से अखबारों में यह छपवाते हैं कि नक्सलियों के द्वारा मध्यान्ह भेजन कार्यक्रम को नहीं चलने दिया जा रहा है।

समूचे बस्तर में सरकार की हर तरह की कवायद (दिखावे) जैसे सर्वशिक्षा अभियान, साक्षरता अभियान, राजीव गांधी शिक्षा मिशन आदि के बावजूद आज साक्षरता दर (1997 के आंकड़ों के अनुसर 17 प्रतिशत) 40 प्रतिशत से भी कम है, इसमें महिला साक्षरता और भी कम है। तथाकथित आजादी के 6 दशक बाद का आलम यह है तो शासकों के 'आदिवासी प्रेम' का अंदाजा लगाना कठिन नहीं होगा। यहां अत्यंत पिछड़े आदिवासी इलाकों के बच्चों की शिक्षा के प्रति सरकार की 'संवेदनशीलता' बुद्धिजीवियों के लिए शोध का विषय बन सकती है।

छत्तीसगढ़ राज्य में 35,900 प्राथमिक शालायें, 15,650 माध्यमिक शालायें हैं। इनमें भवनविहीन एवं शिक्षक विहीन शालाओं की संख्या आधे से ज्यादा है। इन शालाओं में 52,000 नियमित शिक्षक हैं, जबकि शिक्षाकर्मियों की संख्या 85,000 है। नियमित शिक्षकों की तुलना में आधे वेतन पर काम करने वाले शिक्षाकर्मियों को अपनी समस्याओं के समाधान के लिए हर साल सड़क पर उतरना पड़ रहा है। सत्ता में आने के 24 घंटे के अंदर शिक्षा कर्मियों की समस्याओं का हल करने का वादा करने वाली भाजपा को सत्तारूढ़ होकर अभी साढ़े चार साल पूरे हो गये।

लेकिन शिक्षाकर्मियों का न तो नियमितीकरण हुआ है और न ही उनका वेतन बढ़ा है। अभाव में जीने को मजबूर ऐसे शिक्षकों से किस स्तर की शिक्षा की अपेक्षा कर सकते हैं?

एक तरफ देश में मौजूद लाखों प्राथमिक शालायें सुविधा विहीन हैं, जैसे भवनों की कमी, शिक्षकों की कमी, मूत्रशालाओं, खेल के मौदानों का अभाव आदि। (दूसरी तरफ हाल ही में केंद्रीय मानव संसाधन मंत्री ने 6000 प्राथमिक शालाओं को अत्याधुनिक एवं उत्तम सुविधाओं से सुसज्जित करने की घोषणा की। इससे स्पष्ट है कि सरकार मुट्ठी भर रईस लोगों के बच्चों के लिए सर्वसुविधायुक्त शालायें और उत्तम शिक्षा उपलब्ध करवाती रहेगी और आम आदिवासी लोगों के लिए साक्षरता या सर्वशिक्षा अभियान)। आदिवासी इलाकों की शिक्षा के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता इस बात से स्पष्ट हो जाती है कि यहां प्राथमिक शालाओं में दाखिला लेने वाले बच्चों का सिर्फ 8 प्रतिशत ही उच्चतर माध्यमिक शालाओं तक पहुंच पाते हैं।

हमारी पार्टी एक ओर जनता की जनवादी राजनीतिक सत्ता को स्थापित करने के लिए संघर्षरत है तो दूसरी ओर आदिवासी अवाम की शिक्षा, स्वास्थ्य एवं विकास के लिए अपने स्तर पर दृढ़ संकल्प के साथ प्रयासरत है। शाला भवनों के गिराये जाने के बावजूद बच्चों की पढ़ाई को बाधित नहीं होने दिया गया है। करीबन सभी गांवों में वैकल्पिक व्यवस्था की गयी है। मर्दापाल-बेनूर और डौला इलाकों में गिराये गये 25 गांवों की शाला भवनों की जगह 21 गांवों - मातला, ओंगनार, डंडवंड, मंदोडा, कडियानार, मूसनार, टोंडावेड़ा, मर्सुकोल, जातापारा, राजवेडा, तोयनार, सुलेंगा, पडोनार, बेच्चा, ईतुलवाडा, कोरंडा, चिनारी, कोंगरा, मरगडा, केज्जम, बाधजार में वैकल्पिक व्यवस्था की गयी है और पढ़ाई जारी है। इनमें से केज्जम को छोड़ कर बाकी सभी गांवों में जनता के द्वारा अपने बच्चों की पढ़ाई के लिए शालाओं की व्यवस्था की गयी। आश्रम के लिए अभी जहां व्यवस्था नहीं हुई है, वहां गांव की जनता अपने घरों में बच्चों को आश्रय दे रही है। बच्चों को पढ़ने-लिखने के लिए किलेबंदी वाले भवनों की जरूरत नहीं है। इरादा मजबूत हो और ईमानदारी से काम करें तो इतिहास गवाह है कि पेड़ों के नीचे भी गौतम बुद्ध बन सकते हैं। यहां एक बात स्पष्ट करने में हमें कोई हिचक नहीं है कि शाला भवनों को गिराने की मुहिम में कुछेक जगहों पर छोटे-छोटे भवनों को भी गिराया गया है, जो अनावश्यक था। हमें इस बात के लिए खेद है।

हमारी पार्टी शालाविहीन गांवों में प्राथमिक शालाओं-छात्रावासों को चालू करने की योजना पर अमल कर रही है। शिक्षक विहीन गांवों की शालाओं में शिक्षकों की नियुक्ति की कोशिश कर रही है। तमाम शिक्षकों को समझा-बुझा रही है कि वे सही ढंग से अपनी सेवायें दें अन्यथा नौकरी छोड़ दें या तबादला करवा लें, ताकि कोई दूसरा व्यक्ति उनकी जगह ईमानदारी से काम कर सके। ग्रामीणों को समझा रही है कि वे शिक्षकों की आवश्यकताओं की पूर्ति करें और उन्हें सुविधायें उपलब्ध करायें। ग्रामीणों को साक्षर बनाने रात्रि पाठशालाओं का संचालन कर रही है। पार्टी के भीतर अपढ़ साथियों को पढ़ाने-लिखाने के लिए चलायमान पाठशाला (मोबाइल एकाडमिक स्कूल) का संचालन कर रही है। नित्य दमन के बीच हालांकि ये कोशिशें नाकाफी हैं और बहुत धीमी गति से चल रही हैं, लेकिन इरादा पक्का है और अमल में ईमानदारी है।

शिक्षा व स्वास्थ्य जैसी जरूरी, जनोपयोगी एवं बुनियादी सेवाओं के लिए बनाये गये भवनों को सरकार अपने सशस्त्र बलों की तैनाती के लिए सबसे बढ़िया जगह मानती है, जबकि पूर्वोत्तर राज्यों के संदर्भ में सर्वोच्च न्यायालय ने अपने एक फैसले में सशस्त्र बलों को शाला भवनों का इस्तेमाल करने से मना कर दिया था। यह फैसला काफी पुराना है। लेकिन सरकार ने इस फैसले को कोई तवज्जो नहीं दी। अपने ही द्वारा बनाये गये कानूनों का उल्लंघन करना सरकार के लिए कोई नई बात नहीं है। यहां यह बताना लाजिमी होगा कि विगत 28 सालों में हमारी पार्टी ने शाला-आश्रम-अस्पताल भवनों में से एक पर भी कब्जा नहीं जमाया, न ही उन्हें अपना केंद्र बनाकर सशस्त्र गतिविधियों को संचालित किया। यहां यह याद दिलाना भी वाजिब होगा कि रानीबोदली कन्या आश्रम भवन पर पीएलजीए के द्वारा किये गये हमले के दौरान हमने आश्रम की छात्राओं को खरोंच तक नहीं आने दिया। शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं को निर्बाध गति से जारी रखने के लिए जरूरी है कि सरकारी सशस्त्र बल उन्हें इस्तेमाल करना बंद करें। शाला-आश्रम-अस्पताल भवनों में चल रहे पुलिस कैंपों को वहां से हटा दिया जाये। पत्रकार, बुद्धिजीवी, प्रगतिशील, जनवादी ताकतों, मानवाधिकार संगठनों एवं कार्यकर्ताओं को इसके लिए आगे आना चाहिये। संघर्षरत इलाकों का दौरा करके वस्तुस्थिति का पता लगाकर जनता को उससे अवगत कराना चाहिये। सरकार जो आदिवासियों की अशिक्षा, अस्वस्थता के लिए असली जवाबदार एवं जिम्मेदार है, से मांग करना चाहिये कि वह शाला भवनों को अपने सशस्त्र बलों की तैनाती के लिए इस्तेमाल न करे। सलवा जुडूम को बंद करके उसके आतंक के साये से शिक्षा एवं स्वास्थ्य को मुक्त रखे। ✶

(...पृष्ठ 25 का शेष)

कॉमरेड अनुराधा के कम्युनिस्ट गुणों को आत्मसात कर उनके सपनों को साकार बनाने का संकल्प लें!

ईमानदारी, बच्चों जैसा सीधा-सादापन, जीवटता, जिम्मेदारी के प्रति जबर्दस्त प्रतिबद्धता आदि कॉमरेड अनुराधा के गुण हर किसी को प्रभावित करते हैं। सभी किस्मों और सभी वर्गों के लोगों से वह आसानी से रिश्ता जोड़ लेती थीं। वह पार्टी की एक निस्वार्थी नेत्री थीं जिन्होंने अपनी अस्वस्थता के बावजूद अपने कंधों पर हर किस्म का काम उठा लिया। वह एक आदर्श कम्युनिस्ट थीं जिन्हें हरेक कॉमरेड को एक मिसाल के रूप में लेना चाहिए। कॉमरेड अनुराधा हमारे दिलों में सदा जिंदा रहेंगी। आइए, कॉमरेड अनुराधा के कम्युनिस्ट गुणों को ऊंचा उठाए रखें। ✶

मार्क्सवादी सिद्धांतकार, आदर्शवान कम्युनिस्ट और भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन की महान नेत्री

कॉमरेड अनुराधा (जानकी दीदी) अमर रहें!

12 अप्रैल 2008 को कॉमरेड अनुराधा (उन्हें अलग-अलग इलाकों में नर्मदा, वर्षा, रमा आदि नामों से जाना जाता था और दण्डकारण्य में उनका नाम 'जानकी दीदी' था) का फैल्सिपेरम मलेरिया से देहांत हुआ। इसके साथ ही, भारत की मेहनतकश जनता ने अपनी एक दक्ष व अग्रणी महिला नेता खो दी जो अपने अथक प्रयासों, गहरे विचारधारात्मक व राजनीतिक अध्ययन और क्रांतिकारी दृढ़ संकल्प के बल बूते पर कदम-ब-कदम आगे बढ़ते हुए भाकपा (माओवादी) की केन्द्रीय कमेटी सदस्य के रूप में उभरी थीं। शोषित महिलाओं ने अपने मुक्ति संग्राम की एक अग्रणी नायिका खो दी जो पिछले साढ़े तीन दशकों से उन्हें अविराम संगठित करती रहीं और शोषण व उत्पीड़न के खिलाफ संघर्ष में उतारती रहीं। नागपुर के दलित जन समुदाय और असंगठित क्षेत्र के मजदूर अपनी एक नेता से वंचित हो गए जिन्होंने उन्हें जागृत व संगठित करते हुए उनके साथ जिया था। दक्षिण बस्तर के आदिवासियों, जो अब 'सलवा जुडूम' की त्रासदी से सर्वाधिक पीड़ित हैं, ने अपनी प्यारी 'दीदी' खो दी जिन्होंने उनके बीच रहकर उनके दुख-दर्द को बांट लिया। छात्रों और बुद्धिजीवियों ने अपना एक रोल मोडल खोया जिसने उत्पीड़ित जन समुदायों के साथ एकताबद्ध होने के लिए अपनी सारी मध्यम वर्गीय सुख-सुविधाओं को ठुकरा दिया। देश के माओवादी आन्दोलन के इतिहास में वह केन्द्रीय कमेटी की पहली महिला सदस्य हैं जो शहादत की बुलंदी पर पहुंच गईं।

अपनी शहादत के समय तक उनकी उम्र महज 54 साल की थी। महिला उत्पीड़न के सवाल पर झारखण्ड के किसी गुरिल्ला क्षेत्र में महिला कॉमरेडों की क्लास लेकर लौटी ही थीं कि वह घातक फैल्सिपेरम मलेरिया की शिकार हो गईं। 6 अप्रैल को उन्हें बुखार हुआ था। भूमिगत जीवन की दिक्कतों के चलते उन्हें सही इलाज नहीं मिल पाया था। स्थानीय पैथोलजिस्ट ने बताया था कि उनके खून में मलेरिया नहीं पाया गया। एक स्थानीय डॉक्टर ने पेट में गड़बड़ी का इलाज किया। 11 अप्रैल को जब उनके खून का दोबारा परीक्षण हुआ तभी यह पता चल पाया कि उन्हें फैल्सिपेरम मलेरिया हो चुका है। हालांकि उस दिन सुबह तक वह ठीक ही दिख रही थीं, लेकिन फैल्सिपेरम बैक्टीरिया ने उनके फेफड़ों, दिल और गुर्दों को प्रभावित किया था जो पहले ही सिस्टेमिक सेर्लोसिस नामक एक लाइलाज बीमारी से कमजोर पड़ चुके थे। उन्हें तुरन्त ही अस्पताल में दाखिल किया गया, पर आधे घण्टे के अन्दर ही उनके शरीर के सारे अंग जवाब देने लगे। हालांकि उन्हें पहले ऑक्सीजन पर और बाद में जीवन-रक्षण प्रणाली पर रखकर बचाने की कोशिश की गई, लेकिन अगले दिन सुबह वह हमसे हमेशा के लिए विदा ले गईं। जब वह ऑक्सीजन पर थीं तो सचेतन अवस्था में थीं और आंखें खुली हुई थीं... वही नर्म आंखें जो गहरी अभिव्यक्ति के लिए जानी जाती थीं... तीखी पीड़ा को झेलते हुए भी और संभवत: यह जानते हुए भी कि उनकी आखिरी घड़ियां आ चुकी हैं।

दरअसल उनकी तबियत तेजी से बिगड़ गई क्योंकि वह पहले से सिस्टेमिक सेर्लोसिस नामक लाइलाज बीमारी से पीड़ित थीं। उस बीमारी से पहले उनके हाथ कमजोर पड़ गए थे और बाद में धीरे-धीरे शरीर के अंदरूनी अंग भी। यह बीमारी उन्हें पांच सालों से थी जिसे 2 साल पहले ही पहचाना गया था और तब तक उनके फेफड़ों और दिल की धड़कनों पर उसका दुष्प्रभाव पड़ चुका था। इसके बावजूद भी उन्होंने पहले की ही तरह उत्साह के साथ काम किया। उन्होंने शायद ही अपनी बीमारी के बारे में कभी कोई बात की होगी। और अत्यंत कष्टप्रद काम भी अपनाया।

यूं शुरू हुआ था सफर

उत्पीड़ित जन समुदायों के प्रति कॉमरेड अनुराधा की प्रतिबद्धता अटल थी। गरीबी से ग्रसित जन समुदायों की भलाई के प्रति प्रतिबद्धता ने ही उन्हें क्रांतिकारी राजनीति में खींच लाया। मेहनतकशों की गरीबी और अपमान को बर्दाश्त नहीं कर पाने के कारण ही उन्होंने उसके जवाब ढूंढ़ने शुरू किए। 1970 के दशक में जब क्रांतिकारी आन्दोलन अपने शुरूआती दौर में था, तब कॉमरेड अनुराधा मुम्बई में पढ़ रही थीं। बाद में उन्होंने पढ़ाना शुरू किया। एक प्रतिभाशाली लेक्चरर (व्याख्याता) के अपने केरिअर को त्यागकर अपना पूरा जीवन क्रांति को समर्पित किया और भाकपा (माओवादी) की केन्द्रीय कमेटी की सदस्या बन गईं। पार्टी की एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस में वह एक मात्र महिला कॉमरेड थीं, जो केन्द्रीय कमेटी में चुन ली गई थीं।

भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन में 35 सालों तक काम करने वाली कॉमरेड अनुराधा ने उसमें न सिर्फ सांगठनिक तौर पर, बल्कि राजनीतिक और विचारधारात्मक रूप से महत्वपूर्ण योगदान दिया। महाराष्ट्र में भाकपा (मा-ले) के निर्माताओं में से वह एक

थीं। हालांकि उनके काम का मुख्य फोकस महाराष्ट्र (पश्चिमी और विदर्भ क्षेत्रों में) रहा, उन्होंने अखिल भारतीय संगठनों और दण्डकारण्य के क्रांतिकारी आन्दोलन में भी योगदान दिया। नागपुर विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर के छात्रों को समाजशास्त्र पढ़ाने के बाद 40 से ज्यादा की उम्र में वह बस्तर के जंगलों की ओर चल पड़ी थीं जहां उन्होंने सशस्त्र गुरिल्ला दस्तों के साथ रहकर आदिवासियों के बीच तीन साल काम किया था।

उनके राजनीतिक जीवन की शुरूआत 1972 में मुम्बई के एल्फिनस्टाइन कॉलेज में हुई थी, जो बुनियादी तौर पर उनकी ही पहलकदमी की बदौलत 1970 के दशक में जुझारू वामपंथी गतिविधियों का केन्द्र बना था। पहले 1972 में महाराष्ट्र में पड़े अकाल के समय उन्होंने छात्रों के एक टोले के साथ बंग्लादेशी शरणार्थी शिविरों का दौरा किया था। वहां जो कुछ भी देखा, उससे वह गहरे तक हिल गई थीं क्योंकि वह बड़ी संवेदनशील शख़्स थीं। इसके बाद कॉलेज की गतिविधियों और गरीबों के बीच सामाजिक कार्यों में उनकी सक्रियता बढ़ी थी। उन्हीं दिनों वह एक छात्र संगठन 'प्रोयोम' (प्रगतिशील युवा आन्दोलन) के सम्पर्क में आ गईं जो उस जमाने के नक्सलवादी आन्दोलन से जुड़ा हुआ था। जल्द ही वह उसकी सक्रिय सदस्या बनीं और बाद में उसके नेताओं में से एक। उन्होंने मुम्बई की झोंपड़पट्टियों में काम किया जिससे उन्हें दलितों, दलित आन्दोलन और छूआछूत की भयावहता से रूबरू होने का मौका मिला। 1974 के जुझारू दलित पैंथर आन्दोलन और शिवसेना के साथ तीन महीनों तक हुई वर्ली झड़पों में उनकी भागीदारी रही। अपने संवेदनशील स्वभाव से सहज ही वह दलित उत्पीड़न के दर्द को करीबी से समझने लग गईं और उसके जवाब ढूंढ़ने में जुट गईं।

पुरानी भाकपा (मा-ले) (पीपुल्सवार) की 2001 कांग्रेस के मंच पर कॉमरेड जानकी (अनुराधा)

उन्होंने गहन अध्ययन कर मार्क्सवाद का गहरा ज्ञान हासिल किया। आपातकाल के बाद के दौर में वह देश के मानवाधिकार आन्दोलन के प्रमुख नेताओं में एक बन गईं। सीपीडीआर (कमेटी फॅर प्रोटेक्शन ऑफ डेमोक्रटिक राइट्स) के संस्थापकों में से एक थीं वह। 1982 में वह मुम्बई से नागपुर आ गईं जहां उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय में पढ़ाते हुए ही उस इलाके के ट्रेड यूनियन और दलित आन्दोलनों में नेतृत्वकारी भूमिका अदा की। इस दौरान उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। बाद में पार्टी के आह्वान पर 1997 में वह बस्तर गईं जहां उन्होंने आदिवासियों के बीच काम किया। वहां से लौट आने के बाद उन्होंने फिर से महाराष्ट्र में क्रांतिकारी आन्दोलन के निर्माण की जिम्मेदारी ले ली। पिछले 15 सालों से अपनी आकस्मिक व असमय मृत्यु तक वह भूमिगत रहते हुए महाराष्ट्र में पार्टी निर्माण के काम के साथ-साथ पार्टी के महिला मोर्चे का नेतृत्व कर रही थीं।

शुरूआती जीवन

कॉमरेड अनुराधा का परिवार 1940 और 50 के दशकों में अविभाजित कम्युनिस्ट पार्टी से जुड़ा हुआ था। उनके पिता एक जाने-माने वकील थे, जो तेलंगाना संघर्ष के दिनों में गिरफ्तार लोगों की कानूनी सहायता करते थे। उनकी मां भी प्रगतिशील विचारों वाली महिला हैं और वह इस बूढ़ी उम्र में भी एक महिला ग्रुप से जुड़कर सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में काम कर रही हैं। उनके भाई मुम्बई के जाने-माने पटकथा लेखक और रंगमंच के कलाकार हैं। इस तरह कॉमरेड अनुराधा घर में खुले और उदार वातावरण में पली-बढ़ी थीं। सांताक्रुज़ की जे.बी. पेटिट स्कूल की वह मेधावी छात्रा थीं। इस स्कूल में उन्होंने शास्त्रीय नृत्य भी सीखा था। चूंकि उनके माता-पिता की कम्युनिस्ट पृष्ठभूमि रही, इसलिए उन्हें पढ़ने और सभी तरह के विचारों और दृष्टिकोणों को समझने का मौका व प्रोत्साहन मिला था।

ऐसे माहौल से आने के कारण कालेज के दिनों में जब वह क्रांतिकारी राजनीति के संपर्क में आ गईं तो तुरंत ही उससे आकर्षित हो गईं। वे दिन पूरी दुनिया में कम्युनिस्ट आन्दोलन के उभार के दिन थे। चीन में सम्पन्न सांस्कृतिक क्रांति और अमेरिकी साम्राज्यवादियों के खिलाफ वियत्नामी जनता के प्रतिरोधी युद्ध में हो रही प्रगति का दुनिया भर के नौजवानों पर जबर्दस्त प्रभाव रहा। इस अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में भारत में नक्सलबाड़ी विद्रोह फूट पड़ा जिसने न सिर्फ भारत में, बल्कि पूरे दक्षिण एशिया में एक पूरी पीढ़ी को ही झकझोर दिया। युवा अनुराधा पर इस सबका जोरदार असर था। जैसे कि पहले ही बताया गया, वह 'प्रोयोम' नामक एक जुझारू छात्र संगठन में शरीक हो गईं। और महाराष्ट्र में सीपीआइ (एम-एल) के संस्थापकों में वह भी एक थीं। 1977 में उन्होंने अपने एक साथी कार्यकर्ता से शादी की। मुम्बई में क्रांतिकारी आन्दोलन की शुरूआत करने और 1980 के दशक में विदर्भ क्षेत्र में उसका विस्तार करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। इतना ही नहीं, अंग्रेजी और मराठी में लिखित उनकी रचनाओं का प्रदेश की प्रगतिशील ताकतों के एक बड़े तबके पर खासा प्रभाव पड़ा था। खास बात यह है कि महाराष्ट्र में दलित सवाल को क्रांतिकारी एजेंडे पर लाने में मुख्य रूप से उन्हीं का योगदान रहा।

क्रांतिकारी जन नेत्री की विकास यात्रा

1970 के दशक के आखिर में अनुराधा देशव्यापी मानवाधिकार आन्दोलन की अगुवा रहीं। 1980 की शुरूआत में, भाकपा (मा-ले) (पीपुल्सवार) की स्थापना के बाद, और महाराष्ट्र के गड़चिरोली जिले में क्रांतिकारी आन्दोलन के विस्तार के बाद यह बात उठी थी कि क्रांतिकारी गतिविधियों का विस्तार मुम्बई से विदर्भ में करना चाहिए। ऐसे समय मुम्बई कालेज में नौकरी और

अपने प्रतिष्ठित सार्वजनिक जीवन को छोड़कर नागपुर जाने के लिए वह बेझिझक तैयार हो गईं। नागपुर उनके लिए पूरी तरह नई जगह थी। एक अच्छी व्याख्याता (लेक्चरर) के रूप में बनी पहचान के कारण जल्द ही नागपुर विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर के छात्रों को समाजशास्त्र पढ़ाने की नौकरी मिल गई। विदर्भ में उनके काम का फोकस मुख्य रूप से ट्रेड यूनियन और दलितों में रहा।

सबसे पहले उन्होंने निर्माण (बांधकाम) क्षेत्र के मजदूरों में काम किया और कई जुझारू संघर्षों का नेतृत्व किया। नागपुर से 30 किलोमीटर दूर खापरखेड़ा में बन रहे थर्मल पॉवर प्लांट में चली 5,000 मजदूरों की लम्बी हड़ताल उनमें उल्लेखनीय है। पुलिस फायरिंग और इस इलाके में लागू किए गए करफ्यू के साथ इसका अन्त हुआ था। नागपुर में 'मोल्कारिनों' (घरेलू नौकरानियों) को, हिंगणा (नागपुर) के एमआइडीसी स्थित कम्पनियों के मजदूरों को, कई अन्य असंगठित क्षेत्रों के मजदूरों को संगठित करने में अनुराधा का योगदान रहा। बाद में वह चंद्रपुर चली गईं जहां उन्होंने कोयला खदान मजदूरों तथा बांधकाम के मजदूरों को संगठित करने में मदद की। इनमें से ज्यादातर असंगठित क्षेत्र के मजदूरों को कोई बुनियादी ट्रेड युनियन अधिकार नहीं था। सभी परम्परागत ट्रेड युनियनों ने इन्हें नजरअंदाज ही किया। न सिर्फ नागपुर में, बल्कि चंद्रपुर, अमरावती, जबलपुर, यवतमाल आदि जगहों में मौजूद अन्य प्रगतिशील ट्रेड युनियनों के नेताओं से सम्बन्ध बनाकर उन्होंने संयुक्त मोर्चा बनाने की कोशिशें भी कीं। इन संघर्षों के दौरान उन्हें कई बार गिरफ्तार किया गया और नागपुर जेल में उन्होंने कुछ दिन बिताए। नौकरी करते हुए ही वह इस क्षेत्र में जानी-मानी क्रांतिकारी ट्रेड युनियन नेता के रूप में स्थापित हो गईं।

इसके साथ-साथ वह दलित समुदाय के बीच ज्यादा सक्रिय रहीं, जहां उन्होंने जातीय उत्पीड़न के खिलाफ लड़ने तथा इस उत्पीड़नकारी व्यवस्था से मुक्ति पाने के लिए उन्हें संगठित व जागरूक किया। वह दरअसल ऐसे अगुवा क्रांतिकारी मार्क्सवादियों में से एक रहीं जिन्होंने बहुत पहले ही दलित उत्पीड़न और जातीय भेदभाव के प्रश्न को उठाया। उन्होंने जाति के सवाल पर अंबेडकर और अन्य समाजिक रचनाओं का गहरा अध्ययन किया। परम्परागत मार्क्सवादियों के विपरीत, वह दलितों के साथ पूरी तरह एकताबद्ध हुईं और नागपुर में अपना मकान इंदोरा बस्ती में बदला जो महाराष्ट्र की सबसे बड़ी दलित बस्तियों में से एक है। हालांकि यह बस्ती दलित नेताओं का गढ़ और दलित राजनीति का केन्द्र रही। इस बस्ती के युवाओं का एक बड़ा तबका नक्सलवादियों के प्रति आकर्षित होना शुरू हुआ। खासकर सांस्कृतिक दलों का खासा प्रभाव रहा जिन्हें संगठित करने में कॉमरेड अनुराधा का बड़ा योगदान रहा। वह दलित आन्दोलन में माओवादियों के खुले चेहरे के रूप में उभरकर आईं। विदर्भ में हुई ज्यादातर दलित सभाओं में वह मुख्य वक्ता हुआ करती थीं। हालांकि उन्हें दलित नेताओं का पुरजोर विरोध का सामना करना पड़ता था, फिर भी अंबेडकर, दलितों के मुद्दों और जातीय उत्पीड़न पर गहरी समझ रखने के कारण वह डटकर खड़ी हो सकीं। खासकर युवा वर्ग का व्यापक समर्थन उन्हें मिलता था। इस सवाल पर उन्होंने इंग्लिश और मराठी में काफी लेख लिखे। अपनी रचनाओं में दलित सवाल को वर्गीय दृष्टिकोण से पेश करते हुए अनगिनत उत्तर-आधुनिकतावादी (पोस्ट-मॉडर्निस्ट) रुझानों का और दलित व जाति सवालों पर गलत मार्क्सवादी मतों का जोरदार खण्डन किया। सबसे बड़ा 25 पृष्ठों वाला मराठी लेख था जिसे 'सत्यशोधक मार्क्सवाद' (धुले से प्रकाशित शरद पाटिल की पत्रिका) में छापा गया था। इस लेख में दलित सवाल पर मार्क्सवादी नीति स्पष्ट करने के साथ-साथ दलित मुक्ति को देश की नव जनवादी क्रांति के साथ जोड़कर पेश किया गया था। आज भी यह लेख अक्सर उद्धृत किया जाता है। इन दो मोर्चों के काम के अलावा उन्होंने नागपुर में हुए कई महत्वपूर्ण आयोजनों में अहम भूमिका निभाई थी, जैसे कि 1984 का कमलापुर अधिवेशन।

इन तमाम गतिविधियों के बावजूद वह छात्रों में काफी लोकप्रिय अध्यापिका रहीं क्योंकि वह छात्रों के प्रति उच्च स्तर की जिम्मेदारी की भावना रखती थीं। छात्र उन्हें बेहद चाहते थे और उनके सह-अध्यापक उनका सम्मान करते थे।

विदर्भ में बिताए डेढ़ दशकों में इस क्षेत्र में क्रांतिकारी राजनीति को फैलाने में उन्होंने खासा असर डाला। उन्होंने अन्य कॉमरेडों के साथ मिलकर न सिर्फ एक क्रांतिकारी मजदूर आन्दोलन और दलितों के बीच एक शक्तिशाली क्रांतिकारी अन्दोलन खड़ा किया, बल्कि क्रांतिकारी छात्र आन्दोलन खड़ा करने और बुद्धिजीवियों के व्यापक तबकों को आकर्षित करने में भी योगदान दिया। इस इलाके के कई वरिष्ठ प्रोफेसर, पत्रकार, जाने-माने पटकथा लेखक और अग्रणी वकील उनमें शामिल हैं। उनके नागपुर आने के तुरंत बाद तेलुगु के प्रसिद्ध क्रांतिकारी कवि कॉमरेड चेरबंडराजू की शहादत हुई थी। कॉमरेड अनुराधा ने चेरा की कविताओं का मराठी में अनुवाद करवाया और इस इलाके के एक नामी मराठी कवि के द्वारा उस कविता संकलन का विमोचन भी करवाया। नागपुर और चंद्रपुर में महिला संगठनों के निर्माण में भी उन्होंने योगदान दिया।

बस्तर की पुकार

दण्डकारण्य आन्दोलन के संदेश को विदर्भ के दूसरे इलाकों में पहुंचाने वाली कॉमरेड अनुराधा, पार्टी का आह्वान पाकर तुरन्त ही अपने काम का केन्द्र बस्तर बनाने को तैयार हो गईं। 1997 से 2000 तक उन्होंने सशस्त्र दस्तों के साथ रहकर बस्तर के आदिवासियों के बीच काम किया। दण्डकारण्य के पार्टी नेताओं के लिए वह गोण्ड आदिवासियों पर की गई कई शोध रिपोर्टें व किताबें अपने साथ ले गईं। वह हमेशा कहती रहीं कि ये तीन साल उनकी जिंदगी के सबसे महत्वपूर्ण साल थे क्योंकि उन्होंने बस्तर के गोण्ड आदिवासियों के जीवन और संघर्ष के बारे में इसी दौरान प्रत्यक्ष समझा। उन्होंने उनकी जिंदगियों के बारे में गहराई से अध्ययन किया और यह भी देखा कि आन्दोलन का विकास कैसे हो पाया। उन्होंने खास तौर पर अपना फोकस महिलाओं की जिंदगियों, उनके संगठन केएएमएस (क्रांतिकाारी आदिवासी महिला संगठन) और दस्तों में कार्यरत महिलाओं पर रखा। उन्होंने

हथियार पकड़ना भी सीखा और एक वाकिए में तो वह बाल-बाल बची थीं, जब पुलिस उनके डेरे के नजदीक तक पैदल पहुंच चुकी थी। उसकी गोलियों से वह बच गईं और दस्ते की जवाबी फायरिंग से सभी बिना किसी नुकसान के बच निकल आए।

उन्होंने अपना ज्यादातर समय भैरमगढ़ इलाके में बिताया, जो आज-कल सलवा जुडूम का सबसे ज्यादा शिकार होने के कारण खबरों में है। हालांकि बस्तर में रहते समय वह कई बार मलेरिया की शिकार हुई थीं, लेकिन इस तरह खतरनाक फैल्सिपेरम से वह कभी संक्रमित नहीं हुई थीं। साथ ही, स्थानीय पार्टी ने भी उनका बेहतर ख्याल रखा था। वह जिस दृढ़ता से दस्तों के साथ घूमती थीं, उसे देखकर स्थानीय आदिवासी जनता भी काफी प्रभावित हुई थी। वो अक्सर बोलते थे कि वह कैसे इस उम्र में दस्तों के साथ घूम रही हैं।

इस दौरान उन्होंने कक्षाएं लेने में खासा योगदान दिया। खासकर आदिवासी महिलाओं में से विकसित हो रहे नेतृत्व पर उनका फोकस रहा। कई पर्चों के प्रारूप बनाए और स्थानीय पत्रिकाओं के लिए कई लेख भी लिखे। बस्तर में अपने आखिरी दिनों में उन्होंने नेशनल पार्क एरिया की स्वतंत्र जिम्मेदारी लेकर काम किया जो अब पश्चिम बस्तर डिवीजन में आता है। 1997 के दूभर अकाल के दिनों में वह वहीं थीं जबकि उन कठोर हालात में उनकी खुद की तबियत भी खराब हुई थी। लेकिन क्रांति व जनता के हितों के प्रति प्रतिबद्धता और दृढ़ इच्छाशक्ति से उन्होंने ऐसी मुश्किलों का आसानी से पार पाया। वैसे उनका स्वभाव भी यह था कि अपनी तकलीफों की वह कभी चिंता नहीं करती थीं, न ही उन पर ज्यादा बोलती थीं।

बस्तर से लौटने के बाद उन्होंने मुम्बई और सूरत में पार्टी की जिम्मेदारियां उठा लीं। इस इलाके में क्रांतिकारी आन्दोलन का निर्माण करने में उनका बड़ा योगदान रहा। पार्टी की एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस में केन्द्रीय कमेटी सदस्या चुने जाने के बाद उन्हें केन्द्रीय महिला सब-कमेटी की अगुवाई की अतिरिक्त जिम्मेदारी भी दे दी गई।

लेखन के मोर्चे पर कॉमरेड अनुराधा

अपने लम्बे क्रांतिकारी जीवन में एक जन नेत्री से लेकर एक भूमिगत पार्टी संगठक तक कॉमरेड अनुराधा ने कई भूमिकाएं निभाईं। मुख्य रूप से महाराष्ट्र में वह वीपीएस, सीपीडीआर, एआइएलआरसी, स्त्री चेतना, एएमकेयू (अखिल महाराष्ट्र कामगार यूनियन) आदि कई जन संगठनों की स्थापना से जुड़ी रहीं। उनकी भूमिका चाहे जो भी रहे, उनका सृजनशील रचनाकर्म तो लगातार चलता ही रहता था। 'कलम' नामक क्रांतिकारी छात्र पत्रिका के साथ वह नजदीक से जुड़ी थीं। उसकी देशव्यापी छवि बन गई थी। इस पत्रिका को इंग्लिश और मराठी दोनों भाषाओं में लाया जाता था। नागपुर से छपने वाली क्रांतिकारी हिन्दी पत्रिका 'जन संग्राम' के पीछे सबसे ज्यादा योगदान उन्हीं का था। क्रांतिकारी पत्रिका 'पीपुल्स मार्च' के लिए वह विभिन्न छद्म नामों से लगातार लेख लिखती थीं। स्थानीय मराठी पत्रिका 'जाहिरनामा' के लिए उन्होंने न सिर्फ लगातार योगदान दिया, बल्कि कुछ समय तक वह उसके प्रकाशन की इंचार्ज भी रहीं। खासकर दलित और महिला सवाल पर उन्होंने कई सैद्धांतिक व विचारधारात्मक लेख लिखे। इसके अलावा उन्होंने इस सवाल पर दलित/उत्तर-आधुनिकतावादी दृष्टिकोण रखने वालों और उन मार्क्सवादियों, जो इस पर विरोधी मत रखते थे, के खिलाफ उन्होंने सैद्धांतिक प्रतिवाद भी चलाया। हाल ही में उन्होंने बुर्जुवाई नारीवाद पर, उसकी विभिन्न अभिव्यक्तियों को उजागर करते हुए एक राजनीतिक व विश्लेषणात्मक लेख लिखा। और हाल ही में भाकपा (माओवादी) द्वारा स्वीकृत महिला दृष्टिकोण की तैयारी में भी उनका बड़ा योगदान रहा। इंग्लिश, हिन्दी और मराठी की कई पत्रिकाओं में उनका नियमित योगदान रहता था। उनकी कई रचनाओं का अन्य भाषाओं में अनुवाद भी हुआ है।

एक उम्दा कम्युनिस्ट

अपने और अपने साथियों के प्रति उनकी अत्युन्नत स्तर की ईमानदारी ने कॉमरेड अनुराधा को सबकी चहेती बनाया। यहां तक कि उनके विचारों से असहमति रखने वाले भी इससे कायल होते थे। वह हर माहौल के अनुरूप खुद को ढाल लेती थीं। आदिवासियों, बांधकाम के मजदूरों, उच्च पढ़े-लिखों और बुद्धिजीवियों - सभी से वह आसानी से घुलमिल जाया करती थीं। उनके सीधे-सादेपन ने उन्हें सभी के लिए आदर्श बनाया। जितनी आसानी से वह हंस देती थीं उतनी ही आसानी से रो भी पड़ती थीं, जब किसी स्थिति में वह आहत होती थीं। उनका चेहरा उनकी भावनाओं को आइने की तरह अभिव्यक्त करता था। कभी-कभी चिढ़ जाने पर भी वह दूसरों के साथ कोई मनमुटाव नहीं पालती थीं।

अपनी सुविधाओं और यहां तक कि अपने स्वास्थ्य की उन्हें जरा भी परवाह नहीं होती थी। वह मेहनती कॉमरेड होने के साथ-साथ एक मजबूत व अनुशासनप्रिय कॉमरेड थीं। अगर उन्हें कोई काम सौम्पा जाता तो बाकी लोग आश्वस्त रह सकते थे कि वह बिलकुल पूरा हो जाएगा। जनता के प्रति तथा दिए गए कार्यभार के प्रति, चाहे वह कितना भी कठिन क्यों न हो, उनमें जिम्मेदारी की मजबूत भावना रहती थी। इसे उनके अध्यापन काम में, राजनीतिक काम में, अपने छात्रों, सह-अध्यापकों और कॉमरेडों के साथ उनके बरताव में देखा जा सकता था। वह उन मूल्यों पर दृढ़ता से खड़ी होती थीं जिन पर वह विश्वास करती थीं। वह ऐसी शख़्स थीं जो दूसरे लोगों के विचारों, चाहे वे कितने वरिष्ठ भी क्यों न हों, के मुताबिक या कुछ छोटे-मोटे हितों के एवज में अपने विश्वासों के साथ समझौता नहीं करती थीं। इसलिए लोग उन पर पूरी तरह विश्वास रख सकते थे। फिर भी, एक उत्साही छात्रा की तरह वह विनम्र हुआ करती थीं।

उनके विचार-चिन्तन हमेशा रचनात्मक होते थे, न कि घिसे-पिटे। पार्टी लाइन और मार्क्सवादी विचारधारा पर वह हमेशा अटल व अडिग रहीं। और जिन विचारों को वह गलत समझती थीं, उन्हें प्रस्तुत करने वाले चाहे काई भी हो, उनके साथ उन्होंने कभी समझौता नहीं किया। अपनी इसी दृढ़ निश्चयता के कारण

वह आखिर तक सच्ची कम्युनिस्ट पार्टियों/ग्रुपों से जुड़ी रहीं, भले ही इन साढ़े तीन दशकों के दौरान उन्हें कई उतार-चढ़ाव देखने पड़े हों। खासकर महाराष्ट्र में, सभी उतार-चढ़ावों के बावजूद भी, उन्होंने पार्टी के लिए एक मजबूत व निर्भीक नेता के रूप में काम किया। अपने राजनीतिक जीवन में उन्होंने कई बार कठिन परिस्थितियों में जोखिम भरी और चुनौतीपूर्ण जिम्मेदारियां उठा लीं। इसे हम कई संदर्भों में देख सकते हैं। मुम्बई में सार्वजनिक जीवन में उन्हें हासिल उच्च प्रतिष्ठा को छोड़कर वह रातोंरात नागपुर जाने को तैयार हो गईं जहां उन्हें कोई नहीं जानता था। नागपुर विश्वविद्यालय की नौकरी और नागपुर में बनी लोकप्रिय नेता की छवि (खासकर उस क्षेत्र के दलितों, बांधकाम के मजदूरों और प्रगतिशील बुद्धिजीवियों में) को त्यागकर वह भूमिगत बन बस्तर में गुरिल्ला दस्तों में काम करने चली आई थीं। अपने आखिरी दिनों में भी, जबकि महाराष्ट्र में पार्टी नेतृत्व का एक बड़ा हिस्सा गिरफ्तार किया जा चुका था और दुश्मन हाथ धोकर उनके पीछे पड़ चुका था, ऐसी विकट परिस्थिति में भी उन्होंने पार्टी को एकजुट रखने में खासा योगदान दिया।

गौरतलब है कि हमारे देश में छाए पितृसत्तात्मक और सामन्तवादी माहौल में एक महिला कार्यकर्ता के रूप में काम करते हुए उनकी शख़्सीयत में ये सारे गुण शुमार हुए थे। ये सब एक सच्ची और ईमानदार कम्युनिस्ट के गुण थे। देश के क्रांतिकारी और जनवादी आन्दोलन के लिए, खासकर महिला आन्दोलन के लिए उनकी शहादत से बहुत बड़ा नुकसान हुआ है।

(शेष पृष्ठ 20 में...)

बारूदी सुरंगरोधी वाहन के परखचे उड़े 24 पुलिस वालों का सफाया

बलिमेला में 38 ग्रेहाउण्ड्स की कुत्ते की मौत से लगे सदमे से आंध्र और ओडिशा की सरकारें उबर ही नहीं पाई थीं कि 16 जुलाई को एओबी स्पेशल जोन के मलकनगिरि डिवीजन में तेल्लाराइ के पास पीएलजीए ने एक और शानदार हमला किया। मोटू से कलिमेला जाने वाली सड़क पर बारूदी सुरंग लगाकर बारूदी सुरंगरोधी वाहन के परखचे उड़ा दिए। विस्फोट इतना जबर्दस्त था कि भारी भरकम गाड़ी हवा में 30 से 40 फुट ऊपर तक उछलकर औंधे मुंह गिर पड़ी और उसके दो टुकड़े हो गए। इसमें सफर कर रहे पुलिस के 24 जवान भी उसके साथ ही उड़ गए। मरने वालों में एक दर्जन आधुनिक पुलिस बल - स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) के जवान भी थे। खबर है कि पीएलजीए ने मृत पुलिस वालों से पांच एके-47 रायफलें जब्त कर लीं। आंध्र प्रदेश के मेदक जिले में बनने वाली यह माईन प्रूफ गाड़ी हमारे अंदरूनी इलाकों में गश्त के लिए पुलिस वालों के लिए सुरक्षित मानी जाती थी। लेकिन कई बार इस पर सफल हमले कर पीएलजीए ने इसे झूठा साबित किया। एक और गौरतलब बात यह रही कि जिस समय यह हमला हुआ था ठीक उसी समय दिल्ली में केन्द्र सरकार की अगुवाई में नक्सल अन्दोलन के उन्मूलन को लेकर एक महत्वपूर्ण बैठक चल रही थी। बलिमेला ऐम्बुश से मिली चुनौती से चिंतित अधिकारी और मंत्री नई साजिशें रचने को बाध्य हुए थे। ★

पीबीसीपी (मा-ले) लाल पताका के माहसचिव कामरेड मीजनूर रहमान टुटुल अमर रहें!

कामरेड मीजनूर रहमान टुटुल, पूर्व बंगला कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी-लेनिनवादी) लाल पताका के महासचिव थे। कामरेड टुटुल को बंगलादेश के क्रूर हत्यारे बल रेपिड एक्शन बटालियन (आरएबी) ने 25 जुलाई 2008 को पकड़ा और 27 जुलाई को एक झूठी मुठभेड़ में मार डाला, जिसे बंगलादेश की सैनिक सरकार ने 'गोलीबारी में मारा गया' प्रचारित किया। कामरेड मीजनूर रहमान टुटुल की शहादत न केवल बंगलादेश की क्रांति के लिए बल्कि पूरे दक्षिण एशिया के माओवादी आंदोलन के लिए एक गंभीर नुकसान है।

कामरेड टुटुल जब राजशाही मेडिकल कालेज में डाक्टर की पढ़ाई कर रहे थे तभी वे माओवादी राजनीति के संपर्क में आ गए थे। कामरेड टुटुल बंगलादेश के माओवादी आंदोलन के अग्रणी योद्धा होने के साथ-साथ सीकम्पोसा (दक्षिण एशिया के माओवादी पार्टियों और संगठनों की समन्वय कमेटी) के संस्थापकों में से भी एक थे। बंगलादेश के माओवादी आंदोलन के इतिहास में उन्होंने महान भूमिका निभाई और सही माओवादी ताकतों के साथ सदा एकता के लिए प्रयास करते रहे। कामरेड टुटुल की शहादत से पूर्व बंगला कम्युनिस्ट पार्टी (मा-ले) लाल पताका ने अपने एक योग्य नेता को खो दिया है। 'प्रभात' बंगलादेश के क्रूर फासीवादी सैनिक शासन द्वारा की गई उनकी हत्या का पुरजोर विरोध करती है। और उसकी कड़ी निंदा करती है।

'प्रभात' पीबीसीपी (मा-ले) लाल पताका के तमाम शोकसंतप्त कामरेडों और क्रांतिकारी जनता के शोक में शरीक है और उन्हें हार्दिक क्रांतिकारी संवेदनाएं भेजती है। 'प्रभात' आशा करती है कि बंगलादेश का माओवादी आंदोलन अपने शोक को आक्रोश में बदलते हुए कामरेड टुटुल की शहादत के मकसद को पूरा करने के लिए आगे बढ़ेगा और शहादत से पहुंचे झटके से उबरकर क्रांतिकारी संघर्ष को मजबूती से आगे बढ़ाएगा। ★

उत्तर तेलंगाना से दण्डकारण्य तक लड़ाई का परचम लहराते आए कम्पनी-1 के बहादुर कमाण्डर कॉमरेड तिरुपति (रायलिंगू) को जन-जन का क्रांतिकारी जोहार!

26 जून 2008 को माड़ डिवीजन के ओरछा के निकट ग्राम बट्टुम के पास पीएलजीए की कम्पनी-1 ने कुछ माध्यमिक बलों के साथ मिलकर एक ऐम्बुश किया। पैदल आ रही पुलिस पार्टी के अगुवा दल को ही निशाना बनाकर इस ऐम्बुश को अंजाम देना था। इस शौर्यपूर्ण कार्रवाई में कॉमरेड तिरुपति ऐम्बुश पार्टी के उप कमाण्डर के रूप में नेतृत्व कर रहे थे। शुरूआती फायरिंग में ही दुश्मन के कुछ जवान हताहत हुए थे और बाकी लोग प्रतिरोध करने लगे थे। दुश्मन के प्रतिरोध को दबाते हुए हताहत पुलिस वालों के हथियार छीन लेने के लिए तिरुपति अपनी टुकड़ी को लेकर आगे बढ़े थे। दुश्मन से कुल तीन इंसास रायफलें छीन भी ली थीं। लेकिन पीछे से फायर कर रहे एक दुश्मन को वो देख नहीं सके। जब वहां से पीछे मुड़ ही रहे थे तो एक गोली उनके सिर में लग गई। इससे वह तुरंत ही बेहोश होकर गिर पड़े। साथी कॉमरेडों ने उन्हें देखा और तुरन्त उठा लाया। बाद में ऐम्बुश को समाप्त कर पीएलजीए ने वापस कूच किया। प्राथमिक उपचार के बाद वह होश में आ गए। और पीएलजीए के गुरिल्ला डॉक्टरों ने उन्हें बचाने की तमाम कोशिशें कीं। लेकिन उनसे बात नहीं बन सकी। सिर में नाजुक नसें फटने के कारण उनकी हालत लगातार बिगड़ने लगी थी। उन्हें ऑपरेशन की जरूरत थी। इसके लिए कुछ कोशिशें हो पातीं इसके पहले ही, 1 जुलाई के दिन 11.30 बजे उन्होंने आखिरी सांस ली। वहां मौजूद पार्टी नेताओं, पीएलजीए योद्धाओं, जनताना सरकार के प्रतिनिधियों और सैकड़ों क्रांतिकारी जनता ने पूरे सम्मान के साथ उन्हें अंतिम विदाई दी।

कॉमरेड तिरुपति का जन्म उत्तर तेलंगाना के करीमनगर जिला, पेद्दापल्ली मण्डल के गांव रंगापुर में 1978 में हुआ था। वह एक गरीब दलित परिवार से आया था। मां सुगुणा और पिता राजैया ने उनका नाम पुलिपाका रायलिंगू रखा था। गरीबी के चलते वह 7वीं तक ही पढ़ाई पूरी कर पाए थे। 1993 में पार्टी से उनका परिचय हुआ था जब वह महज 16 साल के थे। परिचय के बाद वह क्रांतिकारी राजनीति से प्रभावित हुए और रैडिकल युवा संगठन का सदस्य बन गए। 1994 में वह अपने गांव के संगठन सचिव चुन लिए गए थे। 1995 में उन्हें एरिया आरवाइएल में ले लिया गया और पार्टी के उम्मीदवार सदस्य बनाए गए। मार्च 1996 में वह पूर्णकालीन कार्यकर्ता बन गए। रंगापुर, राघवापुर, एरापल्ली, देवुनिपल्ली और रानापुर गांवों में पीआर के रूप में जन संगठन का काम सम्भाला। जनवरी 1997 में बसंतनगर स्थित केशोरम सिमेन्ट फैक्टरी के मजदूरों को संगठित करने का काम भी किया। साथ ही साथ, विप्लवी कार्मिक संघ के एरिया कमेटी सचिव की जिम्मेदारी भी उन्हें दी गई थी। इस मोर्चे में उन्होंने अगस्त 1998 तक काम किया। उनके नेतृत्व में मजदूरों ने लेबर ठेकेदार के खिलाफ एक हड़ताल कर अपनी मांगें हासिल कीं। इसका मजदूरों पर खासा प्रभाव पड़ा। अपने काम के जरिए कॉमरेड तिरुपति ने मजदूरों के बीच व्यापक सम्पर्क बनाए थे।

उसके बाद, अगस्त 1998 में करीमनगर जिला कमेटी ने जगित्याल दस्ते में सदस्य के रूप में उनका तबादला किया क्योंकि वह दुश्मन के निशाने पर आ चुके थे। तबसे लेकर शहादत तक उनका पूरा जीवन फौजी मोर्चे से जी जुड़ा रहा। 3 माह तक दस्ते में सदस्य के रूप में काम करने के बाद उन्हें पश्चिम करीमनगर में नव गठित एसजीएस में कमेटी सदस्य के रूप में भेजा गया। बाद में कॉमरेड तिरुपति को जिला स्पेशल एक्शन टीम के कमाण्डर नियुक्त किया गया था। एक साल तक काम करने के बाद फिर एसजीएस में उप कमाण्डर बनाए गए थे। 2001 में उत्तर तेलंगाना की पश्चिम कमान के तहत बनाई गई स्पेशल एक्शन टीम का उन्हें कमाण्डर बनाया गया था। 2001 से मार्च 2003 तक तिरुपति ने एक्शन टीम कमाण्डर के रूप में जबर्दस्त योगदान दिया। उस दौरान तेलुगुदेशम और भाजपा के जिला व मण्डल स्तर के कई प्रतिक्रियावादी नेताओं को मौत के घाट उतारने में कॉमरेड तिरुपति की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उनकी टीम ने तीन पुलिस वालों का भी सफाया किया था। प्रति-क्रांतिकारी काले गिरोह के जिला स्तर के सरगना नरसिंहरेड्डी को उनकी टीम ने नेशनल हाइवे नं-7 में हैरतअंगेज अंदाज में मोटारसायकलों से दौड़ा-दौड़ाकर मार गिराया था। 2003 में उन्हें जिला कमेटी में लिया गया और पश्चिम सब-जोनल कमान का सदस्य बनाया गया।

फरवरी 2004 में उन्होंने ऐतिहासिक कोरापुट हमले में भाग लिया। उस हमले से लौटने के बाद उनकी उत्तर तेलंगाना से दण्डकारण्य बदली कर दी गई। उस समय वहां दुश्मन का हमला बढ़ जाने के कारण पार्टी ने कुछ नेतृत्वकारी कॉमरेडों को वहां से दण्डकारण्य भेजने का निर्णय लिया। दण्डकारण्य में 28 जुलाई 2004 को गठित सबसे पहली कम्पनी में कॉमरेड तिरुपति को उप कमाण्डर के रूप में नियुक्त किया गया।

उसके बाद उनका फौजी जीवन पूरा दण्डकारण्य में जनयुद्ध के विकासक्रम से जुड़ा हुआ था। 2007 में उन्हें कम्पनी-1 का कमाण्डर बनाया गया। कम्पनी-1 द्वारा किए गए कई शौर्यपूर्ण हमलों का उन्होंने कमाण्डर व उप कमाण्डर के रूप में नेतृत्व किया। खासकर झाराघाट, कुदुरघाट, कुरसनार-1, कुरसनार-2, आवलवरसा, गोट आदि ऐम्बुशों में; कोरापुट और डौला रेइडों में उनकी भागीदारी रही। इन हमलों में दर्जनों पुलिस बलों का सफाया करने और उसके कई आधुनिक हथियार छीनने में सफलता मिली थी।

कॉमरेड तिरुपति एक अच्छे ड्राइवर भी थे। कई हमलों में उन्होंने ड्राइवर के रूप में भी भाग लिया। 2004 की ऐतिहासिक कोरापुट रेइड में वह पीएलजीए के काफिले के एक वाहन के ड्राइवर रहे। उसके पहले 1996 में पोतकापल्ली रेइड में उन्होंने ड्राइवर की भूमिका निभाई थी। कुछ और रेइडों और अन्य कार्रवाइयों में भी उन्होंने ड्राइवर के रूप में काम किया।

वह एक अच्छे गुरिल्ला डॉक्टर भी थे। हमले, कैम्प जैसे कई मौकों पर उन्होंने एक डॉक्टर के रूप में खासा योगदान दिया। उत्तर तेलंगाना और दण्डकारण्य दोनों ही जोनों में उन्होंने ऐसी सेवाएं दीं। कम्पनी या पलटन के साथ वह जहां भी जाते वहां की जनता का इलाज करते थे।

सलवा जुडूम के खिलाफ...

2005 में जब फासीवादी सलवा जुडूम शुरू हुआ, तब एसजेडसी ने उन्हें एक पलटन के साथ बीजापुर जिले में भेज दिया ताकि उसका मुकाबला किया जके। उन्होंने नेशनल पार्क और गंगलूर इलाकों में जनता का ढांढ़स बंधाया। कई हमलों की योजनाएं बनाकर नेतृत्व किया। हत्या और यातनाओं के केन्द्र के रूप में बदनाम हुए कुटरू थाने पर किए गए हमले में वह शामिल थे। इंद्रावती इलाके में तो उन्होंने काफी समय बिताया। वहां की संघर्षशील जनता के दुख-सुख को बांट लिया। लगातार दो साल टीसीओसी के दौरान उन्होंने वहीं पर फौजी कार्रवाइयों का संचालन किया। जब भैरमगढ़ को सलवा जुडूम के गुण्डों और सरगनाओं का एक केन्द्र बनाकर गांवों पर हमले किए जा रहे थे, तब कॉमरेड तिरुपति ने भैरमगढ़ कस्बे में ही रात के समय एक ऐम्बुश कर उन्हें सही सबक सिखा दिया। कई एसपीओ के सफाए और गुण्डों के घरों पर जनता को लेकर किए आर्थिक हमलों का उन्होंने नेतृत्व किया। इससे दुश्मन अपने ही अड्डों की सुरक्षा में लगे रहने पर मजबूर हुआ था जिससे जनता को हमलों से राहत मिल पाई थी। इसके अलावा इंद्रावती इलाके की जनता को युद्ध के कौशल सिखाने, दुश्मन का मुकाबला करने के लिए कई बूबी ट्रैप तैयार करवाने में उनकी पहलकदमी रही।

अपनी शहादत से थोड़े पहले तक उन्होंने इंद्रावती इलाके में ही टीसीओसी का सफल संचालन किया था। मई 2008 में डीजीपी विश्वरंजन के प्रत्यक्ष निर्देशन में कुल 600 की संख्या में पुलिस, सीआरपीएफ, एसपीओ और एसटीएफ के संयुक्त बल ने एक बड़ा अभियान छेड़ा था। इसके पीछे जनता के घरों और अन्य संपत्तियों को तबाह कर जो भी मिलेगा उसकी हत्या करने की साजिश थी। लेकिन कॉमरेड तिरुपति के नेतृत्व में पीएलजीए बलों ने इस बड़ी साजिश को नाकाम कर दिया। ओरछा से निकले 200 पुलिस बलों पर तालमेल के साथ दो जगहों पर ऐम्बुश कर एक सहायक कमाण्डेंट समेत कुल तीन पुलिस वालों को घायल किए। इसके अलावा जनता और जन मिलिशिया द्वारा तैयार किए गए बूबी ट्रैपों में फंसकर करीब एक दर्जन पुलिस वाले जख्मी हुए। इन जवाबी हमलों से सैकड़ों फोर्स को अपने घायल जवानों को उठा ले जाना ही बड़ा काम हो गया। इस प्रकार कामरेड तिरुपति पिछले दो-ढाई सालों से इंद्रावती इलाके के प्रतिरोधी संघर्ष की धुरी बने थे। जब कॉमरेड तिरुपति की शहादत की खबर फैल गई, तो इंद्रावती जनता ने उसे अपने घर के एक सदस्य की मौत के रूप में लेकर आंसू बहाए।

कॉमरेड तिरुपति के आदर्शपूर्ण व जुझारू आचरण हम सभी के लिए अनुकरणीय है। वह अपने विचारों को स्पष्ट रूप से प्रकट करने वाले शख़्स थे। घुमा-फिराकर बातें करना उन्हें नहीं आता था। उन्हें बड़े फॉर्मेशनों को चलाने का अनुभव नहीं था, लेकिन कम्पनी-1 में आने के बाद जिद करके सीख लिया। अपनी शहादत के कुछ माह पहले उन्होंने पार्टी के सामने अपने घर-परिवार वालों से मिलने का प्रस्ताव रखा था। लेकिन जब एसजेडसी ने फिलहाल एनटी में मौजूद हालात और आने-जाने के खतरों के बारे में समझाया तो वह अपने प्रस्ताव को वापस लिया।

कॉमरेड तिरुपति एक संवेदनशील कॉमरेड थे। शहादत के बाद उनके किट से मिली एक डायरी इसका जीवंत उदाहरण है। उस डायरी में उन्होंने क्रांतिकारी आन्दोलन में अपनी भूमिका के बारे में विवरण लिखते हुए अपनी तरफ से हुई भूल-चूकों का भी ईमानदारी से और आत्मालोचनात्मक दृष्टिकोण से जिक्र किया। 1999 में उत्तर तेलंगाना के जगित्याल कस्बे में एक खूंखार जमींदार मद्दुनूर नरसिंहरेड्डी का सफाया करने की योजना में उनसे चूक हुई थी। होटल में थोड़ी देर के लिए बिजली गुल होने से कोई दूसरा व्यक्ति आकर दुश्मन की जगह पर बैठ गया और पहचानने में हुई गड़बड़ी के कारण एक निर्दोष व्यक्ति हमारे हाथों मारा गया था। 2001 में रामरेड्डी कस्बे में एक पुलिस चौकी के सामने विस्फोटकों से भरे एक वैन को खुद कॉमरेड तिरुपति ने ही चलाकर रख आया था। लेकिन उसमें टाइम पीस को चालू नहीं करने के कारण वह बेकार हो गया। यह चूक उनसे हुई थी। 2005 में दण्डकारण्य के डौला पुलिस चौकी पर की गई रेइड के दौरान उन्होंने सही ढंग से पहलकदमी नहीं की थी। इस डायरी से इस नौजवान कम्पनी कमाण्डर के उच्च आदर्श, उत्पीड़ित जनता के प्रति गहरी प्रतिबद्धता और संवेदनशीलता की झलक मिल जाती है। कॉमरेड तिरुपति की मौत से निश्चय ही दण्डकारण्य के क्रांतिकारी आन्दोलन को बड़ा नुकसान हुआ है। फिर भी हम यह निश्चित रूप से कह सकते हैं कॉमरेड्स मोहन, मधु, बदरू और अब तिरुपति जैसे जांबाज कमाण्डरों ने जो संघर्षशील विरासत छोड़ गए हैं, उसे ऊंचा उठाने हजारों हजार युवक-युवतियां चल पड़ेंगे। 'प्रभात' कॉमरेड तिरुपति को तहेदिल से लाल सलाम पेश करती है और इस वीर शहीद की जीवन संगिनी, उनके माता-पिता, रिश्तेदारों, दोस्तों और कॉमरेडों के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करती है। ★

दक्षिण बस्तर डिवीजन के अमर शहीदों की जीवनीयां

(दक्षिण बस्तर डिवीजन में जनवरी 2006 से जारी सलवा जुडूम और सरकारी बलों के मिले-जुले हमलों के चलते कई कॉमरेड, जिनमें पार्टी, पीएलजीए, जन संगठनों और जनताना सरकारों के कॉमरेडों के साथ-साथ आम जनता भी शामिल है, शहीद हुए हैं। शहीदों की जीवनियां हम अपने पिछले अंकों में छापते रहे हैं। कुछ शहीद कॉमरेडों की जीवनियां हमें देर से प्राप्त होने के कारण हम इस अंक में दे रहे हैं। कुछ अनिवार्य कारणों से 'प्रभात' का प्रकाशन अनियमित होने से भी समस्या पैदा हुई है। आशा है, हम जल्द ही इससे पार पाने में समर्थ हो जाएंगे।

-सम्पादक मंडल)

लोकप्रिय कामरेड श्यामलक्का (लच्छक्का)

कामरेड श्यामलक्का का जन्म दक्षिण बस्तर डिवीजन के जिला दंतेवाड़ा, तहसील कोंटा, किष्टारम रेंज के ग्राम निम्मलगुड़ा के माड़वी परिवार में 34 वर्ष पहले हुआ था। घर में उन्हें लच्छी पुकारते थे। उनके दो भाई हैं। एक दीदी थी जिनका निधन हो चुका है।

1993 में उनके गांव की जनता ने मिलकर आंध्रप्रदेश के गांव सत्यनारायणपुर गांव के एक बड़े भूस्वामी के घर पर धावा बोला था। भूख से त्रस्त जनता ने उनके गोदामों से धान, चावल, बर्तन आदि सामान जब्त कर लिया था। इस हमले के बाद कामरेड श्यामलक्का के पिता जी समेत आठ लोगों की गिरफ्तारियां हुई जिनको बाद में जमानत पर रिहा करवाना पड़ा। रिहाई तो कैसे न कैसे हो गई लेकिन निम्मलगुड़ा पर पुलिस की ज्यादितयां बढ़ गईं। एक बार पुलिस जब गांव पर हमला करने आई तो उनके पिता जी जेल जाने और उनकी यातनाओं से इतने डर गए कि उन्होंने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। कामरेड श्यामलक्का के लिए यह बहुत बड़ा धक्का था।

कामरेड श्यामलक्का का संबंध पार्टी से बचपन से ही रहा है। गांव में पार्टी जाती थी तो बचपन से ही उन्होंने क्रांतिकारी गीतों को गाना सीख लिया था। घर के कामों में मां का हाथ बंटाने में सदा आगे रहती थीं। नौजवान होने पर कामरेड श्यामलक्का की शादी गांव में ही सुन्नम परिवार में हुई थी। चूंकि जीवन साथी क्रांतिकारी पार्टी के कार्यकर्ता थे, इसलिए श्यामलक्का के मन में राजनीति के प्रति समझदारी विकसित होने लगी। उनके पति कामरेड चन्द्रन्ना जब पार्टी में भर्ती हुए और कामरेड श्यामलक्का राजनीति के नजदीक आने लगी, उस दौरान उन्होंने एक बच्ची को जन्म दिया। कुछ बड़ी होने तक उनका पालन-पोषण किया। 1998 में बाल-बच्चों को त्याग कर कामरेड श्यामलक्का पार्टी में भर्ती हो गईं।

कामरेड श्यामलक्का को किष्टारम दस्ते में भर्ती हुए पांच महीने ही हुए थे कि उनकी बदली बासागुड़ा दस्ते में कर दी गई। उन्होंने इस जिम्मेदारी को खुशी से स्वीकार किया। बाद में श्यामलक्का गर्भवती होने से एक साल तक पार्टी द्वारा उन्हें गृह ग्राम में रखा गया, उन्होंने तब एक लड़के को जन्म दिया। दो साल तक उसकी परवरिश करने के बाद 2003 में उन्होंने फिर दस्ते में अपनी जिम्मेदारी संभाली। तबसे लेकर अपनी शहादत तक उन्होंने क्रांति के कार्यों में ही जुटी रहीं। 2006 नवंबर में जेगुरगोंडा एरिया कमेटी सदस्य बनीं। दिसंबर 2006 के पहले सप्ताह में एरिया जनताना सरकार सभा में कामरेड श्यामलक्का को डॉक्टर की जिम्मेदारी सौंपी गई।

कामरेड श्यामलक्का पार्टी कैडरों से व आम जनता से मिलजुलकर रहती थीं। पार्टी में आखिरी दम तक उन्होंने डॉक्टर के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान कीं। दस्ते में सांगठनिक जिम्मेदारी का निर्वाह करते हुए भी स्वास्थ्य सेवा में हासिल थोड़े अनुभव के आधार पर प्रशिक्षण लेकर वह अच्छी गुरिल्ला चिकित्सक बन गई थीं। तबसे जनता और पार्टी योद्धाओं को बड़े प्यार से पूछ-पूछकर गोलियां देती थीं। कामरेड श्यामलक्का ने आदिवासी समाज में रीति-रिवाजों की आड़ में महिलाओं पर होने वाले पितृसत्तात्मक उत्पीड़िनों के रोग की जड़ को समझ लिया था। केवल शारीरिक रोग तो दवा से ठीक हो सकते हैं लेकिन सामाजिक रोगों से छुटकारा तो केवल क्रांति से ही पाया जा सकता है। कामरेड श्यामलक्का एक जबरर्दस्त क्रांतिकारी डॉक्टर बनीं। कामरेड श्यामलक्का एक तारे की तरह सदा आसमान में चमकती रहेंगी।

कामरेड श्यामलक्का जनता व पार्टी कैडरों में सदा खुशी का संचार करने वाली महिला थीं। जनता को काहनियां सुनाने में उन्हें बहुत आनंद आता था। सभी उसे तब एक मां की तरह देखते थे। पार्टी अनुशासन के मामले वो दृढ थीं। उन्होंने पार्टी में तेलुगू पढ़ना भी सीखा, अगर नहीं आता तो दूसरे साथियों से पूछने में वो कभी हिचकिचाती नहीं थीं।

उन्होंने कई शानदार प्रतिरोधी कार्यवाहियों में भाग लिया। 19 जून 2006 को पितूरी सप्ताह के दौरान 180 क्विंटल चावल सलवा जुडूम के लिए जा रहा था, तब उसे जनता के साथ जब्त करने में वो थीं। बासागुड़ा के तीन कट्टर जुडूमियों को खत्म करने में उनका योगदान रहा। जुलाई 2006 में पकिला गांव में हुई मुठभेड़ में एक सीआरपीएफ जवान बुरी तरह घायल हुआ था, तब श्यामलक्का एक सेक्शन कमांडर की हैसियत से लड़ी थीं। 28 दिसंबर 2006 को बोड़म गांव में हुई भीषण गोलीबारी में कामरेड नंगाल व भूमन्ना (कोसा) शहीद हुए। उस समय कामरेड श्यामलक्का बाल-बाल बची थीं। लेकिन 6 फरवरी 2007 को एक जनद्रोही मुखबिर की सूचना पर डेरा पर हुई

आमने-सामने की भीषण गोलीबारी में दो योद्धाएं धराशायी हुई थीं। उन्होंने शूरता से लड़ाई लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त किया। उन वीरांगनाओं में से एक कामरेड श्यामलक्का थीं। मात्र 34 वर्षीया श्यामलक्का उत्साह का पर्याय हुआ करती थीं।

कामरेड श्यामलक्का की शहादत से जेगुरगोंडा इलाका की जनता में शोक की लहर दौड़ गई।

हालांकि कामरेड श्यामलक्का ने भौतिक रूप से हमसे विदाई ली पर उनके आदर्श, संकल्प और मकसद हमें हमेशा प्रेरणा देते रहेंगे। शहीदों के नक्शेकदम पर चलते हुए आखिरी सांस तक लड़ाई जारी रखेंगे। उनके अधूरे मकसद को हम पूरा करेंगे, यही उस वीरांगना को सच्ची श्रद्धांजली होगी।

विम्पा की प्यारी बेटी कामरेड देवे

दक्षिण बस्तर डिवीजन के जेगुरगोंडा इलाके के विम्पा गांव में माड़वी देवे का जन्म दण्डकारण्य में माओवादी आंदोलन के जन्म के बाद 1987 में हुआ था। यह संयोग ही था कि विम्पा में संगठन का निर्माण भी तभी हुआ था। वह आंदोलन की गोद में ही पली-बढ़ीं। क्रांतिकारी गीत ही उसकी लोरियां बने। गीत सुनते-गाते ही उनका बचपन बीता। जवान होकर वह गांव की सीएनएम टीम का हिस्सा बन गईं। तीन साल तक उन्होंने सीएनएम में काम किया। नवंबर 2006 में वो दस्ते में भर्ती हुई थीं। उनके अंदर मौजूद कलात्मक हुनर को पहचान कर पार्टी ने उन्हें सीधा एरिया चेतना नाटय मंच की टीम में रखा तो आखिरी तक वह सांस्कृतिक मोर्चे पर तैनात रहीं। देवे इस वजह से जनता की बहुत लाड़ली थीं। कामरेड देवे भी 6 फरवरी 2007 को कोड़मेल गांव में हुए हमले में कामरेड श्यामलक्का के साथ शहीद हुईं।

नौजवान सांस्कृतिक योद्धा कामरेड देवे छोटी उम्र में ही भारत की नवजनवादी क्रांति की बलिवेदी पर कुरबान हो गईं। हम उनको मुट्ठी भींच कर लाल श्रद्धांजली अर्पित करते हैं। उनके सपनों को पूरा करने का प्रण लेते हैं।

मालेपाड़ का वीर सपूत कामरेड लच्छू

दक्षिण बस्तर डिवीजन में बासागुड़ा के निकट मालेपाड़ गांव में उइका लच्छू का जन्म हुआ था। 18 वर्षीय कामरेड लच्छू एक गरीब परिवार से ताल्लुक रखते थे। बचपन में ही उनके पिताजी का निधन हो गया था। उनकी मां ने ही उनको पाल-पोस कर बड़ा किया। बाल संगठन में काम करते हुए कामरेड लच्छू ग्राम रक्षा दल (जीआरडी) के सदस्य बने। एक साल तक उन्होंने जीआरडी में काम किया। उन्हें पार्टी ने अक्टूबर 2006 में ही दस्ते में भर्ती किया था।

कामरेड लच्छू को 2007 मई महीने में जेगुरगोंडा से अरनपुर जाने वाले पुलिस के लिए प्रेशर बम लगाते समय कमांडर ने सेन्ट्री पर रखा था। तब कामरेड लच्छू दस्ते से महज 50 गज की दूरी पर थे। दुश्मन को दूर से देखने के लिए कामरेड लच्छू पेड़ पर चढ़ गए, लेकिन दुश्मन पहले से वहां दस्ते के लिए जाल बिछाकर बैठा हुआ था। पुलिस बलों ने दस्ते पर अंधाधुंध गोलियां बरसाईं, जिसके बाद दस्ता तो सुरक्षित रिट्रीट हो गया, लेकिन कामरेड लच्छू पेड़ पर ही रह गए। पुलिस ने उन्हें उतारकर क्रूर यातनाएं दीं। आखिर में गोलियों से भून डाला। उनकी लाश को भी वो साथ ले गए।

कामरेड लच्छू दुश्मन से मिली सारी यातनाओं को बहादुरी से झेलते रहे। उन्होंने एक भी गुप्तभेद को नहीं खोला। छोटी सी उम्र में कामरेड लच्छू ने बहुत बड़ी मिसाल पेश की है।

कामरेड लच्छू का सैनिक जीवन बहुत ही छोटा है, लेकिन उनके अंदर जो सीखने की अदम्य लगन थी, जिम्मेदारी के लिए कुरबान होने का उनमें जो उत्साह था वो सदा हमें प्रेरणा देता रहेगा। छोटी सी उम्र में भारत की क्रांति के लिए अपने प्राणों का त्याग करने वाले इस योद्धा को पीएलजीए हमेशा याद रखेगी और उनकी कुरबानी को आत्मसात करेगी।

तिप्पापुरम के वीर पुत्र कामरेड नंगाल

दक्षिण बस्तर डिवीजन के कोन्टा तहसील, जेगुरगोंडा के नजदीक गांव है तिप्पापुरम। उस गांव के एक गरीब आदिवासी परिवार में कामरेड नंगाल जन्म लिए थे। अपने मां-बाप की चार संतानों में से वो तीसरे थे। शहादत के समय वे 30 वर्ष के थे। घर में उनकी पत्नी और बच्चें हैं।

कामरेड नंगाल कई साल पहले दस्ते में भर्ती हुए थे, लेकिन एक साल काम करने के बाद वह घर पर वापस चले गए थे। घर से पुलिस उठा कर ले गई। तीन महीने दंतेवाड़ा जेल में बंद रहे। उनका केस समाप्त हुआ तो वह फिर गांव की जन मिलिशिया में सक्रिय हो गए। उनके कामकाज को देखते हुए 2000 में उन्हें पार्टी सदस्यता प्रदान की गई। उसके बाद कामरेड नंगाल जन मिलिशिया के जीआरडी कमांडर के रूप में उभरे। कुछ समय बाद उन्हें जनताना सरकार में रक्षा विभाग के सदस्य की जिम्मेदारी जनता ने सौंपी। उन्हें जन मिलिशिया पलटन के डिप्यूटी कमांडर का दायित्व दिया गया। एक साल तक उन्होंने उस जिम्मेदारी को शिद्दत के साथ निभाया। दिसंबर 2004 तक वहां कार्यरत रहते हुए उन्होंने 2005 में दस्ते में पुनः भर्ती होने के लिए आवेदान दिया। तब पार्टी ने उसे दस्ते में भर्ती कर लिया। 2005 में जेगुरगोंडा एरिया जन मिलिशिया के कमांडर चुने गए। वहां काम करते हुए 2006 में उनका स्थानांतरण 10वीं पलटन में सेक्शन डिप्यूटी कमांडर के रूप में हुआ। 5 महीने तक उन्होंने पलटन में काम किया। उसी दौरान उनका स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण उन्होंने सैनिक कामकाज में असमर्थता जाहिर की, तो पार्टी ने उन्हें नागारम एलओएस में डिप्यूटी कमांडर के तौर पर काम सौंपा।

कामरेड नांगाल ने कई कार्रवाइयों में भाग लिया। जन मिलिशिया में शुरू से ही वह काफी लड़ाकू नौजवान रहे। 2006 में बासागुड़ा 'राहत शिविर' पर मिनी रेइड की गई थी। तब नांगाल ने स्टॉप पार्टी के डिप्यूटी कमांडर की जिम्मेदारी निभाई थी।

एनएमडीसी बारूद डिपो पर रेइड में भी शामिल रहे और अपने हिस्से की जिम्मेदारी बखूबी निभाई।

27 दिसंबर को हमारा दस्ता जोन्नागुड़ा गांव में पड़ाव डाले हुए था। कामरेड नंगाल व उनके साथ कामरेड भूमन्ना सुबह शौच के लिए जाते हुए पुलिस के ऐम्बुश में फंस गए। पुलिस की गोलीबारी में दोनों बहादुर कामरेड शहीद हुए।

कामरेड नंगाल के घर में बाल-बच्चे, पत्नी रहने के बावजूद वह सब कुछ त्याग कर क्रांतिकारी लड़ाई में शरीक हुए और उसमें अपनी जान भी न्यौछावर कर दी। हम उनके अधूरे सपनों को मंजिल तक अवश्य पहुंचाएंगे।

पुल्लम का वीर कामरेड भूमन्ना

18 वर्षीय नौजवान कामरेड भूमन्ना का गांव पश्चिम बस्तर डिवीजन के भैरमगढ़ एरिया में आता है। उनके गांव का नाम है पुल्लम। भूमन्ना के माता-पिता उन्हें कोसा नाम से बुलाते थे। छोटी उम्र में ही कोसा के मां-बाप का निधन हो गया था, जिस कारण वो अपनी दीदी के घर रहने लगे। कोसा अपनी दीदी और जीजा के साथ पले-बढ़े थे। वहीं से उन्हें क्रांतिकारी राजनीति से परिचय हुआ। गांव में रहते हुए वह गांव के संगठन कार्यकर्ता बने। उन्हें पार्टी की सब अपीलें बहुत आकर्षित करती थीं। हर रैली, बंद, जुलूस व हड़ताल आदि में वह सदा अग्रणी रहते थे। जनता को राजनीतिक संघर्षों में शामिल करने में उनका अहम योगदान रहता था।

कामरेड भूमन्ना धीरे-धीरे जन मिलिशिया की कार्रवाइयों में सक्रिय हुए। वहां से राजनीतिक, सैनिक चेतना को बढ़ाते हुए दस्ते में भर्ती हुए। जनवरी 2006 में उनका तबादला पश्चिम बस्तर से दक्षिण बस्तर के बासागुड़ा दस्ते में हुआ। तबसे भूमन्ना दस्ता सदस्य के रूप में पार्टी द्वारा सौंपी हर जिम्मेदारी का पालन करते रहे। मार्च 2006 में बासागुड़ा 'राहत शिविर' पर हमला कर 4 कट्टर गुंडों का सफाया किया गया। उस हमले में भूमन्ना ने अपना उल्लेखनीय योगदान दिया।

जून माह में जन पितूरी सप्ताह के दौरान 190 क्विंटल चावल जनता के लिए जब्त किया गया तब वह उस दस्ता के सदस्य थे। सितंबर 2006 में जब उनको नागारम एलओएस मे स्थानांतरित किया गया तो उसको भी उन्होंने तहेदिल से आत्मसात किया। गरीबी में पले-बढ़े कामरेड भूमन्ना को घर में तो पढ़ाई का मौका नहीं मिला, लेकिन दस्ते में रहते हुए उन्हेंने सीखने का भरपूर प्रयास किया। राजनीतिक व सैनिक ज्ञान को हासिल करने के लिए उनके प्रयास सरहानीय रहते थे। अपनी गलतियों की आत्मालोचना करना और दूसरों की गलतियों पर भी विनम्रता से आलोचना करना उनका अच्छा स्वभाव था। लोगों के साथ प्यार भरा व्यवहार उन्हें लोगों को, कैडरों का प्यारा बना देता था।

27 दिसंबर को बोड़म गांव में पुलिस के ऐम्बुश में फंस कर कामरेड नंगाल के साथ भूमन्ना भी वीरगति को प्राप्त हुए। अपनी छोटी सी उम्र में ही कामरेड भूमन्ना अपने जीवन का बलिदान भारत की शोषित जनता के लिए दे गए। हम नौजवान भूमन्ना की शहादत को सदा ऊंचा उठाए रखेंगे।

आरगट्टा की वीरांगना कामरेड पेंटी

दोरनापाल एरिया के अंतर्गत आने वाले गांव आरगट्टा की निवासी थीं कामरेड कड़ती पेंटी। 30 वर्षीय कड़ती पेंटी क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन की सक्रिय कार्यकर्ता थीं। पिछले 3 साल से वह संगठन के कामों में सजींदगी से भाग ले रही थीं। उनके मां-बाप का निधन बहुत पहले हो गया था, इसलिए वह भाइयों के पास रहती थीं। भाई सलवा जुडूम के समर्थक हो गए। वो उन पर बराबर दबाव डालते कि वह भी आत्मसमर्पण कर दे, कि तुम्हारे कारण ही सलवा जुडूम वाले हमें भी मारेंगे आदि-आदि। स्वभाव से संघर्षशील रही कामरेड कड़ती पेंटी अपने भाइयों के दबाव में आकर जुलाई 2006 में 'राहत शिविर' जाने को तैयार हो गईं। वहां जाने के तुरंत बाद उन्हें गिरफ्तार कर एर्राबोर ले गए। वहां पर पुलिस व एसपीओ ने मिलकर उनके साथ अत्याचार किया और मारकर उनकी लाश को निर्वस्त्र शबरी नदी में फेंक दिया। कामरेड कड़ती पेंटी ने पार्टी की गोपनीयता की रक्षा कर, तमाम यातनाओं को सहकर बहादुरी का परिचय दिया है। हम कामरेड कड़ती पेंटी की वहशियाना तरीके से की गई हत्या की तीव्र निंदा करते हैं और उनकी मौत का बदला लेने का संकल्प लेते हैं। कामरेड पेंटी को लाल सलाम।

नीलममडुगू का जुझारू कार्यकर्ता कामरेड सोड़ी एंकाल

दक्षिण बस्तर डिवीजन के कोंटा एरिया में एक गांव है नीलममडुगू, जिसने सलवा जुडूम के कहर को कई बार झेला है। उस गांव में दोरला समुदाय के कामरेड सोड़ी एंकाल का जन्म हुआ था। 30 वर्षीय एंकाल कई बच्चों के बाप हैं, वह एक दशक से पार्टी द्वारा सौंपे गये हर काम को बड़ी लगन और मेहनत से अंजाम दे रहे थे। शुरू में वह दण्डकारण्य आदिवासी किसान मजदूर संगठन के सदस्य बने व बाद में उसके अध्यक्ष चुने गए। गांव कें वर्ग दुश्मनों, मुखिया-मांझियों से लगातार संघर्ष करते हुए गांव के संगठन को मजबूत बनाने में एंकाल का योगदान अहम रहा। इसी वजह से जब जनताना सरकार का गठन हुआ तो नीलममडुगू की जनता ने उन्हें अपनी सरकार का अध्यक्ष चुना। जनताना सरकार में स्वास्थ्य विभाग की जिम्मेदारी भी उन्होंने अपने कंधों पर ली। गांव-गांव में जाकर, जनता की सभाएं लेना, उनके स्वास्थ्य की देखभाल करना, उनको संघर्षों के लिए तैयार करना, राजनीतिक गोलबंदी करना उनकी दिनचर्या का हिस्सा होता था।

इलाके की जनता ने स्थानीय मुखियाओं-मांझियों, सेठ-साहुकारों के गलत मापतौल के खिलाफ, वनोपजों, फसलों के सही दाम की मांग को लेकर कई बार संघर्ष किए। कोंटा कस्बे में कई रैलियों का आयोजन किया। वन विभाग के जुल्मों के खिलाफ कई बार संघर्ष हुए। इन सब में कामरेड एंकाल आगे रहे थे। पार्टी ने तमाम जनता को सलवा जुडूम के खिलाफ युद्ध में उतरने का

आव्हान किया तो कामरेड एंकाल ने उसे बड़ी शिद्दत के साथ ग्रहण किया और 10-15 लोगों के साथ कई प्रतिरोध दस्ते तैयार किए।

कामरेड एंकाल एक मंजे हुए कार्यकर्ता थे। किसी भी गांव में जाने से वह गांव के संगठन के कार्यकर्ताओं की मीटिंग लेना नहीं भूलते थे। उन्हें उत्साहित करते हुए खुद को जितना पता होती संघर्ष व निर्माण की खबरें सुनाते थे। उनकी सीधी-सादी जीवन शैली और उत्साही स्वभाव जनता को बहुत प्रभावित करता था।

कामरेड एंकाल को कोन्टा शिविर के गुण्डे एसपीओ और पुलिस पकड़ कर ले गई थी। हत्यारे दरिंदों ने उन्हें मानवीयता को शर्मसार कर देने वाली यातनाएं देकर मार डाला। उनके हाथ, पैर, कानों को एक-एक कर बड़ी बेरहमी से काटा गया। दरिंदगी की सारी हदें पार करते हुए अंत में उन्होंने उनकी गला काट कर हत्या कर दी। लेकिन बहादुर कामरेड एंकाल से वो कुछ भी रहस्य उगलवाने में विफल हुए। कामरेड एंकाल ने जिस धैर्य व दृढ़ता का परिचय क्रूर यातनाओं को हराकर दिया है, वह हम सबके लिए अनुकरणीय है। मरते दम तक उन्होंने पार्टी के लिए काम किया है। अपने खून के कतरे-कतरे को जनता के लिए न्यौछावर कर दिया। आइए, उनका तीर-धनुष पकड़ कर उनके अधूरे लक्ष्य को पूरा करने के लिए उनके संग्राम को जारी रखें। आने वाली पीढ़ियां सदा नीलममडुगू के प्यारे नेता कामरेड एंकाल को याद करती रहेंगी।

तेमलवाड़ा संघर्ष का शहीद कामरेड मिड़ियम बिच्छेम

दक्षिण बस्तर डिवीजन के पामेड़ एरिया के अंतर्गत कोत्तागुड़ेम गांव में एक गरीब परिवार में कामरेड मिड़ियम बिच्छेम का जन्म हुआ था। कामरेड बिच्छेम के पिता जी का निधन जब वह छोटे से थे तभी हो गया था। उनकी मां का नाम मिड़ियम सुकली है। घर में थोड़ी बहुत पढ़ाई करके मां के कामों में हाथ बटांया करते थे। धीरे-धीरे वह गांव में सीएनएम के सदस्ये बने। बड़े होने पर उनकी मां ने उनकी शादी कर दी। कामरेड बिच्छेम बचपन से ही दस्ता के साथ आकर रहते, बातें सुनते और गीत गाते थे। उन्हें दस्ता की जिंदगी बहुत आकर्षित करती थी।

शादी के बाद भी कामरेड बिच्छेम जन संगठन के कामों में बहुत सक्रियता से काम करते थे। संगठन द्वारा सौंपे गए हर काम को पूरा करते थे। सीएनएम के साथ मिलकर कार्यक्रमों में, प्रचार अभियानों में भाग लेते थे।

बढ़ते जनयुद्ध की तीव्रता और दमन को देखते हुए कामरेड बिच्छेम ने अपनी मां, पत्नी, परिवार को छोड़कर पूर्ण रूप से क्रांति के लिए मैदान में कूदने का संकल्प लिया। 2007 में वो दस्ता में भर्ती हो गए और ब्यूरो सीएनएम सचिव कामरेड के गार्ड की जिम्मेदारी निभाई। 7 महीने तक उन्होंने इस जिम्मेदारी को निभाया। उसके बाद पार्टी की जरूरतों को देखते हुए उनकी बदली डिवीजन सीएनएम टीम में कर दी गई। फरवरी 2008 उन्हें पार्टी सदस्यता प्रदान कर कंपनी-3 में स्थानांतरित किया गया।

कामरेड बिच्छेम ने पार्टी के निर्णय को आत्मसात करते हुए कंपनी में भर्ती होना स्वीकार किया। 18 जून को हुए जबरर्दस्त बंडा ऐंम्बुश में उन्होंने मेन फोर्स में रहकर दुश्मन के साथ हिम्मत के साथ लड़ाई लड़ी थी।

7 जुलाई 2008 को तेमेलवाड़ा में पुलिस पर घात लगाने के लिए हमारे पीएलजीए बल मुस्तैद थे। लेकिन पुलिस बल माइन प्रूफ गाड़ी लेकर वहां से गुजरे, जिससे ऐम्बुश सफल नहीं हो सका। जब वहां से कामरेड बिच्छेम के सेक्शन को रिट्रीट होने का आदेश मिला तो वह रिट्रीट हो ही रहे थे कि उनको पीछे से गोली लगी, जिस कारण हमारे प्रिय कामरेड वहीं पर शहीद हो गए। आइए, कामरेड बिच्छेम के साहस को आत्मसात करें और जनयुद्ध को तेज करें। ★

भाकपा (माओवादी) के पोलिट ब्यूरो सदस्य कामरेड प्रमोद मिश्र (जनार्दनजी) की बेशर्त रिहाई के लिए संघर्ष करो!

10 मई 2008 को पोलिट ब्यूरो सदस्य कामरेड प्रमोद मिश्र को झारखण्ड के धनबाद शहर में एक समर्थक के घर से झारखंड स्पेशल टास्क फोर्स ने आधी रात को गिरफ्तार कर लिया। उन्हें अवैध हिरासत में रख कर 72 घंटे तक शारीरिक व मानसिक यातनाएं दी गईं। उन्हें 13 मई को कोर्ट में पेश किया गया। उससे कुछ दिन पहले उनके बड़े पुत्र कामरेड सुधीर (29) को गिरफ्तार किया गया था। कामरेड जनार्दनजी को पुलिस ने 5 दिन पुलिस रिमांड पर रखा।

कामरेड प्रमोद मिश्र जी (54) हमारी पार्टी के एक वरिष्ठ नेता हैं जो तीन दशकों से भारतीय क्रांति में अपना योगदान दे रहे हैं। बिहार के सशस्त्र कृषि संग्राम के निर्माता के तौर पर आम जनमानस में वह एक अति लोकप्रिय नेता हैं। अपनी गिरफ्तारी के समय वह उत्तर रीजनल ब्यूरो के सचिव का कार्यभार निभा रहे थे।

कामरेड प्रमोद मिश्र की गिरफ्तारी से आम जनता बेहद आक्रोशित हुई और तीव्र प्रतिक्रिया की। 'प्रभात' कामरेड प्रमोद मिश्र की गिरफ्तारी की कड़ी निंदा करती है और आम जनता व जनवाद पसंद ताकतों से अपील करती है कि उनकी बिना शर्त रिहाई के लिए संघर्ष करें। ★

साहसिक पलटन कमाण्डर कामरेड रमेश (मुड़मा सोमारू) सदा हमारे दिलों में बसे रहेंगे!

(कामरेड रमेश की शहादत 5 मार्च 2007 को हुई थी, लेकिन हमें उनकी जीवनी समय पर न मिलने के कारण हम छाप नहीं सके, इसके लिए हमें बेहद खेद है। प्रस्तुत है उनकी संक्षिप्त जीवनी जो हमें सितम्बर 2008 में प्राप्त हुई।

- संपादक मंडल)

एक गरीब आदिवासी परिवार से आए कामरेड रमेश अपनी शहादत के समय केवल 25 वर्ष के नौजवान थे। उनके गांव का नाम है चिन्तन। चिन्तन गांव पश्चिम बस्तर डिवीजन के नेशनल पार्क एरिया के अंतर्गत आता है। उन्हें घर में मुड़मा सोमारू नाम प्राप्त हुआ था।

कामरेड मुड़मा सोमारू बचपन से ही क्रांतिकारी राजनीति के संपर्क में आ गये थे। अपने गांव में बाल संगठन में काम करते हुए वह बड़े हुए। तमाम अन्य बच्चों की तरह वह भी बड़े होकर किसान संगठन के सक्रिय कार्यकर्ताओं में शुमार हुए। गांव के पटेल-मुखिया आदि वर्ग दुश्मन जब सरकार से सांठगांठ कर जन संगठन व पार्टी को बर्बाद करने पर तुले हुए थे तो गांव वालों ने उनके खिलाफ जमकर संघर्ष किया, उनको सजाएं दीं। कामरेड मड़मा सोमारू की भागीदारी इस संघर्ष में बराबर रही। 2001 को चिन्तन गांव से 4 नौजवान पीएलजीए में भर्ती हुए थे, जिनमें कामरेड मड़मा सोमारू भी एक थे, जो बाद में हमारे प्रिय कामरेड रमेश बने। जून माह में एक सप्ताह का सैनिक प्रशिक्षण प्राप्त कर दस्ते के सदस्य के रूप में अपने सैनिक जीवन की शुरूआत की।

2001 जून से वह नेशनल पार्क दस्ता के सदस्य रहे। अनुशासन प्रिय, हंसमुख नौजवान कामरेड रमेश के गुणों को देखते हुए 2003 के अंत में उन्हें स्पेशल जोनल कमेटी के स्टाफ दस्ता सदस्य की हैसियत से जिम्मेदारी सौंपी गई। जहां पर उन्होंने एसजेडसी के मुख्यालय से तमाम तरह की सामग्री को अलग-अलग जगह पहुंचाने में बेथक काम किया। दिन-रात या गर्मी-सर्दी का उन पर कोई असर नहीं होता था। बस, काम की लगन रहती थी। बुखार होने पर भी कामरेड सदा मेहनत के लिए तैयार रहते थे। उनके इन्हीं गुणों ने उनको एसजेडसी सचिव का गार्ड बना दिया। एक साल तक कामरेड एसजेडसी सचिव के गार्ड की जिम्मेदारी पूर्ण निष्ठा व उत्साह से निभाते रहे। नेतृत्वकारी साथी की सुरक्षा का दायित्व उन्होंने बहुत ही सतर्कता व ईमानदारी से निभाया। कभी उनके चेहरे पर शिकन नहीं देखी गई। मोबाइल एकाडमिक स्कूल में भाग लेकर उन्होंने अपने अक्षर ज्ञान को बढ़ाया। उन्होंने उस समय तक 'प्रभात', 'वियुक्का', 'पड़ियोरा पोल्ला' जैसी पत्रिकाओं को पढ़ना और समझना सीख लिया था। राजनीतिक चेतना को बढ़ाते हुए, छापामार युद्ध के गुर सीखते हुए अपने क्रांतिकारी छापामार जीवन को और आगे बढ़ाया।

2005 में कामरेड रमेश का स्थानांतरण उत्तर बस्तर डिवीजन में किया गया। तब तक सलवा जुडूम दमन अभियान शुरू हो गया था। पश्चिम बस्तर के गांव चिन्तन यानी रमेश के गृह ग्राम में भी उसकी काली छाया पड़ी। उनके परिवार को भी सलवा जुडूम की दरिंदगी को झेलना पड़ा। नौजवान रमेश के दिल में सलवा जुडूम के प्रति, केन्द्र, राज्य सरकारों के प्रति इससे और क्षोभ बढ़ा। उनकी दमनकारी नीतियों के खिलाफ तीव्र गुस्सा फूट पड़ा। उन्होंने दृढ़ता के साथ छापामार जीवन को जारी रखा। कुछ दिनों तक वह 2006 में रावघाट एलजीएस के कमांडर के पद पर कार्यभार संभालते रहे। इसके बाद कामरेड रमेश को पलटन-17 में कमांडर के रूप में फरवरी 2007 को जिम्मेदारी प्रदान की गई। वह एक बार ही डिवीजन कमांड के सदस्य की हैसियत से कमांड मीटिंग में भाग ले पाए। पार्टी द्वारा दिए गए एक टारगेट को खत्म करने के मकसद से वह एक एक्शन टीम के साथ केशकाल इलाके के सदाडी गांव में डेरा डाले हुए थे। वहीं एक मुखबिर की सूचना पर धनोरा पुलिस ने उन पर हमला किया। इस मुठभेड़ में वीरता से लड़ते हुए कामरेड रमेश शहीद हो गए।

कामरेड रमेश का मात्र 7 वर्ष का गुरिल्ला जीवन हमारे लिए आदर्श है। कठिन परिश्रम, हंसमुख स्वभाव, सीखने के प्रति लगाव और लड़ाकू क्षमता हमारे लिए प्रेरणास्पद रहेगी। कामरेड रमेश ने पार्टी द्वारा दी गई हर जिम्मेदारी को पूरी दृढ़ संकल्प शक्ति के साथ तहेदिल से पूरा किया है। उन्होंने पार्टी के कार्यभारों को पूरा करने के लिए अपनी जान की बाजी लगा दी है। आइए, रमेश की शहादत को, उनके उच्च गुणों को सदा अपने दिलों में बसाए रखें। उनसे सीखते हुए आगे बढ़ें। कामरेड रमेश सदा नील गगन मे चमकते रहेंगे। ✶

कंचाल अमर शहीदों को लाल-लाल सलाम!

ए लाल फरेरे तेरी कसम, इस खून का बदला हम लेंगे!
जो खून गिरा इस धरती पर, बेखौफ खतर परवानों का,
इंसाफ तलब दीवानों का उस खून का बदला हम लेंगे!!

18 मार्च 2008 को दण्डकारण्य के दक्षिण बस्तर डिवीजन के कंचाल गांव के पास आंध्रप्रदेश की एसआइबी ने अपने कोवर्ट-मुखबिरों के जरिए एक कातिलाना हमले की साजिश रची। गांव के कुछ संगठन सदस्यों को पैसों के लालच से अपने दलाल बनाकर उनके जरिए गुरिल्लों के कैंप के बारे में सारी सूचनाएं इकट्ठी कर लीं। इसके बारे में हमारे कॉमरेडों को कोई जानकारी नहीं थी। यह कैम्प उत्तर तेलंगाना के अंतर्गत आने वाले खम्मम जिले के कॉमरेडों का था। उसी समय दण्डकारण्य की पलटन-9 के कॉमरेड्स भी अपने प्रतिरोध के कामकाज के सिलसिले में उस गांव में गए हुए थे। एसआइबी ने अपने दलालों के जरिए कैम्प में मौजूद कॉमरेडों की संख्या, हथियारों की स्थिति आदि सारी जानकारी जुटा ली। इसके बाद उनसे कई गुणा ज्यादा संख्या में - सैकड़ों ग्रेहाउण्ड्स को अत्याधुनिक हथियारों से उतारकर हमला करवाया। इस जघन्य हमले के तहत छत्तीसगढ़ पुलिस के भी सैकड़ों जवानों ने अलग-अलग जगहों में पर मोर्चेबंदी की थी। इस कोवर्ट आपरेशन में कुल 18 लोग मारे गए, जिनमें कुछ सशस्त्र गुरिल्ले थे, जबकि कुछ निहत्थे जन संगठन सदस्य और कुछ आम लोग भी थे। अवलम लच्छी (60 साल) नामक एक बूढ़ी मां को भी, जो इस 'मुठभेड़' के समय जंगल में घास काटने गई हुई थी, गोली मारकर ग्रेहाउण्ड्स ने अपनी पाशविकता का नंगा प्रदर्शन किया। शहीद हुए 18 कॉमरेडों के नाम हैं - सागर, चूटे, भास्कर, रघु, किरण, रामसू, बुधरी, मुका, सन्नी, जोगी, बायी, हिड़माल, सन्नाल, हुंगाल, विमला, हड़माल, माड़ाल और लच्छी। इनमें सागर, रघु, भास्कर, हिड़माल और सन्नाल उत्तर तेलंगाना के क्रांतिकारी आंदोलन में काम कर रहे थे, बाकी सब दण्डकारण्य आन्दोलन में कार्यरत थे। इनमें माड़ाल और बूढ़ी मां लच्छी दोनों गांव के आम लोग थे। 'प्रभात' इन सभी कॉमरेडों को तहेदिल से श्रद्धांजली पेश करती है और उनके अरमानों को पूरा करने की कसम खाती है।

कामरेड सागर (यादगिरी)

दण्डकारण्य के इतिहास में शासक वर्गों का यह अब तक का सबसे बड़ा और घृणित हत्याकांड है। पार्टी, पीएलजीए और जनता ने इसके लिए जिम्मेदार गद्दारों का पता लगाया और कुछ ही दिनों में उनका सफाया कर दिया। कंचाल हत्याकाण्ड जहां शोषक शासक वर्गों की बर्बरता का उदाहरण है, वहीं क्रांतिकारी खेमे के लिए यह एक बड़ा सबक भी। पार्टी, पीएलजीए, जनताना सरकार और जन संगठनों ने इसकी गहराई से समीक्षा की। इसके आधार पर हम दुश्मन का मुकाबला करने के लिए सही दावपेंचों को अपनाकर जनयुद्ध को जरूर नई ऊंचाई पर पहुंचा देंगे। आइए, इस हत्याकाण्ड में अपने प्राण गंवाने वाले शोषित जनता के वीर सपूतों-सपुत्रियों की जीवनी पर सरसरी नजर डालें।

कामरेड भास्कर

कामरेड रघु

कामरेड पूनेम जोगी

कामरेड हिड़माल

उत्तर तेलांगना संघर्ष के लाल सपूत कामरेड सागर (यादगिरी)

कंचाल हत्याकांड में शहीद हुए कामरेडों में से कामरेड सागर प्रमुख नेता थे। उन्होंने उत्तर तेलांगना के आंदोलन में लंबे समय तक अपनी अहम भूमिका निभाई। अपनी शहादत के समय में कामरेड सागर खम्मम डिवीजनल कमेटी के सचिव का कार्यभार संभाले हुए थे।

कामरेड सागर का जन्म उत्तर तेलंगाना के वरंगल जिला,

खानापुर मंडल के धर्मारावपेवटा गांव में हुआ था। 44 वर्षीय कामरेड सागर बालानर्सम्मा व सिद्धैया दंपत्ति के बड़े बेटे थे, जिन्होंने अपने बेटे का बड़े प्यार से नाम यादगिरी रखा था। कामरेड यादगिरी बुधरावपेटा, खानापुर में जब अध्ययनरत थे तभी रैडिकल राजनीतिक के संपर्क में आ गए थे। रैडिकल राजनीति के प्रति उनके झुकाव को देखते हुए उनके मां-बाप ने उनका विवाह कर दिया जबकि वह मात्र 10वीं कक्षा में पढ़ रहे थे। लेकिन उनके रैडिकल छात्र संगठन के कामों को शादी भी नहीं रोक पाई। उन्होंने जबरर्दस्त काम किया। अपनी जीवन साथी की राजनीतिक चेतना बढ़ाते हुए उन्होंने 12वीं तक नर्समपेटा में पढ़ाई पूरी की। बाद में हनमकोंडा के कुमारपल्ली गांव में एक प्राइवेट स्कूल में अध्यापक की नौकरी करने लगे। एक तरफ स्कूल की नौकरी व ट्यूशन पर बच्चों को पढ़ाना, दूसरी तरफ पार्टी का काम भी कामरेड यादगिरी बहुत अच्छे से कर रहे थे। इसी समय उन्होंने ग्रामीण संगठन रेडिकल युवा संगठन में काम करना शुरू किया। 1986 में पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर भयंकर यातनाएं दी और जेल में डाल दिया।

जब कामरेड सागर जेल में थे तो उनकी जीवन साथी रमातारा को काफी मुसीबतें झेलनी पड़ीं। उनके घर वालों ने उनकी शादी कहीं और करवाने के लिए दबाव डाला, लेकिन वो उनका विरोध करते हुए दृढ़ता के साथ कामरेड सागर के पक्ष में खड़ी रहीं।

जेल से छूटे तो कामरेड सागर तुरंत पार्टी का कामकाज उसी शिद्दत से करने लगे। पुलिस को उनके साथ खुंदक हो गई। 1991 में सरकार द्वारा भयंकर दमन अभियान चलाया गया। उस समय उनके घर पर हमला कर पुलिस ने आग लगा दी थी।

उनको एक बार फिर गिरफ्तार कर लिया गया। इस दौरान वह 2 साल तक जेल की यातनाएं सहते रहे। छूटने के बाद वह अपने मामा के घर रहे। लेकिन 1996 में उन्होंने अपने परिवार को छोड़कर पूर्ण रूप से क्रांतिकारी युद्ध में अपना जीवन लगाने का संकल्प लिया। उन्होंने उत्तर तेलंगाना स्पेशल जोनल कमेटी की राजनीतिक पत्रिका 'प्रजा विमुक्ति' के संपादकमंडल में काम करना शुरू किया। 1999 तक उन्होंने इस पत्रिका में अपना अहम योगदान दिया। 1999 से उन्होंने वरंगल जिला कमेटी व निजामाबाद संयुक्त जिला कमेटी के सचिव के बतौर अपना दयित्व निभाया। उसके बाद वह 2007 से खम्मम जिला सचिव के तौर पर आंदोलन को अपना नेतृत्व प्रदान कर रहे थे। वहां के आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए कामरेड सागर ने जी-तोड़ प्रयास किए। कामरेड सागर संघर्ष का और उनमें आने वाले उतार-चढ़ावों का गहरा अध्ययन करने वाले नेता थे। उत्तर तेलंगाना के संघर्षशील इतिहास को वो हमेशा याद रखते थे।

कामरेड सागर एक जबरर्दस्त संगठनकर्ता के साथ-साथ लेखन व सैनिक मामलों में भी बेजोड़ अनुभव रखते थे। 2007 में एक कैंप पर जब हमला हुआ तो उन्होंने दुश्मन का जिस दृढ़ता व होशियारी से सामना किया वह काबिले तारीफ था। इस लड़ाई में दो ग्रेहाउंड्स हत्यारों की मौत हुई थी। कंचाल में जब उनको पता चला कि ग्रेहाउंड्स का मुकाबला करना है तो अपने साथियों को लेकर उनसे मुकाबला करने निकल पड़े थे। वहीं उन्होंने अपनी आखिरी लड़ाई लड़ी और अपने प्राणों की आहुती दी।

कामरेड सागर अपने कैडर से बहुत प्यार करते थे और उनकी राजनीतिक चेतना बढ़ाने के लिए हमेशा प्रयास करते रहते थे। कामरेड सागर दुश्मन से मिली यातनाओं से अस्वस्थ रहते थे। क्रूर यातनाओं के चलते उनकी एक किडनी खराब हो गई थी, उनके घुटने में भी लंबे समय से दर्द रहता था। लेकिन उन्होंने कभी भी लड़ाई से मुंह नहीं मोड़ा, न ही कभी हिम्मत हारी। उन्होंने अपनी बड़ी बेटी को जनयुद्ध में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया। वह अपनी छोटी बेटी को भी क्रांतिकारी संघर्ष में लाने के लिए प्रयास कर रहे थे। उनके प्रयास थे कि पूरा परिवार ही क्रांतिकारी बने। वह अपने साथियों को समझाते थे कि कितनी भी समस्याएं होने से हमें राजनीतिक रूप से उनका हल खोजना चाहिए। कितनी भी समस्याएं आने से लड़ाई को नहीं छोड़ना चाहिए। कामरेड सागर एक आदर्श कामरेड थे, जिनके गुणों को सभी पार्टी कतरों में ले जाने की जरूरत है। कामरेड सागर के अरमानों को मंजिल तक पहुंचाना ही उनको सच्ची श्रद्धांजली होगी।

कामरेड कोवासी पोज्जा (चूटे)

दक्षिण बस्तर, जिला दंतेवाड़ा, तहसील कोंटा के किष्टारम एरिया के गांव टेट्टेमडुगु में कामरेड चूटे जन्म लिए थे। वह मात्र 25 साल के नौजवान थे। उन्होंने एक गरीब आदिवासी परिवार में जन्म लिया था। जब वह कुछ ही साल के रहे होंगे कि उनके पिता का निधन हो गया था। बाद में उनके बड़े भाई भी बीमारी के कारण चल बसे थे। उनके घर में उनकी मां व एक छोटा भाई हैं।

चूटे बचपन में ही बाल संगठन में सक्रिय हो गए थे। थोड़े बड़े हुए तो ग्राम रक्षा दल के होनहार सदस्य बने। गांव में दस्ता आता तो वह हमेशा उसके साथ रहते और उसे भी दस्ते में भर्ती करने की जिद करते थे। जब दस्ता सदस्य कहते 'तुम अभी बहुत छोटे हो, बड़े हो जाओ तो दस्ता में भर्ती करेंगे' तो वह बहुत सोचते थे मैं कब बड़ा होऊंगा।

आखिरकार 2001 में उनकी यह आशा किष्टारम एरिया कमेटी ने पूरी की और दस्ता सदस्य के तौर पर भर्ती किया। पार्टी ने उन्हें संघर्ष की जरूरत को ध्यान में रखते हुए आंध्र-ओडिशा बार्डर जोन में बदली कर दिया। वहां उन्हें नेतृत्वकारी कामरेड के गार्ड की जिम्मेदारी सौंपी गई जहां उन्होंने अपनी राजनीतिक चेतना का विकास किया। वह महान शहीद योद्धा कामरेड बीके के गार्ड रहे और उनके साथ कई हमलों में शामिल होने का उन्हें अवसर मिला। वहीं उन्होंने तेलुगू पढ़ना-लिखना भी सीखा। कामरेड चूटे की बदली 2007 अप्रैल में दोबारा फिर दक्षिण बस्तर में हुई। अब उसे 9वीं पलटन में सेक्शन कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी हुई थी। जिम्मेदारी को पूरा करने के लिए, चलायमान युद्ध में छापामार युद्ध को बदलने के लिए साथियों को राजनीतिक रूप से बताना और उनके साथ मिलकर अभ्यास करना कामरेड चूटे को बहुत अच्छा लगता था।

18 मार्च को ग्रेहाउंडस ने कंचाल गांव पर जब हमला किया तो उन्होंने रणभूमि में दुश्मन के साथ अपने सेक्शन को लेकर साहसपूर्ण लड़ाई लड़ी। बस्तर माटी के वीर सपूत कामरेड चूटे मात्र 25 वर्ष की अल्प आयु में नवजनवादी क्रांति के लिए, जनता की राजसत्ता स्थापना करने के लिए अपनी जान कुरबान कर गए। आइए, कामरेड चूटे के अधूरे सपनों को पूरा करें।

कामरेड भास्कर

कामरेड भास्कर का जन्म जिला वरंगल, तहसील ताड़वाई, गांव कालवापल्ली के एक गरीब आदिवासी परिवार में हुआ था। कामरेड भास्कर के बचपन में ही माता-पिता का निधन होने से वह अनाथ हो गए थे। उन्होंने प्राथमिक शिक्षा अपने गांव के आश्रम स्कूल में प्राप्त की। उसके बाद अपनी मौसी के गांव कोत्तागुड़ा में दसवीं कक्षा तक पढ़ाई की। जिस गांव में वह अपनी मौसी के पास रहते थे, वहां पार्टी का हमेशा आना-जाना होता था। पार्टी की राजनीति को समझते हुए उन्होंने पार्टी में शामिल होने की इच्छा व्यक्त की। उनकी छोटी उम्र को देखते हुए पार्टी ने उन्हें कुछ समय रुकने की सलाह दी। उन्होंने जिला कमेटी के कोरियर के रूप में काम शुरू किया। लेकिन जब वह दुश्मन की नजर में आ गए तो उन्हें पार्टी ने अंदर बुला लिया। उन्होंने मणुगुर एरिया कमेटी, मंगामेट्टा दस्ता में डिप्यूटी कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी गई। उसके बाद उन्होंने खम्मम-करीमनगर डिवीजनल कमेटी के अंतर्गत आने वाले दल वेंकटापुरम में एक साल तक काम किया। जब एरिया विस्तार करने की योजना बनी तो उन्हें खम्मम जिले में भेजा गया। सामंती व संशोधनवादी पार्टियों के खिलाफ उन्होंने जनता को जन संगठनों में संगठित किया। और कई संघर्षों को नेतृत्व प्रदान किया।

नवंबर 2007 में दुश्मन ने व्यापक दमन अभियान चलाया। उस दौरान कामरेड भास्कर को जो भी जिम्मेदारी सौंपी गई, उन्होंने उसे बड़ी शिद्दतपसंदी के साथ निभाया। कंचाल में ग्रेहाउंड्स आए हैं, यह सुनकर कामरेड भास्कर उनका मुकाबला करने के लिए तुरंत आगे आए। कामरेड भास्कर का व्यवहार जनता व पार्टी सदस्यों के साथ बहुत मित्रतापूर्वक रहता था। सामूहिक कामकाज को वह हमेशा प्राथमिकता देते थे। अपने 8 साल के क्रांतिकारी सफर में कामरेड भास्कर ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। कामरेड भास्कर की जिंदगी उत्पीड़ित जनता के लिए एक आदर्श है।

कामरेड रघु

कमोरड रघु, एटूरूनागराम एरिया के भुट्टाईगुडेम गांव में एक गरीब परिवार में पैदा हुए थे। उसी गांव में कामरेड रघु (गिरीबाबू) ने पांचवी कक्षा तक पढ़ाई की। अपनी छोटी सी उम्र में ही वो काम करने लगे थे। मजदूरी करके अपना गुजारा करते थे। बचपन में ही वो बाल संगठन के अच्छे नेता के तौर पर उभरे। छोटी उम्र में ही दुश्मन की खोज खबर लेकर दस्ता सदस्यों को तुरंत देते थे। 2001 में उन्हें पार्टी ने दस्ता में भर्ती करने का फैसला किया तो वह अपनी जीवन साथी को भी साथ में शामिल किए। दल में भर्ती होने के कुछ समय बाद ही उन्हें एक मुठभेड़ में अपनी प्रिय जीवन साथी को गंवाना पड़ा। तब भी कामरेड रघु दृढ़ता के साथ दस्ता में टिके रहे। दो साल तक उन्होंने स्पेशल जोनल कमेटी के एक सदस्य के बतौर गार्ड काम किया। गार्ड रहते हुए उन्होंने हर काम को बहुत अच्छे से सीखा और अच्छे से किया। आंध्र सरकार के साथ जब शांति वार्ता हुई तो कामरेड रघु भी नेतृत्वकारी कामरेडों की सुरक्षा के लिए बतौर गार्ड उनके साथ गए। और अपनी जिम्मेदारी को बखूबी पूरा किया।

शबरी एरिया में रहते हुए उन्होंने संशोधनवादी पार्टियों व पोलावरम प्रोजेक्ट के विरोध में जनता की चेतना बढ़ाने में अहम योगदान दिया। दुश्मन को इसकी सूचना मिलने पर भी उनको बिना मौका दिये अपना काम किया।

दल सदस्यों को वह हमेशा राजनीतिक रूप से शिक्षित करते रहते थे, जिन साथियों को पढ़ाई नहीं आती थी उनको पढ़ना सिखाते थे और बोलकर सुनाते थे। कंचाल मुठभेड़ में कामरेड रघु हिम्मत के साथ मैदान में डटे रहे और शहीद हुए। कामरेड रघु की आशाओं को पूरा करेंगे।

कामरेड लिंगाल (किरण)

कामरेड माडवी लिंगाल का जन्म गांव तुमीरगुडेम गांव में हुआ था। यह गांव दक्षिण बस्तर डिवीजन, जिला बीजापुर के पामेड़ एरिया के अंतर्गत उसूर एलओएस एरिया में आता है। कामरेड किरण की उम्र अपनी शहादत के समय मात्र 24 साल थी। कामरेड किरण बचपन से ही बाल संगठन में काम करते हुए, पार्टी की राजनीति से प्रभावित होकर भूमकाल मिलिशिया में भर्ती हुए थे। जनता पर सलवा जुडूम के गुंडों के जारी फासीवादी कहर को परास्त करने के लिए उन्होंने कोया भूमकाल मिलिशिया के कमांडर रहते हुए कई हमलों को अंजाम दिया था। 2 साल तक उन्होंने कोया भूमकाल मिलिशिया में कमांडर की सफल जिम्मेदारी निभाई। कामरेड किरण को पार्टी ने फैसला कर दस्ता में भर्ती किया। उन्होंने उस फैसले को बहुत खुशी के साथ स्वीकार किया।

कामरेड किरण के घर में उनके माता-पिता, दो छोटी बहनें व एक बड़ी बहन हैं। उनके दो छोटे भाई भी हैं। कामरेड किरण अपनी पत्नी व छोटी बच्ची को छोड़कर क्रांतिकारी जनयुद्ध में शामिल हुए थे। पार्टी में उन्होंने राजनीतिक व सैनिक गुरों को सीखने के लिए भरपूर प्रयास किए।

कामरेड किरण ने कई प्रतिरोध की कार्रवाइयों में भाग लिया। बासागुड़ा से निकलने वाली पुलिस की गश्त पार्टी पर किए गए ऐम्बुश में उन्होंने भाग लिया। बासागुड़ा बंकर पर हमला करने गए तो वह उसमें डाक्टर टीम के सदस्य के तौर पर शामिल हुए। पलटन में रहते हुए उन्होंने अपनी सारी जिम्मेदारियों को अच्छी तरह से निभाया।

कामरेड किरण ने पीएलजीए के अनुशासन को अपनी गुरिल्ला जिंदगी में अच्छे से निभाया। पार्टी नियमों को समझते हुए जन मिलिशिया में रहते हुए राजनीतिक चेतना बढ़ाने का कामरेड प्रयास करते थे। जन मिलिशिया सदस्यों के साथ बहुत हंसी-खुशी

से रहते थे। 2006 में कामरेड किरण 9वीं पलटन में भर्ती हुए, सैनिक अनुशासन को सीखते हुए अपने युद्ध कौशल को बढ़ाते हुए अपने ज्ञान को बढ़ाया।

18 मार्च को कंचाल में हुई मुठभेड़ में कामरेड किरण सेक्शन डिप्यूटी कमांडर की हैसियत से लड़ते हुए शहीद हुए। कामरेड किरण अमर रहें।

कामरेड रामसू

बीजापुर जिले की उसूर तहसील के रेंगम गांव में एक गरीब परिवार में कामरेड रामसू का जन्म हुआ था। यह गांव पामेड एरिया में आता है। कामरेड रामसू 21 साल के नौजवान योद्धा थे। कामरेड रामसू ने बचपन में बाल सगंठन में रहते हुए, अपने पशुओं को चराते हुए क्रांतिकारी गानों को सीख लिया था। गांव में दल पहुंचने से उनके साथ रहना, सीएनएम के नाच-गानों को सुनना व उनके साथ शामिल होने से वह बहुत खुश होने वाले कामरेड होते थे। जब वह बड़े हुए तो गांव में किसान संगठन की कमेटी के सदस्य बने। गांव में रहते हुए गांव के बड़े मुखिया-मांझियों के खिलाफ संघर्ष किए। दमन के खिलाफ उन्होंने जनता को जत्थेबंद किया। 2005 में वह दस्ता सदस्य बने थे। बाद में उनकी बदली 9वीं पलटन में की गई तो उनको इससे बेहद खुशी हुई। पलटन के अनुशासन में रहते हुए वह पीटी-ड्रिल को बहुत ध्यान से सीखते थे और करते थे। दुश्मन के प्रति उनमें गुस्सा कूट-कूट कर भरा हुआ था। कंचाल गांव में 18 मार्च को हुई भीषण मुठभेड़ में दृढ़ता के साथ लड़ते हुए उन्होंने अपने प्राणों की बाजी लगा दी। जनता के लिए जीने और मरने वाले कामरेड रामसू सदा जिंदा रहेंगे।

कामरेड बुधरी

एक मध्यम वर्गीय आदिवासी परिवार में पैदा होने वाली कामरेड मड़कम बुधरी के गांव का नाम गामापाड़ा है, जो दक्षिण बस्तर डिवीजन के पामेड़ एरिया में आता है। कामरेड बुधरी 23 वर्षीय युवती थीं। घर में उनके दो बड़े भाई व दो छोटी बहनें हैं।

कामरेड बुधरी गांव में रहते हुए सीएनएम की कमांडर बनी थीं। पार्टी के आव्हान पर चलाए जाने वाले प्रचार अभियानों का नेतृत्व करते हुए वह गांव-गांव में सांस्कृतिक कार्यक्रम देने में सदा आगे रहती थीं। वह सभी मीटिंगों में, कार्यक्रमों में बड़ी जिम्मेदारी पूर्ण भूमिका निभाती थीं। उन्होंने बाद में दस्ता सदस्य बनने के लिए पार्टी के सामने प्रस्ताव रखा तो पार्टी ने उसे स्वीकार करते हुए उन्हें स्थानीय गुरिल्ला दस्ते में जरूरत को देखते हुए शामिल कर लिया। वह वहां रहते हुए सैनिक अनुशासन और सैनिक नियमों को समझ रही थीं।

कामरेड बुधरी 5 सितंबर 2005 को जबसे दस्ता में सदस्य बनीं उसके बाद उन्होंने सेना में ही काम किया। पढ़ना-लिखना सीखने व सिखाने में कामरेड बुधरी अच्छी रुचि दिखाती थीं। समझ में नहीं आने से उसे दूसरे से पूछने में कोई हिचकिचाहट नहीं करती थीं। अपनी राजनीतिक चेतना बढ़ाने के लिए राजनीतिक चर्चाओं में भाग लेती थीं। 2006 में उन्हें 9वीं पलटन में स्थानांतरित किया गया और मार्च 2006 में ही उन्हें पार्टी सदस्यता प्राप्त हुई। कामरेड बुधरी पलटन में सैनिक अनुशासन को सीखते हुए मजबूत हुई। उन्हें पलटन में स्कूल शिक्षिका की जिम्मेदारी सौंपी गई। हर रोज समय पर लंबी विजिल लगाकर वह साथियों को अक्षर ज्ञान करवाने में जुट जाती थीं। 6 मार्च 2006 को बासागुड़ा शिविर पर हमला किया गया तो उस हमले में कामरेड बुधरी ने भी भाग लिया। 18 मार्च को ग्रेहाउंडस के साथ हुई मुठभेड़ के बाद कामरेड बुधरी का शव पालगुडेम के पास प्राप्त हुआ। पामेड़ एसी के कामरेडों ने उनके परिजनों के साथ मिलकर उन्हें अंतिम लाल सलाम किया। क्रांतिकारी सम्मान के साथ कामरेड बुधरी का अंतिम संस्कार किया गया और उनकी आशाओं को पूरा करने के नारे लगाते हुए जनता ने संकल्प लिया।

कामरेड मुचाकी मुका

कामरेड मुचाकी मुकाल का जन्म दक्षिण बस्तर डिवीजन, जिला बीजापुर के पामेड़ एरिया में टेकामेटला गांव में 20 साल पहले हुआ था। अपने मां-बाप के वह सबसे लाड़ले छोटे बेटे थे। उनके दो भाई हैं। उनका परिवार एक गरीब आदिवासी परिवार है, जो थोड़ी सी जमीन पर अपने गुजारे लायक खेती-बाड़ी कर अपना जीवनयापन करता है।

कामरेड मुकाल भी अन्य बच्चों की तरह बचपन से ही बाल संगठन के सदस्य बने थे। बाद में अपने गांव की जन मिलिशिया में बड़ी होशियारी से काम करने लगे। उसूर से आकर सलवा जुडूम के गुण्डे जब उनके गांव पर हमला किए और पूरे गांव की संपत्ति को, घरों को नुकसान पहुंचाए तो कामरेड मुकाल गुस्से से लाल हो गए थे। जन विरोधी सलवा जुडूम गुंडे उराल को जब सजा दी गई तो वह उसमें आगे रहे। वही उनके गांव पर सीआरपीएफ व जुडूम वालों को बुलाकर हमला करवाने का आरोपी था। एक बार फिर उनके गांव पर हमला हुआ तो वह जुडूम गुंडों के हत्थे चढ़ गए। लेकिन अपनी चालाकी से वह वहां से जल्दी ही भाग आने में सफल हुए व पुन: जन मिलिशिया में सक्रिय हुए। 'राहत शिविर' में मिली यातनाओं से कामरेड मुकाल और मजबूती के साथ उनसे लड़ने के लिए तैयार हुए। 2006 में दस्ता के सदस्य बन गए। गरीबी के कारण उन्हें हालांकि घर में रहते हुए पढ़ाई नसीब नहीं हुई। लेकिन पार्टी में उन्होंने लगातार पढ़ना-लिखना सीखने के लिए कोशिश की। 18 मार्च को अन्य योद्धाओं के साथ कामरेड मुकाल भी कंचाल में शहीद हो गए। पीएलजीए का हर योद्धा आज उनके सपनों को पूरा करने के लिए संकल्पबद्ध है। कामरेड मुकाल के सपनों को पूरा करेंगे।

कामरेड सन्नी

23 वर्षीया कामरेड सन्नी बीजापुर जिले के पामेड एरिया में गांव ऐर्रापाड़ की निवासी थीं। बाल संगठन में काम करने के बाद कामरेड सन्नी दो साल तक जन मिलिशिया में डिप्यूटी कमांडर के पद पर कार्यरत रहीं। मिलिशिया सदस्यों को हमेशा दुश्मन के साथ जूझने, जनता के जान-माल की रक्षा करने के लिए हमेशा तैयार रखती थीं और खुद भी अगली कतार में शामिल होकर

संघर्ष में भाग लेती थीं। घर के सभी कामों में भी वह बराबर हिस्सेदारी करती थीं।

कामरेड सन्नी के माता-पिता ने शादी करने के लिए उन पर बहुत दबाव डाला। लेकिन अपने मां-बाप को समझाते हुए कि मैंने जनता के लिए लड़ने का रास्ता चुना है, मैं अभी शादी नहीं करूंगी, वह मार्च 2007 मे पामेड़ दस्ते में भर्ती हो गईं। कामरेड को दस्ता में भर्ती हुए 10 महीने ही हुए थे कि उनकी बदली 9वीं पलटन में तय हुई। पार्टी में रहते हुए स्कूली पढ़ाई और सैनिक नियमों को सीख रही थीं। 18 मार्च को ग्रेहाउंड्स पुलिस के साथ हुई मुठभेड़ में नौजवान कामरेड सन्नी शहीद हो गईं। अपनी जान जाने तक अपनी बंदूक से दुश्मन पर फायरिंग झोंकती रहीं। ऐम्बुश में जाते समय कामरेड सन्नी ऐम्बुश पार्टी के ए सेक्शन की सदस्या थीं। अपने बैच के साथ मजबूती से, बिना पीछे मुड़े जी-जान एक कर बहादुरी से लड़ीं और शहीद हुईं। ऐसे वीर कामरेडों पर पूरी पार्टी को नाज है। लाल सलाम कामरेड सन्नी!

कामरेड पूनेम जोगी

दक्षिण बस्तर डिवीजन, जिला बीजापुर, तहसील भोपालपटनम के पामेड़ एरिया में कामरेड पूनेम जोगी ने गुण्डम गांव में पुनेमीरा परिवार में जन्म लिया था। वह मात्र 17 वर्ष की किशोरी थीं। कामरेड पूनेम जोगी के पिता कामरेड पूनेम सन्नू किसान संगठन के स्थानीय नेता हैं। अपने बाप को जनता के लिए काम करते देख कामरेड जोगी जल्द ही संगठन के कामकाज में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेने लगी थीं। जन मिलिशिया में भर्ती होकर गांव में सन्तरी पोस्ट पर तैनात रहना, गांव के आसपास गश्त पर जाना और प्रतिरोधात्मक कार्यवाहियों में भाग लेना कामरेड पूनेम जोगी ने सीख लिया था। वह बड़ी होशियारी से अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह करती थीं। इस कारण उन्हें एरिया कमेटी ने 9वीं पलटन में बदली करने का निर्णय लिया। छोटी उम्र में ही उन्होंने नजवजनवादी क्रांति के लिए अपनी जान को न्यौछावर कर दिया। छोटी सी उम्र में कामरेड जोगी ने बहुत बड़ा सपना देखा था और उसके लिए अपनी जान देने से भी पीछे नहीं हटीं। कामरेड जोगी से पीएलजीए के हर सैनिक को सीखना है। आइए, प्रिय कामरेड जोगी के सपनों को पूरा करने का कार्यभार को अपने कंधों पर ले लें।

कामरेड बायी

कामरेड बायी कोंटा तहसील, जेगुरगोंडा एरिया के रायगुडेम गांव के दोरला परिवार में जन्म ली थीं। 21 साल की कामरेड बायी अपने मां-बाप, एक छोटी बहन व तीन छोटे भाइयों को घर छोड़कर दस्ता में भर्ती हुई थीं। उनका परिवार शुरू से ही गरीबी का शिकार रहा है। दोरला परिवार में जन्मी कामरेड बायी क्रांतिकारी राजनीतिक माहौल में बढ़ी। दस्ता में शामिल होने के लिए वह वर्षों से बड़े होने का इंतजार कर रही थीं। जब उसे दस्ता की सदस्या के तौर पर शामिल किया गया तो उन्हों अपार खुशी हुई। उनके बड़े भाई भी पार्टी में शामिल हुए लेकिन वापस घर चले गए। लेकिन वो पार्टी की राजनीति के साथ दृढ़ता से जनता के समर्थन में खड़ी रहीं और अपने भाई का पार्टी छोड़ कर जाने का विरोध किया। अक्टूबर 2006 में ही उनकी बदली पलटन-9 में हुई थी। पलटन में रहकर उन्होंने राजनीतिक रूप से अपनी चेतना और सैनिक ज्ञान को बढ़ाया।

कामरेड बायी 18 मार्च को कंचाल में वीरतापूर्वक लड़ते हुए शहीद हुईं। कामरेड बायी को जन-जन का लाल सलाम।

कामरेड हिड़माल (जयराम)

कामरेड हिड़माल (जयराम) दंतेवाड़ा जिले के कोंटा तहसील के गांव तुम्मल के होनहार नौजवान थे। जीवनयापन के लिए उनका परिवार आंध्र के खम्मम जिला, चिंतूरू मंडल में जाकर रहता था। पार्टी के संपर्क में आने से मई 2005 में वह दस्ते में भर्ती हुए।

उन्होंने सदा पार्टी के नियमों को दृढ़ता से पालन करते हुए काम किया। कितनी भी समस्या आने से पार्टी के कामकाज को बहुत ही ईमानदारी और मेहनत से पूरा करते थे। दस्ते के केन्द्र बिंदु की तरह काम करते हुए सदा दस्ते में पाइलट सदस्य की भूमिका निभाते थे।

शबरी एरिया, पूर्व गोदावरी, खम्मम एरिया के तमाम रास्तों पर उनकी जबरर्दस्त पकड़ बनी हुई थी। हमलों में मजबूती के साथ डटकर मुकाबला करना उनका समान्य स्वभाव था। सैनिक ज्ञान को बढ़ाने के लिए उन्होंने सामूहिक रूप से कामरेडों के साथ मिलकर काफी प्रयास किये। कामरेड जयराम कंचाल में दुश्मन की गोलियों से शहीद हुए। आइए कामरेड हिड़माल की शहादत को ऊंचा उठाए रखें।

कामरेड मुचाकी सन्नाल (सुदर्शन)

कामरेड मुचाकी सन्नाल (सुदर्शन) का जन्म दंतेवाड़ा जिले के पामेड़ रेंज के गांव तुमड़ेम में हुआ था। मात्र 18 वर्ष के किशोर कामरेड सुदर्शन एक गरीब आदिवासी मां-बाप की संतान थे। तीव्र होते जनयुद्ध में ही कामरेड सन्नाल का जन्म हुआ था और संघर्षों को देखते-देखते उनमें भाग लेते बचपन बीता। गांव के जन मिलिशिया में रहते हुए दुश्मन को हैरान-परेशान कर देने वाली कई घटनाओं में भागीदार बने थे। जन मिलिशिया में काम करते हुए वह वेंकटापुर एरिया में दस्ता के सदस्य बने थे।

सामूहिक कामों में भाग लेना, अनुशासन का दृढ़ता से पालन करना और उनको सौंपी गई जिम्मेदारियों को अच्छे ढंग से निभाना कामरेड सन्नाल के लाजवाब गुण थे। शहीद होने से पहले कामरेड सन्नाल एक महीने से कामरेड सागर के गार्ड के तौर पर अपनी जिम्मेदारी निभा रहे थे। उन्होंने अपनी जिम्मेदारी को निभाते हुए कामरेड सागर के साथ ही अपने प्राणों को देश की जनता के लिए न्यौछावर किया। कामरेड सन्नाल का जीवन सदा लड़ने वालों को प्रेरणा प्रदान करता रहेगा।

कामरेड कारम हुंगाल

बीजापुर जिले के पामेड़ एरिया में बिडियाबाटूम गांव है, जहां उन्होंने 23 साल पहले जन्म लिया था। उनके आदिवासी माता-पिता स्थानीय लौह कारीगर हैं। वह अपने मां-बाप के साथ खेती-बाड़ी

के सहारे जीवनयापन करते थे। कामरेड हुंगाल की शादी घर में ही हुई थी। उनके पिता जेगुरगोंडा एरिया के कमरगुडेम गांव से भूमि के आभाव में बिडिया गांव में आकर रहने लगे थे। जब वह छोटे थे तभी से बाल संगठन में काम करने लगे। थोड़े बड़े होने पर स्थानीय सीएनएम की टीम में शामिल हुए, जिसमें उनका अच्छा विकास हुआ। कामरेड हुंगाल सितंबर 2006 में पार्टी में भर्ती हुए और राजनीतिक चेतना को बढ़ाया। साथ रहने वाले कामरेडों के साथ वह हंसी-खुशी से रहते थे। कामरेड हुंगाल ने सांस्कृतिक मोर्चे पर रहते हुए सीएनएम को मजबूत करने के सराहानीय प्रयास किए। 2006 से उन्होंने पामेड़ एरिया के उसूर एलओएस में सीएनएम में पेशेवर क्रांतिकारी की तरह काम करना शुरू किया था। अक्टूबर 2007 में सीएनएम के स्थानीय अधि वेशन में उन्हें डिवीजनल कमेटी सदस्य की हैसियत से चुना गया। कामरेड एक के बाद एक स्तर पर विकास करते गए। सांस्कृतिक सेना में रहते हुए उन्होंने हर कार्यक्रम में भाग लेकर जनता की राजनीतिक चेतना बढ़ाने के लिए मजबूती के साथ काम किया। सलवा जुडूम दमन अभियान के खिलाफ उन्होंने नाटक व गीतों के माध्यम से जनता में प्रचार किया और उसे हराने के लिए जनता को प्रोत्साहित किया व हिम्मत बंधाई। जनता को आज भी कामरेड हुंगाल के गले से निकले जोशपूर्ण गीत याद हैं। सांस्कृतिक सेना के इस योद्धा ने 18 मार्च को कंचाल में ग्रेहाउंड्स के खिलाफ अपनी बंदूक से कई प्रहार किए। कामरेड हुंगाल को दुश्मन की गोली लगी जिससे वह मौके पर ही शहीद हो गए। इसके साथ ही जनता ने एक सशक्त सांस्कृतिक योद्धा को खो दिया। कामरेड हुंगाल के गीत सदा जनता के कानों में प्रेरणा बनकर गूंजते रहेंगे। कामरेड हुंगाल अमर हैं।

कामरेड कोवासी विमला

पश्चिम बस्तर डिवीजन, जिला बीजापुर के भैरमगढ तहसील में गांव जांगला में कामरेड कोवासी विमला ने जन्म लिया था। कामरेड विमला 21 वर्ष की नौजवान कामरेड थीं। बचपन में ही उनकी माता का निधन बीमारी के कारण हो गया था। जब वह छोटी थीं तो बाल संगठन की सदस्या बनीं। जन जागरण के नाम पर जब सरकार ने बड़े पैमाने पर दमन अभियान चलाया था तो वह तब छोटी ही थीं। गांव को जलाया जा रहा था और लोगों को शिविर मे ले जाया जाता था, तब गांव के काफी नौजवान अपने गांव की रक्षा के लिए जन मिलिशिया में संगठित हो रहे थे। तब वह भी उनमें से एक थीं। जनवरी 2006 में उन्हें पश्चिम बस्तर से दक्षिण बस्तर डिवीजन में पामेड़ दस्ते में स्थानांतरित किया गया था। 2007 में कामरेड विमला को पार्टी की सदस्यता प्राप्त हुई।

कामरेड विमला पार्टी के अंदर ही पढ़ना-लिखना सीखी थीं। वह पार्टी के अनुशासन पर चलने वाली एक आदर्श कामरेड थीं। वह पार्टी की अनुमति से अपने घर वालों से मिलकर वापस अपने दस्ते में मिलने आ रही थीं कि कंचाल में ग्रेहाउंड्स के साथ मुठभेड़ हुई। उस समय वह गांव में थीं। ग्रेहाउंड्स ने उसे निहत्थे पकड़कर गोली मारकर हत्या की। निडर कामरेड विमला सदा जनता के दिलों में बसी रहेंगी।

कामरेड करटम हड़माल

यह कंचाल गांव के एक साधारण गरीब किसान थे। कंचाल में हत्यारे ग्रेहाउंड्स ने उन्हें घर से पकड़ कर जंगल में ले जाकर मौत के घाट उतार दिया। शहीद कामरेडों की किट से गुरिल्ला वर्दी निकाल कर उनके मृत शरीर पर पहनाकर व पास पुरानी राइफल रखकर उसकी फोटो को अखबारों में एक नक्सलवादी के तौर पर प्रस्तुत किया गया। वह अपने गांव में अपने परिवार के साथ मिलकर खेती-बाड़ी के सहारे गुजारा करने वाले किसान थे। 34 वर्षीय साधारण किसान कामरेड हड़माल खूंखर ग्रेहाउंड्स हत्यारों की दरिंदगी का शिकार बने। कामरेड हडमाल को हम क्रांतिकारी श्रद्धांजली अर्पित करते हैं।

कामरेड माडाल

कामरेड माडाल भी गांव कंचाल के ही निवासी थे। 40 वर्षीय माडाल धनी किसान थे, जो अपने परिवार के साथ गांव में आराम से जिंदगी बसर कर रहे थे। 2007 से वह स्थानीय किसान संगठन की कमेटी में भी काम कर रहे थे। जनता के साथ उनका व्यवहार सम्मानजनक रहता था। धीरे-धीरे वह पार्टी राजनीति को आत्मसात कर रहे थे। अपने घर के काम के साथ साथ पार्टी द्वारा सौंपे गए काम को भी वह जिम्मेदारी से पूरा करते थे। धनी परिवार से होने के बाद भी वह गरीब किसानों की मदद के लिए हमेशा तैयार रहते थे। कामरेड माडाल को ग्रेहाउंड्स हत्यारों ने पकड़ कर ठण्डे दिमाग से गोली मारकर खत्म कर दिया। लेकिन गांव की जनता के दिलों से माडाल को खत्म नहीं किया जा सकता। कामरेड माडाल सदा अमर रहेंगे।

बूढ़ी मां अवलम लच्छी

60 वर्षीय बूढ़ी मां अवलम लच्छी अपने चार बेटों व दो बेटियों के साथ गांव पालागूडेम में जीवनयापन करती थीं। उनका परिवार एक मध्यम वर्गीय किसान परिवार है। जब भी पार्टी कामरेड उनके गांव में जाते तो वह उन्हें अपने बच्चों की तरह प्यार करती थीं। उस दिन जंगल में वह घास काटते हुए, छींदी पेड़ से खाने के लिए इस्तेमाल होने वाले कीड़े निकालने गई हुई थीं। जब वह गोलियां चलने की आवाज सुनीं तो बहुत घबरा गई थीं। पुलिस ने जब उन्हें देखा तो उन दरिंदों ने उस बूढ़ी मां पर भी तरस नहीं खाया और मौत के घाट उतार दिया। इंसानियत को तार-तार करते हुए उनके चहरे को बुरी तरह बिगाड़ कर बोरी में भर दिया ताकि उनको पहचाना न जा सके।

बूढ़ी मां अवलम लच्छी की मौत के जिम्मेदार ग्रेहाउंड्स व एसआइबी के हत्यारों को जनता कभी माफ नहीं करेगी। तमाम जनवाद पसंद लोगों को ऐसी हत्याओं के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए। 'प्रभात' 60 वर्षीय बूढ़ी मां अवलम लच्छी को सिर झुकाकर लाल सलाम पेश करती है। ✶

संघर्षों और सभा-सम्मेलनों की कुछ रिपोर्टें

दक्षिण बस्तर

तेन्दूपत्ता की मजदूरी बढ़ी

2008 साल तेन्दूपता की दर प्रति गड्डी 95 पैसा बढ़ाने की मांग को लेकर किस्टारम, पामेड़, जेगुरगोंडा, कोंटा एरिया में अलग-अलग कमेटियों का गठन किया गया, जिनके नेतृत्व में व्यापक जनता को लेकर संघर्ष किया गया। इसके तहत कई जगहों पर आमसभाओं का आयोजन कर ठेकेदारों को तलब किया गया। जब तक ठेकेदारों ने जनता की मांग नहीं मानी जनता ने तेंदूपत्ता तोड़ने से मना कर दिया। अंततः ठेकेदारों को जनता की मांगों के आगे झुकना ही पड़ा।

जनता द्वारा संघर्ष कर प्राप्त की गई दरें

1. प्रति गड्डी - 95 पैसे
2. फड़ मुंशी का वेतन - 4200 रु.
3. वाचर का वेतन - 3100 रु.
4. उल्टाई-पल्टाई - 12 रु. (प्रति 1000 गड्डी)
5. पानी प्रति कावड़ - 12 रु.
6. जमीन किराया - 1500 रु.
7. ढुलाई प्रति बोरा - 100 रु.

जनता ने दलाल पूंजीपति कम्पनी एस्सार के 22 ट्रकों को जलाया

जन पितुरी सप्ताह के दौरान 9 जून को पीएलजीए व जन मिलिशिया ने कई हथियारबंद कार्रवाइयों को अंजाम दिया जिसमें दंतेवाड़ा जिला में दलाल पूंजीपति कम्पनी एस्सार के 22 ट्रकों को आग के हवाले करना भी एक है। 200 की संख्या में पहुंचे जन मिलिशिया व पीएलजीए के योद्धाओं ने किरंदूल के नजदीक इसे निशाना बनाया। और 'दलाल एस्सार को बस्तर से मार भागाओ!', 'जल-जंगल-जमीन पर हक आदिवासी जनता का है' के नारे लगाए। गौरतलब है कि इसके पहले अप्रैल के आखिरी सप्ताह में भी इसी तरह की एक बड़ी कार्रवाई की गई थी जिसमें इस कम्पनी के 50 से ज्यादा ट्रक जला दिए गए थे।

उत्तर गड़चिरोली डिवीजन

झूठी आजादी का पर्दाफाश किया

उत्तर गड़चिरोली डिवीजन के कसनसूर व सूर्जागढ़ एरिया के 12 गांवों की प्राथमिक, माध्यमिक व हाई स्कूलों में जन मिलिशिया व पीएलजीए द्वारा झूठी आजादी विरोध दिवस मनाए जाने का समाचार है। 15 अगस्त को अलग-अलग जगह काले दिवस के रूप में किए गए इन आयोजनों में जनता ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। संख्या के हिसाब से 575 पुरुष, 245 महिलाएं और 215 स्कूली छात्रों ने भाग लिया। कुल भागीदारी 1035 लोगों की रही।

कई दिनों पहले ही जन मिलिशिया की सक्रियता से गांव-गांव में खूब प्रचार हुआ। रोड़ पर के गांवों में दीवारी लेखन किया गया। 405 पोस्टर व कुछ बैनर लगाए गए। वक्ताओं ने अपने भाषणों के माध्यम से आजादी की असलियत को जनता के सामने खोल कर रखा।

शहीद सप्ताह का आयोजन

उत्तर गड़चिरोली डिवीजन के कसनसूर-सूर्जागढ़ एरिया में जनताना सरकारों के अंतर्गत लगभग 20 गांवों में शहीद स्मृति सभाओं का आयोजन किया गया। शहीद सप्ताह से पहले जन मिलिशिया व सीएनएम की टीमों ने दुश्मन को हैरान-परेशन करने वाले अभियान को चला कर दुश्मन की नींद उड़ा दी। रोड पर, गांव-गांव में दीवारी लेखन, पोस्टर लगाना, बैनर टांगना किया गया। इस दौरान 245 पोस्टर लगाए गए, पुराने शहीद स्मारकों को पुनः सजाया गया व पुलिस द्वारा क्षतिग्रस्त किये गए स्मृति स्तंभों को पुनः खड़ा किया गया। पूरे इलाके में 1662 पुरुषों व 483 महिलाओं ने सभाओं में भाग लिया।

पीएलजीए बलों ने भी अलग-अलग गांवों में जनता के साथ मिलकर शहीदों को सैनिक सम्मान के साथ श्रद्धांजली अर्पित की। दुश्मन द्वारा शुरू किए गए तीव्र दमन के बाद भी जनता व पीएलजीए बलों ने शहीदों की याद में सफल श्रद्धांजली सभाएं आयोजित कीं और उनके नक्शेकदमों पर चलने का प्रण दोहराया।

पीएलजीए की उत्पादन में भागीदारी

अगस्त माह में उत्तर गड़चिरोली के कसनसुर एरिया में पीएल-3 व एलजीएस मिलकर जनता के साथ उनके उत्पादन के कामकाज में शामिल हुए। सेकंडरी फोर्स की कुल संख्या 30 के करीब थी जिन्होंने 9 जगहों पर फसल की बोआई करने में जनता को सहयोग दिया।

दक्षिण गड़चिरोली डिवीजन

शहीद सप्ताह मना

दक्षिण गड़चिरोली डिवीजन के अंतर्गत अहेरी एरिया कमेटी के तहत शहीद सप्ताह का पूरे एरिया में सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। 3 गांवों के अंदर सैकड़ों की संख्या में जनता ने सभाओं में भाग लिया। स्मृति सभा में लाल झंडा फहराकर कामरेड चारू मजूमदार, कामरेड कन्हाई चटर्जी समेत पार्टी कतारों में अब तक शहीद हुए साथियों को श्रद्धांजली अर्पित की गई व दो मिनट का मौन धारण किया गया। डिवीजन में हाल ही में शहीद हुए वीर योद्धाओं कामरेड जग्गु, चैतु, राधा, कुम्मे, रजिता, लालू, समीर के जीवन पर प्रकाश डाला गया। उनके गुणों को जनता के बीच प्रचारित किया गया। उनके अधूरे सपनों को मंजिल तक पहुंचाने के लिए आम जनता से आव्हान करते हुए वक्ताओं ने जनता को संबोधित किया।

इसी तरह जन संगठनों के नेतृत्व में भी जनता ने कई जगह शहीद स्मृति सभाएं कीं। दो जगहों पर शहीदों के नाम पर स्तुप बनाए गए, जिनमें एक दामरंचा पुलिस थाना के नजदीक और गांव मेन्ड्रा में कामरेड अखिला की याद में। पेरिमिलि पुलिस थाना के निकट भी एक स्मारक का निर्माण किया गया। इस दौरान 300 पोस्टरों के माध्यम से शहीद सप्ताह का संदेश जनता में पहुंचाया गया और स्थानीय सीएनएम ने अपने गीतों द्वारा शहीद गाथाओं का प्रचार किया।

मानपुर डिवीजन

8 मार्च के मौके पर सभा संपन्न

मानपुर एरिया में क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन की रेंज कमेटी और स्थानीय सांगठनिक दस्ते ने मिल कर आठ मार्च पर एक आम सभा का आयोजन किया जिसमें करीब 1460 महिला-पुरुषों ने भाग लिया। पितृसत्ता के साथ-साथ साम्राज्यवाद व सामंतवाद का खात्मा करने के लिए अपनी जान को कुरबान करने वाली वीरांगनाओं को दो मिनट मौन धारण कर श्रद्धांजली अर्पित करते हुए सभा की शुरूआत हुई।

सभा को तीन महिला नेत्रियों ने संबोधित किया। सभा को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने जोर दिया कि भारत की नव जनवादी क्रांति को सफल बनाने के लिए जारी जनयुद्ध में अपनी सक्रिय भूमिका अदा करते हुए ही महिलाओं को हर क्षेत्र में पितृसत्ता के खिलाफ भी जोरदार संघर्ष करना चाहिए। महिला मुक्ति सर्वहारा मुक्ति से जुड़ी हुई है। इसलिए बिना महिला के क्रांति नहीं और बिना सर्वहारा मुक्ति के महिला मुक्ति नहीं।

सभा को सफल बनाने के लिए करीब 70 लोगों से 5 टीमें गठित की गई थीं, जिन्होंने सांस्कृतिक कार्यक्रमों, 447 पोस्टरों, 18 बैनरों आदि से जनता में व्यापक प्रचार अभियान चलाया और भारी तादाद में लोगों को सभा में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया।

नंदीग्राम जनता के समर्थन में सभा

मानपुर एरिया में 14 मार्च 2008 को पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के आव्हान पर जनसंहार विरोधी सप्ताह के अंतर्गत एक आम सभा का आयोजन किया गया व नंदीग्राम की जनता के संघर्ष के स्वर से स्वर मिलाया गया। नंदीग्राम, कलिंगनगर व विस्थापन के विरोध में अब तक मारी गई तमाम जनता को लाल श्रद्धांजली अर्पित की गई व सामाजिक फासीवादी सीपीएम के नेतृत्व वाली बंगाल सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की गई।

26 जनवरी को काला दिवस मना

मानपुर इलाके की जनता ने 26 जनवरी झूठे गणतंत्र दिवस के मौके पर उसे काले दिवस के रूप में मनाया और तिरंगे झंडे के स्थान पर विरोध स्वरूप काला झंडा चढ़ाया। 3 जगहों पर आमसभाएं संगठित की गईं, जिनमें 31 गांव की 1500 से ज्यादा जनता ने अपनी जोरदार उपस्थिति दर्ज करवाई।

सभा की अध्यक्षता एलओएस के कमांडर ने की और कई अन्य वक्ताओं ने सभा में झूठे गणतंत्र के विरोध में अपने ओजपूर्ण भाषण दिये। वक्ताओं ने देश में विकास के नाम पर हो रहे विनाश व सेज के नाम पर बनाए जा रहे विदेशी भूखंडों पर अपनी बात केन्द्रित की और कहा कि क्या यही आजादी है? जिस देश में आज भी हजारों बहुराष्ट्रीय कंपनियां दोनों हाथों से लूट मचा रही हों, जिस देश के संसाधनों को दानवी कंपनियां खुलेआम लूट रही हों और उस देश के राजनेता उनके लिए लाल कालीन बिछा रहे हों तो क्या उसको आजादी कहा जा सकता है? वक्ताओं ने यूपीए सरकार की साम्राज्यवाद परस्त नीतियों पर कड़े प्रहार किए। केन्द्र सरकार को आड़े हाथों लेते हुए एक वक्ता ने मनमोहन को बुश का यार करार दिया और परमाणु करार पर मनमोहन की नीतियों को देश को बेचने की नीति बताया।

इन रैलियों के लिए 5 प्रचार टीमों ने 470 से ज्यादा पोस्टरों, बैनरों व 26 जनवरी पर निकाले गए पर्चों के साथ व्यापक प्रचार अभियान चलाया था, जिस कारण मानपुर एरिया की जनता ने बड़े पैमाने पर सभाओं में शिरकत की।

महान भूमकाल दिवस पर जोरदार जनसभा

10 फरवरी 2008 महान भूमकाल दिवस 'माड़िया राज स्थापना दिवस' को मानपुर एरिया में इस बार बड़े स्तर पर मनाने का निर्णय उस इलाके की कमेटी ने लिया था। 10 फरवरी को 35 गांवों के 800 पुरुषों व 700 के करीब महिलाओं ने मिलकर एक बड़ी रैली और आमसभा को सफल बनाया।

सभी जन संगठनों, स्थानीय सांगठनिक दस्तों ने मिलकर एक जोरदार आमसभा का आयोजन किया। आम सभा से पहले कई किलोमीटर की एक रैली निकाली गई। लाल झंण्डों, बैनरों से सभा स्थल लाल हो उठा। रैली की अगवाई हरी व लाल ड्रेस पहने, पांव में घुंघरू बांधे सीएनएम की टीम नाचती-गाती हुई कर रही थी। लोग जब एक स्वर में नारा देते थे तो पूरा जंगल गूंज उठता था।

रैली के बाद हुई आमसभा कई घंटे तक चली जिसमें कई वक्ताओं ने जोशपूर्ण भाषण दिए। वक्ताओं ने कहा कि महान भूमकाल संग्राम की विरासत को जारी रखते हुए आज दण्डकारण्य की आदिवासी जनता की लड़ाई पूरी भारत की जनता की लड़ाई बन गई है। आज यह संग्राम भारत की कम्युनिस्ट पार्टी की नेतृत्व में पूरे देश में मजदूर-किसानों का सच्चा राज लाने के लिए लड़ी जा रही है और शोषक-शासक वर्ग सलवा जुडूम जैसे फासीवादी अभियान चलाकर उसे खून की नदियों में डुबो देना चाहते हैं। आज पूरी आदिवासी जनता के साथ पूरे देश की जनता के सामने एक ही रास्ता बचा है कि अपने अस्तित्व व सही आजादी के लिए देश में चल रहे लोकयुद्ध में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दे। इस अवसर पर भूमकाल के नायकों को लाल श्रद्धांजली अर्पित की गई। बीच-बीच में सीएनएम की टीम ने अपने नाच-गानों के साथ जोरदार प्रस्तुति दी। ★

पीएलजीए के शौर्यपूर्ण कारनामों का चल पड़ा सिलसिला....

चुनाव से पहले सीआरपीएफ को करारा झटका - 12 जवान ढेर

20 अक्टूबर 2008 को बीजापुर-भोपालपटनम के बीच गश्त पर निकले सीआरपीएफ की 170वीं बटालियन के 45 जवानों पर कोंगापल्ली गांव के नाले के पास पीएलजीए ने घात लगाकर एक जबर्दस्त हमला किया, जिसमें सीआरपीएफ के 12 जवान मौके पर ही ढेर हो गए और 6 घायल हुए, जिनको हेलिकॉप्टर से उपचार के लिए ले जाया गया। लगभग दिन के 1.30 बजे यह हमला हुआ था। चारों ओर घात लगाए बैठे छापामारों ने पहले तो बारूदी सुरंग का विस्फोट किया और बाद में जोरदार गोलीबारी की। पीएलजीए ने जबरर्दस्त घेराबंदी कर चुनाव से पहले अर्ध सैनिक बलों को करारा झटका पहुंचाया। गौरतलब है कि इस पूरे क्षेत्र को कार्पेट सेक्यूरिटी के नाम से जगह-जगह पुलिस थाने व कैम्प बिठाकर एक बड़ी सैन्य छावनी में बदल दिया गया है। हर 5-10 किलोमीटर में एक थाना/कैम्प है। पीएलजीए ने जनता की सक्रिय मदद से दुश्मन के कई कैम्पों के बीच में इस हमले को सफलता से अंजाम दिया। इसके साथ ही पुलिस बल के कई आधुनिक हथियारों पर भी कब्जा कर लिया, जिनमें एके-47, मशीनगन और 2 इंच मोर्टार शामिल हैं। हांलाकि रेडियो समाचारों में बताया गया है कि इसमें पीएलजीए के दो सैनिक भी शहीद हुए हैं, लेकिन इसकी पुष्टि अभी नहीं हो पाई है। पीएलजीए की तरफ हुए हताहतों की विस्तृत जानकारी हम अगले अंक में देंगे।

कुछ अन्य कार्रवाइयों का लेखा-जोखा

- 19 अप्रैल 2008 को जेगुरगोंडा एरिया में पीएलजीए द्वारा बिछाए बूबीट्रैप में रोड ओपनिंग पार्टी के दो जवान बुरी तरह घायल हुए। गश्त पर निकले इन सीआरपीएफ जवानों को वापस वहीं से दुम दबाकर भागना पड़ा।
- 24 जुलाई 2008 को जेगुरगोंडा से अरनपुर जाने वाली सड़क पर कोया भूमकाल मिलिशिया द्वारा बिछाए गए एक बम के फट जाने से थानेदार जयराम मंडावी बुरी तरह घायल हो गए। जयराम मंडावी जेगुरगोंडा शिविर में तैनात है, जो जनता के बीच दरिंदगी का पर्याय बना हुआ है। जयाराम मंडावी के घायल होने के समाचार से शिविर की जनता ने राहत की सांस ली।
- 19 ... 2008 - पीएलजीए बल जब रोड रोककर एक जीप की तलाशी ले रहे थे तो उनमें से एक सलवा जुडूम में एसपीओ बना ग्राम पेंटा का मड़काम कोसा निकला, जिसे वहीं मौत के घाट उतार दिया गया।
- 22 ... 2008 - दोरनापाल से जेगुरगोंडा पुलिस कैंप के लिए सौर उर्जा के लिए खंबा (पोल) ले जा रही गाड़ी को जन मिलिशिया ने जब्त कर उसे आग के हवाले कर दिया।

तीर-धनुषों से बचाया जनता को

18 मई 2008 - दक्षिण बस्तर डिवीजन के जेगुरगोंडा के पास अचगट्टा गांव है। उस गांव के तालाब से ग्रामीण मछली पकड़ रहे थे। जेगुरगोंडा से आए जुडूम गुंडे जनता को वहां से मार-मार कर भागा रहे थे। उसी वक्त एक दस्ता सदस्य और 4 जन मिलिशिया सदस्य तीर-धनुष लिए वहां से कुछ अन्य काम के लिए गुजर रहे थे। जब उन्होंने ऐसा होते देखा तो उनसे रहा न गया और उन गुंडों पर तीरों की बौछार कर दी। 10 मिनट तक तीर-धनुष से मुठभेड़ होती रही। तीन गुंडों को तीर लगे जिनमें से एक तो वहीं पर ढेर हो गया और 2 घायल हो गए। बाकी उनको उठाकर भाग खड़े हुए। बाद में पता चला शिविर में पहुंचने के बाद एक और घायल भी मृत्युलोक पहुंच गया। इस घटना से जनता व जन मिलिशिया के मनोबल में और बढ़ोत्तरी हुई व जनता ने जन मिलिशिया का अभिनन्दन किया।

दूसरे गुरिल्ला जोनों से ...

झाझा में शानदार रेइड 44 हथियारों पर कब्जा!

पीएलजीए ने 14 अप्रैल 2008 को बिहार के जमुई जिले के झाझा में रेलवे पुलिस (जीआरपी) के थाने पर जबर्दस्त हमला कर 44 हथियारों पर कब्जा कर लिया और 5 पुलिस वालों का सफाया कर दिया, जिसमें एक सब इंसपेक्टर भी शामिल था। और इस हमले में कई पुलिस वाले घायल भी हुए।

पुलिस थाने से पीएलजीए ने 44 हथियारों को अपने कब्जे में लिया, जिसमें 27 त्रीनॉटत्री राइफलें, 6 एसएलआर और 2 कारबाइन शामिल हैं। शाम के 6.30 बजे पर हुए इस हमले में रेलवे टिकटघर और रेलवे पुलिस चौकी को भी निशाना बनाया गया।

झारखण्ड में भूतपूर्व मंत्री का सफाया

जनता दल (युनाइटेड) के प्रतिक्रियावादी नेता और भूतपूर्व कल्याण मंत्री रमेशसिंह मुंडा को बुंडू के एसएस हाईस्कूल में 11 जुलाई को पीएलजीए के गुरिल्लों ने मौत के घाट उतार दिया। यह जगह राजधानी से केवल 55 किलोमीटर की दूरी पर ही है। इसके साथ उसके दो बॉडी गार्ड और एक आम नागरिक भी मारा गया।

मुंडा ने जब अपना भाषण शुरू ही किया था कि हथियारबंद गुरिल्लों ने धावा बोल दिया। हाल के दरवाजे पर पहली फायरिंग में ही उसके बाडी गार्डों का सफाया हो गया। तभी गुरिल्ले आगे बढ़े और भूतपूर्व मंत्री को निशाना बनाया। रमेश मुंडा एक कट्टर जनविरोधी तत्व था। ★

(...अंतिम पृष्ठ का शेष)

कॉमरेडो,

आज विश्व पूंजीवादी व्यवस्था असामान्य व अभूतपूर्व संकट का सामाना कर रही है। उसमें उथल-पुथल मची हुई है। यह संकट और अस्थिरता इस वर्ष के विशिष्ट लक्षण के रूप में सामने आया। यह स्थिति इतनी खराब है कि दूसरे विश्व युद्ध के बाद से कभी नहीं देखी गई। खास तौर पर रूसी गठबंधन व सोवियत संघ के पतन के बाद दुनिया के बुनियादी अंतरविरोध इतने तीखे कभी नहीं हुए थे। विश्व पूंजीवादी संकट जितना गहरा हुआ और विश्व के बुनियादी अंतरविरोध जितने तीखे हुए हैं, विश्व सर्वहारा, उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं और जनता पर पूंजी का हमला और प्रतिक्रिया भी उतने ही तीखे हुए हैं जो अभूतपूर्व है। इस हमले और प्रतिक्रिया के खिलाफ विश्व सर्वहारा, उत्पीड़ित राष्ट्रीयताएं और जनता अभूतपूर्व स्तर पर विभिन्न तरीकों से आन्दोलनरत और संघर्षरत हैं। विश्व जनता की स्थिति फूटने को तैयार ज्वालामुखी जैसी बनी है। विश्व पूंजी और प्रतिक्रियावाद की सरगना अमेरिकी साम्राज्यवादी महाशक्ति दुनिया भर में व्यापक जनता पर बेहद क्रूरता से हमला कर रही है जोकि अभूतपूर्व है। वह व्यापक जनता से घिरी हुई है और तीव्र प्रतिरोध का सामना कर रही है। अमेरिकी महाशक्ति की स्थिति इस दौरान इतनी बुरी हुई है जो असामान्य और अभूतपूर्व है। यह है दुनिया का हाल - जो हमारी पार्टी के चौथे स्थापना दिवस के बाद एक साल में उभर कर आया।

इस स्थिति का प्रतिबिम्ब ही है हमारे देश के आर्थिक व राजनीतिक हालात, खाद्यान्न पदार्थों, रोजमर्रा की चीजों व पेट्रोलियम उत्पादों की कीमतों और मुद्रास्फीति में बढ़ोतरी, शेयर बाजारों का पतन, बेरोजगारी व भ्रष्टाचार में इजाफा, अमेरिका से परमाणु समझौता, लाखों मूलनिवासियों (आदिवासियों) का विस्थापन, शासक वर्गों के बीच अंतरविरोध आदि अभूतपूर्व स्तर पर पहुंच चुके हैं।

माओवादी जनयुद्ध पर, विस्थापन का शिकार मूल निवासियों और किसानों पर, कश्मीरी जनता पर, किसान और मजदूरों आदि व्यापक जनता पर राज्य का प्रति-क्रांतिकारी हमला भी अभूतपूर्व स्तर पर बढ़ा है। कई राज्यों में धार्मिक अल्पसंख्यकों पर हिन्दू फासीवादी ताकतें अभूतपूर्व स्तर पर हमले कर रही हैं। शासक वर्गों ने खुलेआम यह घोषणा की है कि वे 'पोटा' जैसे क्रूर कानून से भी बढ़कर एक काला कानून लाकर भयानक काला शासन लागू करने जा रहे हैं। देश के सभी बुनियादी अंतरविरोध इतने तीखे हो चले हैं कि हाल के सालों में ऐसा कभी नहीं देखा गया। पिछले साल भर के समय में देश में माओवादी गुरिल्ला युद्ध, कश्मीरी जनता का संघर्ष तथा विस्थपित जनता, किसानों, मजदूरों और कर्मचारियों का प्रतिरोध उल्लेखनीय स्तर पर बढ़े हैं जिससे शासक वर्ग घबराए हुए हैं।

हमारी पार्टी के नेतृत्व में विकसित हो रहे जनयुद्ध का दमन करने के लिए शासक वर्गों ने साम्राज्यवाद-प्रायोजित एलआइसी नीति को लागू करते हुए अभूतपूर्व स्तर पर नई-नई साजिशें रची हैं। अत्यंत अमानवीय और क्रूरतम हिंसा और अत्याचारों का प्रयोग कर रहे हैं। अंतहीन साजिशों, षड़यंत्रों और छलकपट का सहारा ले रहे हैं। सैकड़ों क्रांतिकारियों की हत्या कर रहे हैं। जनता की नवोदित जनवादी संस्थाओं, जोकि संगठित हो रही हैं, के उन्मूलन के लिए 'कार्पेट सेक्यूरिटी कैम्पों' का जाल बिछाया व फैलाया जा रहा है। दसियों हजारों पुलिस, अर्ध-सैनिक व सैन्य बलों को भर्ती कर देश भर में तैनात किया जा रहा है। कम्युनिस्ट इंसर्जेन्सी व गुरिल्ला युद्ध-जनयुद्ध का मुकाबला करने की नई रणनीतिक योजना के साथ पुलिस, अर्ध-सैनिक व सैन्य बलों का युद्धस्तर पर आधुनिकीकरण किया जा रहा है जोकि अभूतपूर्व है। और उनका पुनरगठन किया जा रहा है। एक शब्द में कहें तो, संकट से घेरे हुए होने से और देश के चारों ओर बढ़ रहे जन प्रतिरोध की पृष्ठभूमि में लगातार बढ़ रहे जनयुद्ध से भयभीत होने वाले शासक वर्ग क्रांतिकारी आंदोलन पर सभी मोर्चों पर अभूतपूर्व स्तर पर हमला कर रहे हैं। यही है आज की देशीय परिस्थिति की असामान्य, अभूतपूर्व व विशिष्ट तस्वीर। आज देश-दुनिया में बढ़ी हुई और बढ़ रही शानदार क्रांतिकारी परिस्थिति का सदुपयोग करते हुए दुश्मन के हमले को परास्त कर आत्मगत शक्तियों और क्रांतिकारी आंदोलन की रक्षा करने के लिए, एकता कांग्रेस द्वारा निर्देशित लक्ष्यों को हासिल करने के लिए, खासकर दण्डकारण्य और बिहार-झारखंड को आधार इलाकों में बदलने के लिए हमारी पार्टी, पीएलजीए और जन संगठनों की मौजूदा शक्ति व क्षमता नाकाफी होंगी। हमारी पार्टी, पीएलजीए और जन संगठनों की शक्ति व क्षमता को बढ़ाना होगा। पार्टी, पीएलजीए व जनाधार को मजबूत करना होगा। ऐसी कठिन परिस्थितियों में, जबकि क्रांतिकारी आत्मगत शक्तियां विश्व में बढ़ रही क्रांतिकारी परिस्थिति का फायदा उठाने लायक न हों, जबकि नेपाल के माओवादी 'संसदीय लोकतंत्र' के ढांचे में ही जनता का जनवाद और सामाजवादी जनवाद लाने का दिवास्वप्न देख रहे हों, जबकि श्रीलंका में तमिलों का राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन मार खाता जा रहा हो, जबकि पूर्वोत्तर क्षेत्र के कुछेक राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन दुश्मन के षड़यंत्रों के मायाजाल में फंसकर कमजोर पड़ते जा रहे हों, हमारी पार्टी साहस के साथ धारा के विपरीत तैरते हुए जनयुद्ध को तेज कर रही है। यही वजह है कि हमारा क्रांतिकारी आंदोलन भारतीय शासक वर्गों के हमलों का मुख्य निशाना बना है। यही वजह है कि दण्डकारण्य और बिहार-झारखंड दुश्मन के हमले के मुख्य निशाने बने।

ऐसे अन्तरराष्ट्रीय व देशीय हालातों में हमारी पार्टी, पीएलजीए व जन संगठनों की शक्ति, क्षमता व गुण को बढ़ाना खासा अहम मुद्दा बना है। अगर हम मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद को अपने क्रांतिकारी व्यवहार में रचनात्मक ढंग से लागू करते हैं, अगर हम अपने दुश्मन के बारे में और खुद अपने बारे में सही आंकलन कर

पाते हैं, अगर हम दावपेंचों और संघर्ष व संगठन के स्वरूपों में तथा कार्यपद्धति में परिस्थिति के मुताबिक आवश्यक बदलाव कर पाते हैं, अगर हम पार्टी में पनप चुके गलत रुझानों को सुधार पाते हैं, अगर हम अपने जनाधार को मजबूत व व्यापक बनाने के लिए तीव्र प्रयास कर पाएंगे, अगर हम जनता पर विश्वास रखकर उस पर पूर्णत: निर्भर रहते हैं तो हमें अपने नुकसानों को कम करने तथा पार्टी, पीएलजीए और जन संगठनों के गुण को बढ़ाने के कई रास्ते खुल जाएंगे। अभी भी अगर हम अपने नुकसानों को कम कर पाएंगे और गुण को बढ़ा पाएंगे, तो हम मौजूदा परिस्थिति का फायदा उठाने लायक स्तर में विकसित होकर एकता कांग्रेस द्वारा निर्देशित लक्ष्यों को हासिल कर सकेंगे। हमारी पार्टी के पांचवें स्थापना दिवस के मौके पर, आइए हम इसके लिए तैयार होने का संकल्प लें।

नुकसानों को कम करना होगा। नया नेतृत्व तैयार करना होगा। एकताबद्ध पार्टी के गठन के बाद व खासकर एकता कांग्रेस के बाद केन्द्रीय कमेटी सदस्यों से लेकर एरिया कमेटी सदस्यों तक हमें बड़ी संख्या में नेतृत्वकारी शक्तियों का नुकसान उठाना पड़ा है। 1970 के दशक के शुरूआती सालों के नुकसानों से तुलना करके और संख्या की दृष्टि से भी देखा जाए तो आज के नुकसान उससे कहीं ज्यादा हैं।

आंदोलन के विकास के लिए नेतृत्व की भूमिका अहम होती है। इसलिए नेतृत्व को बचाना मुख्य मुद्दा है। दुश्मन अपनी एलआइसी नीति के तहत आंदोलन को कुचलने के लिए नेतृत्व को चिह्नित कर हमला कर उसका सफाया करने या गिरफ्तार करने पर खासा जोर लगा रहा है। दुश्मन में आए इन बदलावों को गहराई से समझकर तेजी से खुद को न बदलना, दुश्मन के छलपूर्ण युद्ध को सही ढंग से नहीं समझना, एक वाक्य में कहा जाए तो युद्ध के लिए सही ढंग से तैयार नहीं होना ही केन्द्रीय व राज्य स्तर के नेतृत्व की गिरफ्तारियों की मुख्य वजह माननी चाहिए। दुश्मन की परिस्थिति और हमारी परिस्थिति को सही ढंग से समझते हुए, अपनी कमजोरियों को दूर कर हमें नेतृत्व के नुकसानों को रोकना चाहिए।

हमें पहुंचे नुकसानों का वास्तविक दृष्टिकोण व द्वंद्वात्मक पद्धति से विश्लेषण करना चाहिए। अपनी गलतियों व खामियों को सुधारने और कमजोरियों को दूर करने के प्रयास करने चाहिए। पार्टी की नेतृत्वकारी कमेटियों, खासकर केन्द्रीय कमेटी और कई राज्य कमेटियों की रचना में आए तीव्र असंतुलन और नेतृत्व की धारावाहिकता की समस्या को हमें गंभीरता से लेना चाहिए। नुकसानों को कम करने के लिए हमें भरसक कोशिशें करते हुए सभी स्तरों में नई शक्तियों में से चुनिंदा कामरेडों को राजनीतिक, सैद्धांतिक, सैनिक व सांगठनिक विषयों में प्रशिक्षित करना चाहिए। राजनीतिक रूप से और व्यवहार में भी जो बेहतर हैं और सुशिक्षित हैं, ऐसे कामरेडों को लेकर ऊपर से नीचे तक की पार्टी कमेटियों में जितना जरूरी है भर्ती कर लेना चाहिए। निचले स्तर से सभी विभागों में पार्टी नेतृत्व कायम करना चाहिए। सभी पार्टी कमेटियों में सैद्धांतिक व राजनीतिक काम को बढ़ाना चाहिए। तीन पद्धतियों की कार्यशैली को सुधार लेना चाहिए। वर्ग संघर्ष में आगे आने वाली पुरोगामी ताकतों से पार्टी सदस्यों की संख्या बढ़ानी चाहिए। नुकसानों को कम करना और नए नेतृत्व को तैयार करना आज के राजनीतिक-सांगठनिक कार्यभारों में बेहद अहम है। दण्डकारण्य में हमें इस कार्यभार को सफलतापूर्वक पूरा करना चाहिए ताकि पार्टी के गुण में बढ़ोतरी की जा सके।

पार्टी में घुसपैठ कर चुके गद्दारों को निकाल बाहर कर पार्टी को शक्तिशाली बनाना चाहिए। दण्डकारण्य के आंदोलन पर केन्द्र सरकार तथा छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र व आंध्रप्रदेश की राज्य सरकारों द्वारा हाल के वर्षों में जारी बर्बरतापूर्ण हमले के फलस्वरूप और एलआइसी की कार्यनीति के तहत हमारी पार्टी और जन संगठनों में कोर्वट घुसाए गए। हाल में कंचाल में हुए काउन्टर ऐम्बुश में हमें जो भारी नुकसान हुआ वो स्थानीय पार्टी में घुस आए गद्दारों की वजह से ही हुआ। दण्डकारण्य के कई अन्य इलाकों में उससे भी बड़े नुकसान होते-होते रह गए। दुश्मन का इंटेलिजेन्स और काउन्टर इंटेलिजेन्स नेटवर्क व्यापक पैमाने पर बढ़ रहा है। ऐसे गद्दारों का उन्मूलन करने के लिए चलाए गए हमारे जवाबी अभियानों में कइयों का सफाया करने और कुछ लोगों को विभिन्न तरीकों से नियंत्रित करने के बावजूद भी यह समस्या अभी भी है। इसलिए ऐसे गद्दारों का उन्मूलन करने की जरूरत है ताकि पार्टी की सुरक्षा की जा सके। पार्टी में ऐसे गद्दार न घुस सकें, इसके लिए भर्ती में वर्ग दिशा का पालन करने के साथ-साथ, भर्ती के पहले रंगरूटों की पारिवारिक व राजनीतिक पृष्ठभूमि पर जरूर नजर रखनी चाहिए। इस मामले में हो रही गलतियों को सुधार लेना चाहिए। जन संगठनों को राजनीतिक आधार पर मजबूत बनाना चाहिए। रंगरूटों के दृष्टिकोण को बदलने तथा राजनीतिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर करने की चेतना बढ़ाने के लिए सैद्धांतिक व राजनीतिक प्रशिक्षण बेहतर बनाना चाहिए। पार्टी में पनप रहे गलत रुझानों को समय पर सुधारना चाहिए। गलत रुझानों के खिलाफ दृढ़ता से पेश आना चाहिए। पार्टी में अनुशासनहीनता को इजाजत नहीं देनी चाहिए। पार्टी में अनुशासन बढ़ाना चाहिए। पार्टी, पीएलजीए, जन संगठनों और जनता में सतर्कता बढ़ानी चाहिए। अपने काउंटर इंटेलिजेन्स को मजबूत करना चाहिए। इस तरह पार्टी को शक्तिशाली बनाना बेहद जरूरी है ताकि पार्टी के गुण को बढ़ाया जा सके।

पार्टी की दैनंदिन गतिविधियों को सक्रिय व रचनात्मक करना चाहिए। दण्डकारण्य में जारी शुत्र दमन, सामाजिक परिस्थितियों की विशिष्टता और पार्टी में मौजूद कुछ खामियों के चलते ग्राम स्तर पर जनता को अपनी दैनिक समस्याओं पर आंदोलित करने में हाल के समय में कमी आई है। ग्राम पार्टी कमेटियां और जनताना सरकार की इकाइयां सक्रिय रूप से काम कर रही हैं, लेकिन जन संगठनों और पार्टी सेलों की सक्रियता में कमी आई

है। यह स्थिति दण्डकारण्य में आधार इलाका बनाने के अपने काम को हानि पहुंचाती है। दुश्मन का सक्रिय प्रतिरोध करने में बाधा डालती है। हमें इस स्थिति को जरूर बदलना होगा। इसके लिए हमें अपने सारे जन संगठनों और जनता में राजनीतिक कार्य को बढ़ाना चाहिए। सभी स्थानीय संगठनों की सक्रियता व विकास को बरकरार रखने के लिए वर्ग संघर्ष को धुरी बनाकर अपने व्यवहार में हो रही खामियों को सुधार लेना होगा। जनताना सरकारों के सक्रिय काम को सुनिश्चित करते हुए उनकी सत्ता को सुदृढ़ बनाना चाहिए। स्थानीय स्तर पर पार्टी के राजनीतिक नेतृत्व को सुदृढ़ व सक्रिय बनाना चाहिए। व्यवहार में उत्पन्न हो रहे गलत रुझानों की समय पर रोकथाम करनी चाहिए। सभी स्तरों में पहलकदमी बढ़ानी चाहिए। पार्टी की दैनंदिन गतिविधियों को सक्रिय और रचनात्मक बनाने का मतलब है पार्टी के गुण में बढ़ोत्तरी करना। हमें यह काम करना चाहिए। यह आज की फौरी जरूरतों में से एक है।

पार्टी में सर्वहारा अनुशासन को बढ़ाना चाहिए। दण्डकारण्य को आधार इलाका बनाने के फौरी लक्ष्य से पीएलजीए को पीएलए और गुरिल्ला युद्ध को चलायमान युद्ध में विकसित करने के हमारे तयशुदा केन्द्रीय कार्यभार को पूरा करना है। इसे सफलतापूर्वक पूरा करना है तो आज पार्टी और पीएलजीए में मौजूद अनुशासन काफी नहीं है। भले ही अनुशासनहीनता आज एक रुझान के तौर पर नहीं हो, लेकिन विभिन्न स्तरों में मौजूद व्यक्तिवाद और संकीर्णतावाद के चलते अनुशासनहीनता प्रकट हो रही है। कम्युनिस्ट पार्टी के राजनीतिक लक्ष्य, पार्टी की नीतियों और जनवादी केन्द्रीयता के प्रति स्पष्टता बढ़ाना, पार्टी में सैद्धांतिक व राजनीतिक कार्य पर जोर देना, अनुशासनहीनता के खिलाफ संघर्ष तथा पार्टी और पीएलजीए में सर्वहारा अनुशासन को अधिकृत रूप से लागू करवाना - ये सब जरूरी हैं। नेतृत्व और काडरों के कार्य जब आत्मसात हो जाते हैं तब अनुशासन को स्वैच्छिक रूप से लागू करना, करवाना आसान हो जाता है। आज पार्टी को गुण में विकसित करने के लिए यह अनिवार्य है कि पार्टी में सर्वहारा अनुशासन को बढ़ाया जाए।

पार्टी की विभिन्न कमेटियों और विभिन्न विभागों के बीच तालमेल बढ़ाने की जरूरत है। दण्डकारण्य में एक समय ऐसा था कि पार्टी ने छोटे-छोटे दस्तों के रूप में ही काम शुरू किया था ताकि राजनीतिक, सांगठनिक व सैनिक कार्यों को पूरा किया जा सके। पार्टी के कुछ संगठक भी हुआ करते थे। उस समय छोटे दस्ते भी अपने सारे कामों में तालमेल कर लेते थे। उन दिनों सारे काम काफी सीमित व सरल हुआ करते थे। आज पार्टी बढ़ी है, जन संगठन बढ़े हैं। जन मिलिशिया बढ़ी है। पीएलजीए का गठन हुआ है। जनताना सरकारें गठित हुईं। पार्टी, पीएलजीए और जनताना सरकारें सक्षम रूप से काम कर सकें, इसके लिए विभिन्न विभिागों, सब-कमेटियों, कमाण्डों और ब्यूरों का गठन हुआ है। आंदोलन का इलाका विस्तृत हुआ। गैर-कानूनी व खुली गतिविधियों में विस्तार हुआ। पार्टी, पीएलजीए और जन संगठनों में अंदरूनी तौर पर ऊपर से नीचे तक और नीचे से ऊपर तक तालमेल बनाने में दिक्कतें आई हैं। साथ ही, इन तीनों मोर्चों के बीच तालमेल बिठाने में भी दिक्कतें आई हैं। इस उलझनपूर्ण स्थिति में कुछ गलतियां भी हुईं, जिससे नुकसान भी हुए। इसके अलावा, जब एक समय समूची पार्टी टीसीओसी (कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियान), संगठन निर्माण, जन संघर्ष, उत्पादन, राजनीतिक-सैनिक प्रशिक्षण जैसे अभियान लेती है, उस समय प्रधान कार्यभार के रूप में सामने आए उस अभियान के साथ अन्य कार्यभारों का तालमेल बिठाने में केन्द्रीकरण और विकेन्द्रीकरण का सवाल भी एक उलझाऊ समस्या के रूप में मौजूद है। इन समस्याओं को हल करने के प्रयासों के चलते तालमेल कुछ बेहतर हुआ। एकता कांग्रेस द्वारा निर्देशित लक्ष्यों को हासिल करने के लिए यह जरूरी है कि दुश्मन के तेज हमले के बीचोबीच भी केन्द्रीय कार्यभार को केन्द्र में रखते हुए ही विभिन्न कार्यभारों को पूरा करने और विभिन्न अभियानों को तालमेल के साथ संचालित करने में कहीं ज्यादा प्रगति हासिल की जाए। पार्टी, पीएलजीए और जन संगठनों के बीच सुचारू रूप से तालमेल करते हुए, उन्हें सक्षम नेतृत्व प्रदान करने के लिए जनवादी बुनियाद पर एकीकृत नेतृत्व, एकीकृत कमाण्ड को विकसित करने की जरूरत है। इस क्षेत्र में हम प्रगति हासिल करेंगे, तभी पार्टी को गुण में विकसित करने में काफी मदद मिलेगी।

पार्टी में राजनीतिक, सैद्धांतिक, सांगठनिक व सैनिक प्रशिक्षण बढ़ाने की जरूरत है। यह जरूरत आए दिन बढ़ती जा रही है कि पार्टी उन्नत व विविध कार्यभारों को पूरा करते रहे। दुश्मन का तीखा हमला जारी है। हमारी पार्टी का सामाजिक आधार मुख्य रूप से पिछड़े इलाकों के आदिवासी किसानों का है। ऐसी परिस्थितियों में पार्टी, पीएलजीए जन संगठन और जनताना सरकारों के विभिन्न स्तरों के नेतृत्व व सदस्यों/योद्धाओं को विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षत करने को आज पहले से कहीं ज्यादा महत्व मिलता है। आज हम प्राथमिक शिक्षा, राजनीतिक व सैनिक प्रशिक्षण के लिए अलग-अलग विभाग बनाकर भले ही काम कर रहे हैं, फिर भी इनसे हमारी जरूरतें आंशिक तौर पर ही पूरी हो पा रही हैं। स्पेशल जोनल स्तर से लेकर ग्राम स्तर तक पार्टी, पीएलजीए, जन संगठनों और जनताना सरकारों के नेतृत्व व सदस्यों को आंदोलन के वर्तमान स्तर और उन्नत लक्ष्यों के मुताबिक शिक्षण कार्यक्रमों, शिक्षकों, किताबों और बुनियादी सुविधाओं को विकसित करने की जरूरत सामने आई है। सीमित संसाधनों से व्यापक व उन्नत शिक्षण के कार्यभारों को पूरा करने की अनिवार्यता के मद्देनजर उपलब्ध संसाधनों को पूरी तरह से इस्तेमाल करना, बेहतर व सरल तरीकों को लागू करना, व्यापक शिक्षण के तरीकों को विकसित करना, प्रगतिशील व जनवादी शिक्षितों व दोस्तों की मदद लेना, जनदिशा को लागू करना, इस क्षेत्र में अनुभव का संश्लेषण करना, आंदोलन के अनुभवों का

संश्लेषण कर उपलब्ध करवाना, दूसरों के अनुभवों से सीखना, अध्ययन व शिक्षण के तरीकों, कार्यशैली, कार्यपद्धित, प्रचार के तरीकों को बेहतर करना (यह हमारे शिक्षण के लक्ष्यों में भी शामिल है) आदि तरीकों में पार्टी-शिक्षण को बेहतर व विकसित करने को खासा महत्व देना चाहिए। आज अपने राजनीतिक शिक्षण में हम मा-ले-मा के प्राथमिक पाठ्यांशों, पार्टी की राजनीतिक-सैनिक-सांगठनिक लाइन, पार्टी की आम नीतियों, कार्यनीति, कार्यशैली, वर्गदिशा, जनदिशा, कम्युनिस्ट नैतिकता, गलत रुझानों के खिलाफ संघर्ष और प्रचार के तरीकों पर जोर देना चाहिए। इस काम में हमारी प्रगति से पार्टी को गुण में विकसित करने में मदद मिलेगी।

पार्टी में जारी गैर-सर्वहारा रुझानों को दूर कर पार्टी को सैद्धांतिक-राजनीतिक रूप से शक्तिशाली बनाना चाहिए। हमारी पार्टी की एकता कांग्रेस ने भूल-सुधार अभियान का आह्वान दिया। इस भूल-सुधार अभियान को सफल बनाने हमें योजनाबद्ध तरीके से काम करना चाहिए। अगर हम इस आन्दोलन को एक महान सैद्धांतिक-राजनीतिक आंदोलन के रूप में चलाकर इसे सफल बनाते हैं तो पार्टी शक्तिशाली होगी और उसके गुण में विकास होगा। भूल-सुधार अभियान पर मैं इस संदेश के आखिर में और थोड़ा विस्तार से चर्चा करूंगा।

पार्टी को गुण में विकसित करने के काम में आगामी एक साल में हासिल होने वाली प्रगति पर हम छठवें स्थापना दिवस पर चर्चा करेंगे। पांचवें स्थापना दिवस के इस मौके पर हम पार्टी को गुण में विकसित करने की शपथ लेंगे ताकि वह विकासशील क्रांतिकारी परिस्थिति का फायदा उठा सके और आंदोलन के कार्यभारों को पूरा कर सके।

हमारी पार्टी के चौथे स्थापना दिवस के बाद इस एक साल का समय वो समय है जिस दौरान प्रति-क्रांति को क्रांतिकारी गुरिल्ला युद्ध ने जोरदार टक्कर दी। यह वो समय भी है जबकि शासक वर्गों का दमनचक्र ज्यादा तीव्र व व्यापक पैमाने पर चला है। इसी साल में हमारी पीएलजीए ने सीएमसी और एसएमसी की अगुवाई में जनयुद्ध में कई उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल कीं। कुछ निर्णायक हमलों को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। ऐतिहासिक नयागढ़, झाझा, सिहंभूम, किरन्दुल, महामाया, बलिमेला हमलों के साथ-साथ कलिमेला, बट्टिगुड़ा, मुरलीगुड़ा आदि हमलों में प्राप्त विजय से पीएलजीए की लड़ाकू क्षमता साबित हो गई है। दुश्मन से वीरतापूर्वक लड़ते हुए हमारे साहसिक कंपनी कमांडर मधु, तिरुपति, रणदेव के साथ-साथ कई पलटन कमांडर, सेक्शन कमांडर और लाल योद्धा शहीद हुए हैं। इन शहीदों की कुरबानियां पीएलजीए को पीएलए में और गुरिल्ला युद्ध को चलायमान युद्ध में बदलने के क्रम में हमारे लिए आदर्श व प्रेरणा का स्रोत बनेंगी। लेकिन जंगे मैदान से बाहर हुए तीव्र नुकसानों ने जंगे मैदान में हमें प्राप्त विजयों के प्रभाव को कम कर दिया। जो भी हो, पिछला साल तो वो समय है जब हमने जनयुद्ध में एक कदम आगे बढ़ाया।

एकता कांग्रेस द्वारा निर्देशित लक्ष्यों को हासिल करने के लिए, शत्रु हमले को परास्त करते हुए आज की देश-दुनिया की क्रांतिकारी परिस्थिति का फायदा उठा जनयुद्ध को और भी उन्नत स्तर में विकसित करने और नए इलाकों में विस्तार करने के लिए जरूरत है हमारी पीएलजीए की शक्ति और क्षमता में उल्लेखनीय बढ़ोतरी करने की। समूचे फौजी मोर्चे में हमारी शक्ति व क्षमता में उल्लेखनीय बढ़ोत्तरी की जरूरत है। केन्द्र व राज्यों की सरकारें पुलिस व अर्द्ध-सैनिक बलों में दसियों हजारों की संख्या में भर्ती कर रही है। बड़ी संख्या में विशेष व कमांडो बलों को प्रशिक्षित करना, कार्पेट कैंम्पिंग के तरीके में बलों की तैनाती, कैम्पों की किलेबंदी मजबूत बनाना, सलवा जुडूम जैसे प्रति-क्रांतिकारी संगठनों का गठन कर प्रयोग करना, इंटेलिजेन्स विभागों को मजबूत बनाकर समन्वय करना, मनोवैज्ञानिक युद्ध, सुधार कार्यक्रम, पाइलट जिलों का चयन, 4-कट पालिसी, आधुनिकीकरण आदि पर जोर लगा रही हैं। दुश्मन का मुकाबला करते हुए पीएलजीए को पीएलए में तथा गुरिल्ला युद्ध को चलायमान युद्ध में बदलकर दण्डकारण्य को आधार इलाके में तब्दील करने के लिए मैं खासकर दो बिन्दुओं पर जोर देना चाहूंगा - दुश्मन के कमाण्डो बलों का सक्षम मुकाबला करने के लिए प्रशिक्षित होना और प्रधान बलों को बढ़ाने व व्यापक इलाकों में जाकर लड़ने के लिए तैयार होना।

आज हमारी पीएलजीए में कुछ हजार लोग ही हैं। हमारे पास हथियार व गोलीबारूद भी कम ही हैं। हमारी आपूर्ति भी सीमित है। हमारी भर्ती भी सीमित ही है। दुश्मन के पास लाखों की सेना है। उसके पास हथियार भी शक्तिशाली हैं। उसके लिए आपूर्ति की कोई समस्या नहीं है। भर्ती के लिए देश का बेरोजगार युवा वर्ग बहुत बड़ा स्रोत है। कुल मिलाकर, जनयुद्ध आज रणनीतिक आत्मरक्षा की स्थिति में है। लेकिन, हमारी पीएलजीए एक उन्नत लक्ष्य के साथ, लक्ष्य के प्रति पूरी प्रतिबद्धता से जनता के लिए स्वैच्छिक व निस्वार्थ रूप से डटकर लड़ रही है। यानी एक राजनीतिक सेना के रूप में वह जनता के पक्ष में खड़े होकर लड़ रही है। हमारी जनसेना ''दस के खिलाफ एक'' और ''एक के खिलाफ दस'' वाले वैज्ञानिक रणनीतिक व कार्यनीतिक बुनियादी नियमों के तहत दीर्घकालीन लोकयुद्ध की लाइन पर लड़ रही है। वह छोटी, मध्यम व बड़ी किस्म के कई कार्यनीतिक जवाबी हमलों का सिलसिला चलाकार दुश्मन और हमारे बीच बलों का संतुलन बदलने की कोशिश कर रही है। पिछले साल भर के समय में पीएलजीए ने अपनी तमाम युद्ध कार्रवाइयों में जिस ऊंचे मनोबल का प्रदर्शन किया उसके सामने दुश्मन के भाड़े के कमांडो बलों का मनोबल तार-तार हो गया। जहां हमारी पीएलजीए व्यापक जनता का प्रतिनिधित्व करते हुए उसके लिए लड़ रही है, तो इस व्यापक जनता के हितों के खिलाफ, मुट्ठी भर लुटेरे शासक वर्गों के लिए उनके भाड़े के बल लड़ रहे हैं। हमें जनता

का समर्थन हासिल है। इसी का उन्हें अभाव है। पिछले वर्ष की हमारी कामयाबियों और दुश्मन के नुकसानों के बुनियादी कारणों में एक यह भी है। इसलिए इसके बावजूद भी कि फिलहाल हमारी जनसेना कमजोर और दुश्मन मजबूत है, हमारी सेना अपने मनोबल व जनता के समर्थन पर निर्भरशील रहकर दुश्मन के कमांडो बलों का और भी ज्यादा संख्या में सफाया कर सके, और ज्यादा हथियार दुश्मन से छीन ले सके, पार्टी व जनता की रक्षा कर सके, दुश्मन की राजसत्ता को ध्वस्त कर नई जनवादी सत्ता की स्थापना करने के लिए अपनी शक्ति और क्षमता को बढ़ा सके – यानी दुश्मन के भाड़े के कमाण्डो के खिलाफ में क्रांतिकारी गुरिल्ला कमाण्डों के रूप में सुशिक्षित हो सके – इसके लिए अपने प्रयासों में तेजी लाने की जरूरत है। हमारी पीएलजीए कमानों को चाहिए कि वे गुरिल्ला कमाण्डों बलों की कमान बनकर अपनी शक्ति और क्षमता को उल्लेखनीय स्तर तक विकसित कर लें। हरेक योद्धा, हरेक कमाण्डर, हरेक कमान, हरेक मिलिटरी कमिशन को चाहिए कि वह दुश्मन के कमाण्डो-विशेष बलों का उन्मूलन करने का माद्दा रखने वाले काउंटर कमाण्डो व काउंटर कमाण्डो कमान के रूप में उभरें।

इसके अनुरूप हमारी शिक्षण प्राणली में, प्रशिक्षण में, रोजमर्रा के अभ्यास में आवश्यक बदलाव लाना होगा। इसके लिए समय तथा मानव व पादार्थिक संसाधनों का सम्पूर्ण उपयोग करने की भरसक कोशिश करनी चाहिए। हरेक गुरिल्ला, चाहे उसकी उम्र 16 साल, चाहे 25 साल या 50 साल भी क्यों न हो, को चाहिए कि वह शत्रु के कमाण्डो बलों और कल को आने वाले सैन्य बलों का उन्मूलन करने की दृष्टि से अपनी शारीरिक व मानसिक तथा लड़ाकू व तकनीकी कौशल को बढ़ा ले। एक-एक गोली से एक-एक दुश्मन का सफाया करना चाहिए। हरेक हथगोले से एक, दो, तीन या चार शत्रु सैनिकों को मार डालना चाहिए या घायल कर देना चाहिए। प्रत्येक कार्रवाई में न्यूनतम विजय की गारंटी हो, इसके लिए सही योजना, तैयारियां, दृढ़ संकल्प और क्रियान्वयन रहने चाहिए। इन्हें हासिल करने के लिए हमारे बलों के राजनीतिक शिक्षण और सैनिक शिक्षण में उल्लेखनीय बदलाव लाना चाहिए। हमारे बलों में कठोर अनुशासन को लागू करना चाहिए। जनता के साथ संबंधों को घनिष्ट बनाना चाहिए। हमारे बलों में सीखने की गजब की लालसा पैदा करनी चाहिए। उरपलमेट्टा में हमारे गांवों को ध्वस्त कर वापस जा रहे दुश्मन की खबर मिलते ही हमारे बल फौरन ही डेढ़ घण्टे की दूरी हाथों में हथियार लेकर दौड़ पड़े थे। अदम्य शूरता और आत्मबलिदान की उच्च भावना से ओतप्रोत हमारे कामरेडों ने दुश्मन का बड़ी संख्या में सफाया कर हथियार छीन लाए। उस तरह की सूझबूझ, पहलकदमी, साहस, कष्टों को सहने की क्षमता, दृढ़ संकल्प, लड़ाकू कौशल का सही इस्तेमाल, जिद के साथ लड़ना – ये सब हमारे बलों के साधारण स्तर में शुमार होने होंगे। जब अपने कामरेड्स उरपलमेट्टा में कर सकते हैं तो हम क्यों नहीं कर सकते? यह प्रश्न हरेक बोल्शेविक योद्धा के जेहन में उठना चाहिए। इस तरह की बोल्शेविक स्फूर्तिभावना जरूर हमारे गुरिल्ला बलों का मनोबल को अत्युन्नत स्तर में पहुंचा देगी। दुश्मन के बलों को थर्राते हुए उनकी पराजय के लिए आधार बनाएगी। अपने बलों की जीत की भूमिका रचेगी।

पिछले साल सफल बनाई गई हरेक कार्रवाई को एक नमूने के तौर पर अपने बलों, पार्टी, जन मिलिशिया व जनता के सामने पेश करना चाहिए। दुश्मन के बलों का सफाया करने में, हथियार, कारतूस व विस्फोटक पदार्थ छीन लेने में, दुश्मन की संपत्ति को जब्त करने और ध्वस्त करने में, युद्ध के स्तर में बदलाव लाने में ये नमूने लंबे समय तक हमारे बलों को राह दिखाते रहेंगे। उनकी लड़ाकू क्षमता को बढ़ाते रहेंगे। सैकड़ों नई कमानों को बनाने, उन्नत कामयाबियां हासिल करने तथा दुश्मन का उन्मूलन करने लायक अपने जन बलों की क्षमता व शक्ति को बढ़ाने की हम अपनी पार्टी के 5वें स्थापना दिवस के इस मौके पर शपथ लेंगे।

हमारी कांग्रेस ने जो नारे दिए – उनमें से एक है पीएलजीए को पीएलए में बदलना। पीएलए वह सेना है जो जनता की राजसत्ता की स्थापना के लिए जहां भी जरूरी है वहां जाकर लड़ती है। नयागढ़ में हमला करने के लिए दण्डकारण्य से हमारे कामरेड्स एक साल पहले निकल पड़े थे। साल भर का समय वहीं रहकर हमले को अंजाम देकर लौट आए। इस तरह के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए, जनता की राजसत्ता कायम करने के लिए हमारी पीएलए देश के किसी भी हिस्से में कूच करेगी। इसलिए आज हरेक गांव में हमें एक नारा देना होगा। पीएलजीए में भर्ती होने का नारा पहले से दिया हुआ है। हर घर से कम से कम एक व्यक्ति को पीएलजीए में आना चाहिए, यह नारा भी दिया जा चुका है। अब – पीएलजीए को पीएलए में बदलने की कोशिशों के तहत, हर कामरेड किसी भी यूनिट में शामिल होने और कहीं भी जाकर काम करने के लिए तैयार रहे, यह नारा देना चाहिए। आज हमारे जन मिलिशिया के कामरेडों को एलजीएस में भर्ती होने, एलजीएस के कामरेडों को पलटन में शामिल होने, पलटन के कामरेडों को कंपनी में शामिल होने, कंपनी कामरेडों को देश के किसी भी कोने में जाने और बटालियन में शामिल होने के लिए आगे आना होगा। दुश्मन ने कार्पेट सेक्यूरिटी कैम्पिंग सिस्टम लगा रखी है। घेराबंदी कर रहा है। दसियों हजारों की संख्या में बलों को तैनात कर रहा है। हमें इतने ही दायरे में सीमित कर यहीं पर हमारा दमन करने की सोच रहा है। हमें जनयुद्ध की रणनीति-कार्यनीति के बुनियादी नियमों को अपनी परिस्थिति के अनुसार लागू करना चाहिए। यहां की जनता को संघर्ष में राजनीतिक रूप से ज्यादा से ज्यादा दृढ़ता से टिकाए रखना चाहिए। हमारे इस मजबूत क्षेत्र में अपने बलों को चाहिए कि वे दुश्मन के उन्मूलन के लिए अपने प्रयासों में तेजी लाएं। दुश्मन बड़े पैमाने पर हमारी घेराबंदी करता है तो हमारे बल बाहर भी जाकर जनता पर निर्भर रहते हुए दुश्मन के बलों को बाहर से घेरकर सफाया

करना चाहिए। इसलिए सभी इलाकों में मौजूद पीएलजीए की प्रत्येक यूनिट को चाहिए कि वह पार्टी, सीएमसी और एसएमसी जहां भी बुलाएंगे, जहां भी निर्देश देंगे वहां जाकर लड़े। यह आज हमारा राजनीतिक कर्तव्य है। यह एक राजनीतिक जरूरत है ताकि हम खुद की रक्षा कर सकें, जन राजसत्ता की स्थापना कर सकें, नयागढ़ जैसी बड़ी जीतें हासिल कर सकें तथा कई मध्यम व छोटी किस्म की जीतें हासिल कर सकें। मानसिक रूप से हमें इसके लिए तैयार रहना चाहिए। आज पार्टी की क्षमता बढ़ाने का अर्थ है, पीएलजीए में मौजूद सभी पार्टी सदस्यों का अपनी शक्ति व क्षमता को बढ़ाना भी। इसके जरिए हम पीएलजीए की शक्ति को भी बेतहाशा बढ़ा सकेंगे। आज दण्डकारण्य में मौजूद कुछ हजार पीएलजीए बल दुश्मन के 20 हजार बलों का मुकाबला कर रहे हैं। दुश्मन अपने बलों की संख्या 40 हजार तक बढ़ाने जा रहा है। हमारे चंद हजार बलों की ही जिम्मेदारी है कि दुश्मन के 40 हजार बलों का सफाया किया जाए। इस बीच हम अपने बलों को 40 हजार में और 40 हजार को 4 लाख में बढ़ाने की रणनीति से पार्टी को काम करना चाहिए।

इसलिए जनयुद्ध के रणनीतिक व बुनियादी दावपेंचों का गहराई से अध्ययन कर उन्हें अपनी ठोस परिस्थिति के मुताबिक लागू करने से हम अपनी शक्ति को काफी बढ़ा सकेंगे। चंद हजार गुरिल्लों का मतलब, रणनीतिक रूप से देखा जाए तो दुश्मन की 2 लाख सेना से भी टक्कर ले सकने की ताकत रखना है। क्योंकि हमें यहां 20 लाख लोगों का समर्थन हासिल है। हमारी ताकत जनाधार पर टिकी हुई है। इसलिए, हमें इस पांचवें स्थापना दिवस के अवसर पर यह शपथ लेनी चाहिए कि हम पूरी कोशिश करेंगे ताकि हमारी पीएलजीए सभी पहलुओं में अपनी शक्ति और क्षमता बढ़ा सके। अगले उन्नत चरण में पहुंचने के लिए हम किस हद तक अपनी शक्ति व क्षमताओं को बढ़ा पाए, और क्या-क्या बचा है, इसकी चर्चा हम अगले स्थापना दिवस पर जरूर करेंगे।

हमें अपनी जन मिलिशिया की शक्ति और क्षमताओं को बढ़ाना चाहिए। उनकी शक्ति और क्षमताओं को इस कदर बढ़ाना चाहिए कि वह सशस्त्र जन महाशिक्त से दुश्मन की जहां-तहां घेराबंदी कर उसे कई प्रकार के नुकसान पहुंचा सके। इस कार्यक्रम में हम जिस हद तक सफल होंगे, उसी स्तर पर जन मिलिशिया का विकास होगा। जन मिलिशिया दस्तों से पीएलजीए बढ़ेगी। जन मिलिशिया का हम जितने अच्छे तरीके से संचालन कर पाएंगे उतनी ही पीएलजीए में भर्ती बढ़ेगी। जनता के अंदर हम जो राजनीतिक, सैद्धांतिक, सांगठनिक व सैनिक कार्य करेंगे, उसी की बुनियाद पर जन मिलिशिया से लोग बड़ी संख्या में पीएलजीए में भर्ती होंगे। पार्टी में आ जाएंगे। सैकड़ों की संख्या में भर्ती होंगे जिससे पीएलजीए की संख्या तेजी से बढ़ सकेगी।

कॉमरेडो,

एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को हासिल करना इस बात पर निर्भर है कि हम जनता को वर्ग संघर्ष व जनयुद्ध में कितना सक्रिय व व्यापक रूप से गोलबंद कर पाते हैं। इस पर भी निर्भर है कि हम सभी जन संगठनों को राजनीतिक रूप से कितना अच्छा शिक्षित कर रहे हैं और कितनी सुदृढ़ता से हम उनका संगठितकरण कर रहे हैं। हमारी प्रत्येक नई योजना की रचना, संघर्ष व जीत का आधार भी और गारंटी भी जनता है - सिर्फ जनता है। 'जनता, सिर्फ जनता ही इतिहास की निर्माता है'।

आज दण्डकारण्य स्पेशल जोन में कार्यरत दण्डकारण्य आदिवासी किसान मजदूर संघ (डीएकेएमएस) और क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन (केएएमएस) में दसियों हजारों सदस्य हैं। चेतना नाट्य मंच (सीएनएम) और बाल संगठनों में चंद हजार सदस्य हैं। पहले तीन संगठनों की नेतृत्वकारी कमेटियां ग्राम स्तर से स्पेशल जोनल स्तर तक हैं। बाल संगठन तो गांव स्तर पर ही काम कर रहा है। दण्डकारण्य के चारों ओर, खासकर जिन गांवों व इलाकों में 'जनताना सरकार' (क्रांतिकारी जन कमेटी - आरपीसी) है, वहां जन मिलिशिया की यूनिटें हैं। इनमें दसियों हजार सदस्य मौजूद हैं। इनका नेतृत्व करने वाली कमानें हैं। हमारी पार्टी के नेतृत्व में क्रांतिकारी जनता जन मुक्ति गुरिल्ला सेना बनकर जनयुद्ध को संचालित कर रही है जिसकी बदौलत, व्यापक जनता के क्रांतिकारी संयुक्त मोर्चे के सघन व ठोस स्वरूप के तौर पर और जन जनवादी राज्य के स्वरूप के बतौर दण्डकारण्य के कोने-कोने में जनताना सरकार का उदय हुआ और वह विस्तारित व सुदृढ़ हो रही है।

दुश्मन ने इस कोशिश में एड़ी-चोटी का जोर लगा रखा है कि हमारे जनाधार को कमजोर बनाकर पार्टी व जन मुक्ति गुरिल्ला सेना को जनता से अलग-थलग कर इनका, और कुल मिलाकर क्रांतिकारी आंदोलन का उन्मूलन किया जाए। वह हमारे जन संगठनों में अपने दलाल (मुखबिर और कोवर्ट) घुसाकर षड़यंत्रकारी कार्रवाइयां करवा रहा है ताकि हमारे जनाधार का नाश किया जा सके। अपने फासीवादी काले कानून (छत्तीसगढ़ विशेष जन सुरक्षा कानून) के तहत तमाम जन संगठनों पर प्रतिबंध लगा दिया। सलवा जुडूम जैसी प्रति-क्रांतिकारी संस्था का गठन कर 'मॉपिंग अप' दमनचक्र चला रहा है। दसियों हजार की संख्या में अर्द्ध-सैनिक बलों को उतारकर कत्लेआम मचा रहा है। महिलाओं के साथ सामूहिक अत्याचार कर रहा है। हजारों लोगों को गिरफ्तार कर यातनाएं देकर जेलों में ठूंस रहा है। फसलों व संपत्तियों को ध्वस्त कर खेती, वनोपजों के संग्रहण को रोककर, हाट बाजारों को बन्द करवाकर, आर्थिक नाकेबन्दी कर जनता के आर्थिक जीवन को छिन्न-भिन्न कर रहा है। कार्पेट सेक्यूरिटी की कैम्पिंग पद्धित में जनता के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को रौंद रहा है। हजारों लोगों को गांवों से बलपूर्वक हटाकर दमन के शिविरों (रणनीतिक बसाहटों) में कैद कर जन जीवन को तहस-नहस कर रहा है। दमनचक्र को चलाकर हजारों लोगों को शरणार्थी बनाकर आदिवासियों के सामाजिक जीवन को ध्वस्त कर रहा है। जन संगठनों के नेतृत्व को निशाना बनाकर सफाया

कर रहा है। दुश्मन ने अपने मनोवैज्ञानिक युद्ध में तेजी लाई ताकि जनता को राजनीतिक व सैद्धांतिक रूप से निष्क्रिय बनाया जा सके। जनता में फूट डालकर एक तबके को अलग करने और जनता में भ्रम पैदा कर क्रांति के रास्ते से भटकाने के लिए झूठे सुधारों की झड़ी लगाकर 'गैर सरकारी संगठनों' (एनजीओ) को कुकरमुत्तों की तरह उगवा रहा है। हमारी हर छोटी गलती और हर छोटी कमजोरी का पूरी तरह फायदा उठाकर हमें जनता से अलग-थलग करने की जी-तोड़ कोशिश कर रहा है। जनता द्वारा ध्वस्त की गई सामंती व जन विरोधी ताकतों को प्रोत्साहित कर प्रति-क्रांतिकारी साजिशों, षड़यंत्रों व हमलों को उकसा रहा है। ऐसे कई तरीको में दुश्मन की साजिशें, छल-कपट, तबाही व हमले जारी हैं।

लेकिन क्या आज के जन संगठनों की राजनीतिक रूप से गोलबंदी करने की शक्ति, सांगठित ताकत और वर्ग संघर्ष के कार्य इस स्तर के हैं ताकि हम दुश्मन का सभी मोर्चों पर मुकाबला कर सकें, जनयुद्ध की आज की जरूरतों को पूरा कर सकें और एकता कांग्रेस द्वारा निर्देशित लक्ष्यों को हासिल कर सकें? इस प्रश्न का जवाब खोजेंगे तो पाएंगे कि कई इलाकों में ऐसा नहीं हैं। हमारी पार्टी व जन मुक्ति गुरिल्ला सेना को जिस प्रकार अपनी शक्ति और क्षमताओं को बढ़ाकर गुण में बदलाव लाने की जरूरत है, उसी प्रकार सभी जन संगठनों की शक्ति व क्षमताओं को बढ़ाकर गुण में विकास लाने की जरूरत हैं। जन संगठनों का गुण में विकास करने से ही जनयुद्ध के स्तर के अनुरूप गहन जनाधार को बढ़ा सकेंगे और इससे एकता कांग्रेस द्वारा निर्देशित लक्ष्यों की पूर्ति के लिए अनुकूल परिस्थितियां पैदा कर सकेंगे। जनाधार को बढ़ाने के लिए हमें इन निम्नांकित विषयों पर ध्यान देने की जरूरत है।

जन संगठनों को सक्रिय रूप से संचालित करने के लिए उनमें राजनीतिक व सांगठानिक कार्य बढ़ाना चाहिए। जन संगठनों में घुस आए गद्दारों व दुश्मन के दलालों को चिन्हित कर दूर करना चाहिए। जिन पर विश्वास नहीं किया जा सकता हो, उन्हें दूर रखना चाहिए। निष्क्रिय त्तवों को भी अलग रखना चाहिए। नेतृत्वकारी कमेटियों का पुनरनिर्माण करना चाहिए ताकि खेतिहर मजदूर, गरीब किसान व निचले मध्यम वर्ग की पृष्ठभूमि से आई सक्रिय ताकतों की अगुवाई सुनिश्चित हो सके। जो-जो जन संगठन निष्क्रिय बने हैं, उन्हें ठोस रूप से पहचान कर उसके कारणों का पता लगाना चाहिए। उन्हें सक्रिय बनाने के लिए तमाम आवश्यक कदम उठाने चाहिए। कमजोर संगठनों को मजबूत बनाने की कोशिश करनी चाहिए। जिन संगठनों में सदस्य संख्या पर्याप्त नहीं है, उनमें सदस्यता बढ़ानी चाहिए। जिन गांवों में संगठन नहीं हैं, वहां बनाने चाहिए। हमारे सांगठनिक कार्य का नारा यह रहना चाहिए कि 8 साल से ऊपर का हर व्याक्ति, जो जनवादी वर्गों से है, किसी न किसी जन संगठन का सदस्य बनना चाहिए। ग्राम स्तर से स्पेशल जोनल स्तर तक हरेक जन संगठन की नेतृत्वकारी कमेटी को सक्रिय, अपने मोर्चे में दृढ़ता से खड़े जनता के सच्चे नेतृत्व के रूप में, निस्वार्थी सेवकों के रूप में काम करना चाहिए। इसके लिए हमें राजनीतिक व सांगठनिक काम करना चाहिए। इस हेतु जन संगठनों में नेतृत्व की धारावाहिकता, नेतृत्वकारी टीमों को प्रशिक्षण, उन्हें सक्रिय रूप से काम करवाना - ये हमारे राजनीतिक-सांगठनिक काम में अहम हैं।

दण्डकारण्य के सामाजिक हालात में सभी जन संगठनों और जनता में वर्गीय चेतना विकसित करने की बेहद जरूरत है। वर्ग दिशा और जनदिशा में सुशिक्षित करने की काफी जरूरत है। आंदोलन के स्तर के अनुरूप सभी जन संगठनों को कार्यभारों व कार्य पद्धिति में आवश्यक बदलावों, दुश्मन के दावपेंचों व योजनाओं, अपने जवाबी दावपेंचों और योजनाओं के बारे में सभी जन संगठनों को प्रशिक्षत करना चाहिए।

सभी जन संगठनों को वर्ग सघर्ष के शक्तिशाली नेतृत्वकारी संगठनों में तब्दील करें, इस दिशा में हमारे प्रयास होने चाहिए। हरेक जन संगठनों की सक्रियता या निष्क्रियता का फैसला मुख्य रूप से इस बात पर निर्भर करेगा कि वह अपने क्षेत्र में दैनंदिन समस्याओं पर चलने वाले वर्ग संघर्ष में जनता का किस प्रकार नेतृत्व कर रहा है। जन संगठनों का सक्षम रूप से काम करने का यह भी मतलब है कि वह अपने मोर्चे का या जनता का सक्षम रूप से नेतृत्व कर रहा है। दिन-ब-दिन अभूतपूर्व तरीके से तेज हो रहे विश्व आर्थिक संकट तथा केन्द्र-राज्य सरकारों की जन विरोधी एवं साम्राज्यवाद-शासक वर्ग-अनुकूल नीतियों के फलस्वरूप जनता की जिंदगी दूभर होती जा रही है। ऐसे हालात में, जबकि दण्डकारण्य में वर्ग संघर्ष उन्नत स्तर पर जारी है, जनता को कई आर्थिक, राजनीतिक व सामाजिक समस्याओं पर संघर्ष में उतारने की जरूरत ज्यादा है। शासक वर्गों के चरित्र को समझने, वर्ग संघर्ष की चेतना बढ़ाने तथा जन संगठनों में संगठित करने में जनता की रोजमर्रा की जिंदगी में करने वाले संघर्षों से काफी मदद मिलेगी। जनता को रोजमर्रा के मुद्दों पर आंदोलित करने और वर्ग संघर्ष में आगे आने वाली जनता को राजनीतिक शिक्षण देने में होने वाली खामियां आंदोलन को विकसित करने की राह में रोड़े बनेंगी। साम्राज्यवादियों-शासक वर्गों का राजनीतिक-आर्थिक हमला एक तरफ, प्रति-क्रांतिकारी राज्य का हमला और इस बर्बर-राज्य द्वारा प्रायोजित सलवा जुडूमी ताकतों का हमला दूसरी तरफ - ये दण्डकारण्य की जनता और क्रांतिकारी आंदोलन पर इतने व्यापक स्तर पर जारी हैं कि पहले कभी इतना नहीं था। यानी दण्डकारण्य में वर्ग संघर्ष तीखे सशस्त्र संग्राम के रूप में जारी है। यानी दण्डकारण्य में क्रांतिकारी युद्ध प्रति-क्रांतिकारी युद्ध का मुकाबला कर रहा है। राजनीतिक, सैद्धांतिक, आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक व पर्यावरण के क्षेत्रों में जारी इस वर्ग संघर्ष में जनता की सक्रिय भूमिका को सही योजना व सचेतन प्रयासों के जरिए और भी ऊंचा उठाने की जरूरत है।

जन मिलिशिया ऐसा शक्तिशाली औजार है जो जनता में छिपे

हुए प्रति-क्रांतिकारी त्तवों की साजिशों, षड़यंत्रों और द्रोहपूर्ण गतिविधियों का पता लगाकर उनकी रोकथाम करता है। प्रधान व माध्यमिक जन गुरिल्ला बलों से मिलकर शत्रु बलों का सफाया करने में जन मिलिशिया की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। जनता की राजसत्ता की सुरक्षा करने के साथ-साथ उसे मजबूत बनाने में भी जन मिलिशिया की बड़ी भूमिका रहती है। जहां जनाधार मजबूत है, उन्हीं इलाकों में जन मिलिशिया मजबूत व सक्रिय है।

हम गुरिल्ला युद्ध की अहम कार्रवाइयां उन्हीं इलाकों में कर पाए हैं जहां जनाधार मजबूत है और तभी कर पाए हैं जब जनाधार के साथ-साथ जनता का सक्रिय योगदान व समर्थन मिला है। ऐसी परिस्थिति में ही गुरिल्ला युद्ध व गुरिल्ला सेना का विकास हुआ है। जनयुद्ध में जनता की सक्रिय भूमिका तभी बेहद बढ़ सकती है जब हम माओवादी जनयुद्ध की रणनीति-कार्यनीति को अपने ठोस हालात में रचनात्मक रूप से लागू करते हैं। प्रति-क्रांतिकारी सलवा जुडूम के सशस्त्र त्तवों तथा शासक वर्गों के विशेष कमाण्डो बलों के हमलों को पलटा जवाब देकर, आखिर में उन्हें धराशायी करने में दण्डकारण्य जनता की सक्रिय भूमिका अभूतपूर्व स्तर पर विकसित कर सकेंगे। जनाधार को मजबूत व व्यापक बनाने में यही हमारा अहम कार्यभार होगा। इस कार्यभार को पूरा करने के लिए नेतृत्व का केन्द्रीकरण जरूरी है। इसके लिए दृढ़ संकल्प के साथ रचानात्मक रूप से काम करने की बेहद जरूरत होगी।

हालांकि लम्बे समय तक अन्दरूनी आदिवासी इलाकों में क्रांतिकारी आंदोलन का निर्माण करने में हमें खासा अनुभव हासिल हुआ है, लेकिन, जहां पर हम अभी-अभी विस्तार कर रहे हैं वहां की विविधतापूर्ण सामाजिक तथा भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप हमें संघर्ष व संगठन के समुचित स्वरूपों को अपनाकर काम करने में ध्यान देने की जरूरत है। अंदरूनी इलाकों के अनुभव को यांत्रिक रूप से लागू नहीं करना चाहिए। सामंतवाद, दलाल नौकरशाही पूंजीवाद, साम्राज्यवाद व राज्य के खिलाफ आंदोलन निर्मित करने में इन नए इलाकों में मिलने वाले नए अनुभव से व्यापक जनता में विस्तार करने में, संयुक्त मोर्चे के कार्य में, आत्मगत ताकतों को बढ़ाने में तथा वर्तमान सशस्त्र संघर्ष व नवोदित सत्ता को समर्थन जुटाने में एक गुणात्मक छलांग मारने में मदद मिलेगी। इसलिए इस नए काम पर नेतृत्व को पर्याप्त ध्यान देने की जरूरत है। हमारे विस्तार को रोकने की दुश्मन की कोशिशों का दृढ़ता से मुकाबला कर नाकाम करने की जरूरत है।

हमें जनता की प्रतिभा, रचनात्मकता एवं संसाधनों को एक जबर्दस्त शक्ति के रूप में उभारना चाहिए ताकि दण्डकारण्य को आधार इलाके में तब्दील किया जा सके। वर्ग संघर्ष में तथा जनयुद्ध में एक और गुणात्मक छलांग मारनी है तो एक जरूरी शर्त यह रहेगी कि जनता के जीवन स्तर - आर्थिक, स्वास्थ्य, सांस्कृतिक आदि में उल्लेखनीय प्रगति लाई जाए। दुश्मन जब बेहद क्रूरता से 'मॉपिंग अप' तबाही मचाते हुए आर्थिक नाकेबंदी कर जनता के आर्थिक-सांस्कृतिक जीवन को छिन्न-भिन्न कर रहा हो, ऐसी परिस्थिति में हमें जनयुद्ध के राजनीतिक, सांगठनिक व सैनिक कार्य के तहत जनता के जीवन स्तर में सुधार लाने की विशेष कोशिश करनी चाहिए। जिस स्तर में जनताना सरकार का गठन होगा उस स्तर में जनता के जीवन स्तर को बढ़ाने के दुगुने प्रयास करने चाहिए। इस प्रयास में रोड़े बनने वाले शत्रु बलों के हमलों से जनता की खेती, उत्पादन, वनोपजों का संग्रहण, खरीदी-बिक्री, शिक्षा-स्वास्थ्य की सुविधाओं आदि को बचाने और उनके सुचारू संचालन के लिए हमारे पीएलजीए बलों को अथक संघर्ष करना चाहिए। हमें यह समझ लेना चाहिए कि जनता के जीवन स्तर में सुधार लाए बिना पीएलजीए के जीवन स्तर में सुधार नहीं लाया जा सकता। इसलिए इस संघर्ष का शत्रु बलों और उनके गुर्गों के सफाया अभियानों के साथ तालमेल करना चाहिए। पार्टी और पीएलजीए के साथ-साथ सभी जन संगठनों को इसके लिए सक्रिय रूप से तैयार करना चाहिए। जनता के बीच पार्टी द्वारा जारी राजनीतिक, सांगठनिक व सैनिक कार्यों, राजनीतिक सत्ता के अंगों की स्थापना के कार्यों और जनता के जीवन स्तर को सुधारने के कार्यों के बीच चोली-दामन का रिश्ता होता है। इस सम्बन्ध में हमारे अंदर मौजूद गलत विचारों और व्यवहार में हो रही गलतियों को बिना देर दूर कर लेना चाहिए। जनता के सांस्कृतिक स्तर को ऊपर उठाने के कार्य के तहत पार्टी और जन मुक्ति गुरिल्ला सेना के सांस्कृतिक स्तर को भी उल्लेखनीय रूप से ऊपर उठाए बिना पार्टी, सेना और जन संगठनों में एक और उन्नत छलांग लगाना मुश्किल है। जन संगठनों के सभी अनपढ़ नेताओं और सदस्यों को साक्षर बनना चाहिए। इस कार्यभार की पूर्ति के लिए हम सभी को पार्टी के आज के पांचवें स्थापना दिवस के मौके पर कसम खाने की जरूरत है। जन संगठनों के सक्रिय कार्यकर्ताओं को काफी अनुभव है। जन मिलिशिया को कई चमत्कार करने का अनुभव है। इन सबका साक्षर बनना; सामाजिक विज्ञान व प्रकृति विज्ञान में प्राथमिक ज्ञान प्राप्त करना; मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद में बुनियादी शिक्षा हासिल करना; पार्टी लाइन व नीतियों के बारे में, गुरिल्ला युद्ध के दावपेंचों के बारे में तथा जनसत्ता के बारे में प्राथमिक जानकारी हासिल करना जरूरी है।

दण्डकारण्य में हमने शिक्षा विभाग का गठन किया है। जनता की स्कूलें चल रही हैं। क्रांति की जरूरतों के अनुसार जन संगठनों के सांस्कृतिक स्तर को बढ़ाने में इसे काफी सक्रिय व रचनात्मक भूमिका निभाने की जरूरत है। इसके लिए सहायक ढांचा भी विकसित करने की जरूरत है।

सीएनएम के कार्यकर्ताओं में सैकड़ों युवक-युवतियां पहली से तीसरी कक्षा तक पढ़ाई कर चुके हैं। अगर हम उन सबको योजनाबद्ध तथा निर्माणात्मक तरीके से मजबूत कर मैदान में उतारते हैं तो जनता के सांस्कृतिक स्तर को बढ़ाने वाले सैकड़ों लोगों की सांस्कृतिक सेना को, एक जबर्दस्त ताकत को पैदा कर

सकते हैं। व्यवहार के दौरान आने वाली समस्याओं को हल करते हुए अगर इस सेना को हम मजबूत करते हैं तो जनता के सांस्कृतिक स्तर को ऊपर उठाने में चमत्कारिक परिणाम हासिल कर सकते हैं। जिस प्रकार आज दण्डकारण्य में प्रत्येक कार्यभार को दुश्मन के क्रूर दमनचक्र के बीचोबीच, युद्ध के बीचोबीच पूरा करना पड़ रहा है, उसी प्रकार इस कार्यभार को भी पूरा करना है। जिस प्रकार क्रांति में हर समस्या के समाधान के लिए जनता पर ही निर्भर किया जाता है, इस मामले में भी जनता पर ही निर्भर रहना होगा। हमारे अनुभव और समस्या को जनता के सामने रखकर उनसे चर्चा करना, उनके विचारों का संश्लेषण करना, स्थानीय संसाधनों को जुटाना, शिक्षित व प्रगतिशील लोगों की मदद जुटाना, केन्द्रीय कमेटी की मदद लेना, जनता, जन संगठनों, पार्टी व जन सेना को सक्रिय बनाना इत्यादि करेंगे तो बेहतर जन शिक्षण के तरीकों को ईजाद कर सकेंगे। इसके लिए आवश्यक जन साहित्य को तैयार कर पार्टी व पीएलजीए को गुण में विकसित करने में एक कदम आगे बढ़ा सकेंगे। पार्टी, जन सेना व जन संगठनों के नेतृत्व की तरफ से जनता के साथ संबंधों में संकीर्णतावादी व नौकरशाही तौर-तरीके दिखाई पड़ रहे हैं जिससे जनाधार को मजबूत व व्यापक बनाकर उन्नत लक्ष्यों को हासिल करने की राह में रुकावटें पड़ रही हैं। पार्टी के कामकाज में रचनात्मक तौर-तरीकों का अभाव होकर रूटीन तौर-तरीके लागू हो रहे हैं, जिससे जनता को सक्रिय करने में बाधा आ रही है। उन्हें निरंतर वर्ग संघर्ष में प्रशिक्षित करने और जीवन स्तर में सुधार लाने में बाधा आ रही है। उन्हें रोजमर्रा की समस्याओं पर आंदोलित करने में यांत्रिकता चल रही है। विभिन्न गैर-किसानी तबकों में विस्तार का कार्यभार वहीं का वहीं रुका हुआ है। संयुक्त मोर्चे के काम में कोई खास प्रगति नहीं है। स्थानीय जन संगठनों के नेतृत्व में अनैतिक स्त्री-पुरुष संबंधों, श्रम से दूर रहने जैसे गैर-सर्वहारा रुझान अपेक्षाकृत ज्यादा ही हैं। परिणामस्वरूप हम जनता की संगठित ताकत को सही समय पर ज्यादा नहीं बढ़ा सके। हमारी प्रत्येक गलती व कमजोरी का दुश्मन हमारे खिलाफ इस्तेमाल कर रहा है। हमारे जनाधार को कमजोर बना रहा है। जैसे कि हम दुश्मन की कमजोरियों का फायदा उठाते हैं, सहज ही, वह भी हमारी कमजोरियों का इस्तेमाल करेगा। इसे समझना चाहिए। विरोधी पक्ष पर प्रहार कर जीत हासिल करने की सोचने वाला कोई भी इसी तरीके से करेगा। जनाधार को बढ़ाने में बाधा बनी अपनी हर कमजोरी व हर खामी को हमें बिना देर किए सुधार लेना चाहिए इसके लिए गंभीरतापूर्वक प्रयास करने चाहिए।

अगर वर्ग संघर्ष और जनयुद्ध में जनता की सक्रिय भूमिका सुनिश्चित होनी है, अगर पार्टी व पीएलजीए को जनता से सक्रिय समर्थन मिलना है, अगर पार्टी व पीएलजीए में हजारों युवक-युवतियों को भर्ती कर लंबे-लंबे डग भरते हुए जनयुद्ध को विजय के पथ पर चलाना है तो - जनता के बीच पार्टी के राजनीतिक, सांगठनिक व सैनिक मोर्चों के सभी कार्यभारों को पूरा करने के लिए निरंतर व अथक प्रयास करने चाहिए। इस संबंध में भी, माओ के इस कथन पर कि 'जनता ही इतिहास की निर्माता है', सम्पूर्ण विश्वास रखकर जब उसे हम कथनी और करनी में भी लागू करते हैं तभी अपने जनाधार को बढ़ा सकेंगे - व्यापक बना सकेंगे। यह साबित कर सकेंगे कि 'जनता ही असली इस्पाती किला है'। आइए, पार्टी के इस पांचवें स्थापना दिवस के अवसर पर हम यह संकल्प लेंगे कि जनाधार को मजबूत व व्यापक बनाएंगे। अगले साल 6वें स्थापना दिवस के मौके पर हम इस क्षेत्र में अपनी प्रगति की समीक्षा कर आगे बढ़ेंगे।

कॉमरेडो,

अब आखिरी विषय - हमारी पार्टी की एकता कांग्रेस ने दण्डकारण्य व बिहार-झारखण्ड गुरिल्ला जोनों को आधार इलाकों में तब्दील करने के लिए जन मुक्ति गुरिल्ला सेना को जन मुक्ति सेना में तथा गुरिल्ला युद्ध को चलायमान युद्ध में विकसित करने का केन्द्रीय कार्यभार तय किया। इस कार्यभार को सफल बनाने में सहायक हों, इसके लिए गुरिल्ला युद्ध को नए इलाकों में विस्तारित करने तथा इन कार्यभारों को सफलता से पूरा कर सकें, इसके लिए पार्टी और जनाधार को मजबूत बनाने का आह्वान किया गया। लेकिन इन फैसलों को सफल बनाने की राह में बाधा के रूप में कुछ कमजोरियां हमारी पार्टी में हैं। हममें - पार्टी के भीतर जारी गैर-सर्वहारा रुझान ही इसकी जड़ में हैं। इनसे छुटकारा पाने के लिए ही एकता कांग्रेस ने समूची पार्टी को आह्वान किया कि भूल-सुधार अभियान चलाया जाए। हमारी केन्द्रीय कमेटी ने पिछले नवंबर (2007) में इस अभियान को ठोस रूप देने का फैसला किया। इस पर एक सरकुलर हाल ही में जारी किया। दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी ने भी हाल ही में इस अभियान पर चर्चा कर आवश्यक फैसला लिया।

इस भूल-सुधार अभियान को एक महान राजनीतिक व सैद्धांतिक जन आंदोलन के रूप में चलाने की जरूरत है ताकि गैर-सर्वहारा रुझानों से छुटकारा पाकर अपनी शक्ति व क्षमताओं को बढ़ाया जा सके। गुरिल्ला सेना शक्तिशाली बन सके तथा जन संगठन मजबूत बन सकें व जनाधार को बढ़ाया जा सके। दण्डकारण्य में भी निर्देशित लक्ष्यों की पूर्ति की राह में रोड़े बनी गलतियों को सुधारने एवं कमजोरियों से निजात पाने के लिए देश के अन्य राज्यों व अन्य विभागों की तरह इस भूल-सुधार अभियान को सुचारू रूप से चलाना चाहिए। इसे कितने अच्छे तरीके से चला पाएंगे, उतनी ही गारंटी पार्टी, जनसेना व जनाधार के मोर्चों में अपनी उपलब्धियों को होगी। इन तीन क्षेत्रों में हम जो प्रगति हासिल करेंगे उसी पर अपने केन्द्रीय कार्यभार का सफल अमल टिका हुआ है। यही हमारे भूल-सुधार अभियान का परिणाम तय करेंगे।

हम जिस प्रकार अपनी रायफल को रोज साफ करके किसी भी पल दुश्मन के साथ लड़ने के लिए तैयार रहते हैं, जिस प्रकार

रोज चेहरा धो लेते हैं, जिस प्रकार हर दिन या चंद दिनों के अंतराल में नहाकर कपड़े धो लेते हैं, उसी प्रकार हमारी पार्टी, जनसेना व जन संगठनों की यूनिटें आलोचना-आत्मालोचना चलाती हैं। इस कार्य में होने वाली कमियों व खामियों तथा पीछा न छोड़ने वाली कमजोरियों के चलते कभी-कभी भूल-सुधार कार्यक्रम चलाना पड़ता है। अगर ऐसा नहीं करते हैं तो वे बेकार बन जाएंगी। ऐसी बदहाली न आने पाए, इसलिए हमारी एकता कांग्रेस और केन्द्रीय कमेटी ने यह तय किया कि भूल-सुधार अभियान चलाकर मजबूत बनें।

भूल-सुधार अभियान चलाने का मतलब क्या है? रोजमर्रा की समूची कम्युनिस्ट गतिविधियों में - यानी वह एक बैठक का संचालन हो, अध्ययन कार्य हो, अध्ययन कक्षा का संचालन हो, एक लेख लिखना हो, भाषण हो, गाना हो, संघर्ष हो, एक संगठन का निर्माण हो, एक प्रदर्शन हो, एक नाच हो, एक फौजी कार्रवाई हो, एक आंदोलन हो - किसी में भी खामियां क्या हुईं? गलतियां क्या हुईं? वो कौन सी कमजोरियां और कमियां-खामियां हैं जो पीछा नहीं छोड़ रही हैं? उनकी ठोस अभिव्यक्ति किस प्रकार है? उनसे क्या नुकसान हुआ? उसके कारण क्या हैं? वे किन ठोस हालात में हुए? उन्हें समय पर समझकर सुधार लेने के प्रयास में क्या कमी रही? उन्हें किस हद तक सुधारा गया? पूरा सुधारने के लिए क्या करना चाहिए? इन सभी की इस भूल-सुधार अभियान में गहन जांच-पड़ताल होनी चाहिए। हरेक कामरेड को खुद की गहन जांच करनी चाहिए। हरेक यूनिट को खुद की गहन जांच करनी चाहिए। हरेक यूनिट को अपने तमाम सदस्यों की गहन-जांच करनी चाहिए। ऊपर से शुरू कर नीचे तक और नीचे से शुरू कर ऊपर तक - इस प्रकार एक दौर के बाद दूसरा दौर बेहतर तरीके से चलाना चाहिए। जैसे-तैसे इस भूल-सुधार अभियान को पूरा करने की दृष्टि से सतही तौर पर निपटा देने वाली औपचारिकता से भी, और कैसे भी एक और दौर ले सकता है, यह सोचकर इसे रस्मी तौर पर चलाने से भी इस भूल-सुधार अभियान का लक्ष्य धुंधला हो जाता है। इस भूल-सुधार अभियान को संघर्ष की महान स्फूर्तिभावना से हर मोर्चे पर - राजनीतिक, सैद्धांतिक, सांगठनिक व सैनिक - शक्तिशाली बनने के लक्ष्य से चलाना चाहिए। विश्व सर्वहारा के महान शिक्षक मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्तालिन और माओ तथा हमारी पार्टी के संस्थापक नेता व शिक्षक कामरेड्स सीएम व केसी तथा हजारों महान वीर शहीद अपने क्रांतिकारी व्यवहार के जरिए सर्वहारा क्रांतिकारी गुणों, संस्कृति, आदर्शों और परम्पराओं को हमारे सामने छोड़ गए हैं। उनके आदर्शों को मार्गदर्शक व उनकी बलिदानी भावना को प्रेरणा के तौर पर लेते हुए अपनी गलतियों व खामियों को सुधारकर, कमजोरियों को त्यागकर इस भूल-सुधार अभियान को सफल बनाएंगे। इसे सफल बनाकर अपनी पार्टी, सेना व जनाधार को शक्तिशाली बनाने के लिए कमर कस लेंगे।

कॉमरेडो,

दुश्मन ने पहले ही आंध्र के आंदोलन को अस्थाई पराजय में धकेल कर नेतृत्व की दृष्टि से हमें काफी नुकसान पहुंचाया। शासक वर्ग डींगें हांक रहे हैं कि वे देश में माओवादी आंदोलन को अपने लौह पैरों से जड़ से कुचल डालेंगे। दुश्मन द्वारा दी गई इस चुनौती को हम स्वीकार करेंगे। मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद, समाजवाद-साम्यवाद, माओवादी पार्टी, माओवादी आंदोलन और जनयुद्ध - ये सब बेहद वैज्ञानिक, प्रगतिशील व क्रांतिकारी हैं। ये सर्वहारा को, समूचे मेहनतकशों को व समस्त मानवजाति को सभी किस्मों के शोषण-उत्पीड़िनों से मुक्ति दिलाने वाले हैं। इसलिए ये अपराजेय हैं, अतिंम रूप से जीत इन्हीं की होगी, शोषक-शासक वर्गों के कुशासन को खत्म करने वाले हैं - इस सच्चाई को साबित कर दिखाएंगे। उन्नत विजयों को हासिल करने के लिए दृढ़ संकल्प से, तेज कदमों से आगे बढ़ेंगे।

अंत में, फिर एक बार दण्डकारण्य के सभी कामरेडों का क्रांतिकारी अभिनन्दन करते हुए इस संदेश को यहीं पर समाप्त करता हूं। **लाल सलाम!**

- **हमारी पार्टी के नेतृत्व व काडरों तथा आंदोलन की रक्षा करने के लिए दुश्मन की कुटिल एलआइसी योजनाओं और दावपेंचों को विफल करेंगे। सभी स्तरों पर पार्टी के गुप्त ढांचे को मजबूत करेंगे!**
- **क्रांतिकारी प्रतिरोध युद्ध को तेज कर शासक वर्गों के नए प्रति-क्रांतिकारी हमले को परास्त करेंगे! समूची पार्टी, जन सेना व जनता को सक्रिय करेंगे!!**
- **व्यापक जन समुदायों को राजनीतिक रूप से गोलबंद करते हुए वर्ग संघर्ष को तेज कर क्रांतिकारी जनाधार को बढ़ाएंगे! सभी जन संगठनों को मजबूत करेंगे!!**
- **दण्डकारण्य व बिहार-झारखण्ड के गुरिल्ला जोनों को आधार इलाकों में बदलने हेतु पीएलजीए को पीएलए में और गुरिल्ला युद्ध को चलायमान युद्ध में बदलेंगे! जनयुद्ध को देश के कोने-कोने में फैलाएंगे!!**
- **पार्टी में गैर-सर्वहारा रुझानों से निजात दिलाकर उसका बोल्शेविकरण करने के लिए भूल-सुधार अभियान को सफल बनाएंगे! पार्टी को राजनीतिक, सैद्धांतिक, सैनिक व सांगठनिक दृष्टि से मजबूत करेंगे!!**
- **हमारे महान शिक्षक व संस्थापक नेता, वीर शहीद कामरेड्स सीएम व केसी को लाल सलाम! नए समाज की स्थापना के लिए अपने अनमोल प्राणों को न्यौछावर करने वाले अपने हजारों प्यारे शहीदों के अरमानों को पूरा करने का संकल्प लेंगे!!** ★

अंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी सर्वहारा का लाल झण्डा ऊंचा उठाए रखो!
जनयुद्ध को नई बुलंदियों पर पहुंचा दो!!
दण्डकारण्य को आधार इलाका बनाने के लिए
पार्टी, जनसेना और जनाधार को मजबूत करो!!!

(21 सितम्बर 2008 - पार्टी के पांचवें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में दण्डकारण्य के कॉमरेडों के नाम महासचिव कॉमरेड गणपति द्वारा भेजा गया संदेश - संपादक मण्डल)

प्यारे कॉमरेडो,

हमारी पार्टी - भाकपा (माओवादी) के पांचवें स्थापना दिवस - 21 सितम्बर 2008 - के अवसर पर दण्डकारण्य के क्रांतिकारी आन्दोलन का प्रत्यक्ष रूप से नेतृत्व करने वाले केन्द्रीय कमेटी सदस्यों, स्पेशल जोनल कमेटी समेत सभी कमेटियों के कॉमरेडों, तमाम पार्टी सदस्यों, पीएलजीए के बहादुर कमाण्डरों, तमाम लाल योद्धाओं, जन संगठनों के नेतृत्व, तमाम सदस्यों, जनताना सरकार के नेतृत्व, विभिन्न विभागों के कॉमरेडों और क्रांतिकारी जनता का मैं अपनी केन्द्रीय कमेटी की तरफ से हार्दिक क्रांतिकारी अभिनन्दन पेश करता हूं।

कॉमरेडो,

हमारी पार्टी के नेतृत्व में जारी नव जनवादी क्रांति में पिछले एक साल में 250 कॉमरेडों ने अपने अनमोल प्राणों को न्यौछावर किया। इन शहीदों में केन्द्रीय कमेटी की सदस्या कॉमरेड अनुराधा गांधी से लेकर आम सदस्यों तक, पीएलजीए के बहादुर कमाण्डर, लाल योद्धा, जन संगठनों के नेता, सदस्य और क्रांतिकारी जनता शामिल हैं। अपनी पार्टी के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में हम इन तमाम वीर शहीदों को बंद मुट्ठियों से क्रांतिकारी सलाम पेश करेंगे। साथ ही साथ, विश्व पूंजीवाद का जड़ से सफाया कर, वर्गीय शोषण समेत हर किस्म के शोषण को खत्म कर साम्यवादी समाज की स्थापना करने के लक्ष्य से कई देशों में जारी सर्वहारा क्रांतिकारी संघर्षों तथा उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं के संघर्षों में प्राण गंवाने वाले तमाम वीर शहीदों को हम बंद मुट्ठियों से क्रांतिकारी अभिवादन करेंगे। अंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी सर्वहारा के लाल झण्डे को ऊंचा उठाए रखते हुए दुनिया के मजदूरों व तमाम मेहनतकशों के मुक्ति संघर्ष में अपना गर्म लहू बहाने वाले इन साहसिक व निस्वार्थी शहीदों के आदर्शों से प्रेरणा पाकर उनके अधूरे मकसद को पूरा करने की शपथ लेंगे।

कॉमरेडो,

विश्व पूंजीवाद व साम्राज्यवाद तथा हर किस्म के प्रतिक्रियावाद के खिलाफ, समाजवाद व साम्यवाद के उच्च लक्ष्य के साथ विश्व क्रांतिकारी सर्वहारा द्वारा चलाई जा रही विश्व समाजवादी महाक्रांति के तहत, विश्व सर्वहारा के अगुवा दस्ते के अभिन्न अंग के तौर पर भारत में हमारी पार्टी का उदय हुआ। हमारी पार्टी कामरेड चारू मजुमदार के नेतृत्व में 22 अप्रैल 1969 को भाकपा (मा-ले) के रूप में तथा कामरेड कन्नाई चटर्जी के नेतृत्व में 20 अक्टूबर 1969 को एमसीसी के रूप में - दो धाराओं में पैदा हुई। 1990 के दशक में कामरेड माओ के नेतृत्व में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के साथ-साथ कई देशों में क्रांतिकारी संगठनों द्वारा ख्रुश्चेव के आधुनिक संशोधनवाद के खिलाफ चलाए गए महान सैद्धांतिक व राजनीतिक संघर्ष के फलस्वरूप, चीन में पूंजीवाद की पुनरस्थापना के खिलाफ चलाई गई महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति, जिसने समूची दुनिया को हिला दिया था, के फलस्वरूप भारत में गहरे तक जड़ जमा चुके संशोधनवाद के खिलाफ कामरेड सीएम और केसी की अगुवाई में क्रांतिकारी ताकतों द्वारा चलाए गए सैद्धांतिक व राजनीतिक संघर्ष के फलस्वरूप हमारी दोनों क्रांतिकारी धाराएं पैदा हुईं। 36 सालों के लंबे क्रांतिकारी व्यवहार के दौरान 21 सितंबर 2004 को हमारी एकताबद्ध पार्टी - भाकपा (माओवादी) का उदय हुआ। मार्क्सवाद के उदय से लेकर, उस सिद्धांत को अपना हथियार बनाकर विश्व क्रांतिकारी सर्वहारा वर्ग पूंजीवाद का सफाया कर पूरे विश्व में समाजवाद की स्थापना करने के लिए अविराम संघर्ष करता आया है। उसी आदर्श को और उन्हीं मूल्यों व परम्पराओं को ऊंचा उठाते हुए हमारी नई पार्टी - भाकपा (माओवादी) पैदा हुई। हमारी एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस द्वारा निर्देशित लक्ष्यों को हासिल करने के लिए दण्डकारण्य, बिहार-झारखंड समेत देश भर में सभी इलाकों में हमारी पार्टी ने साम्राज्यवाद, सामंतवाद व दलाल नौकरशाह पूंजीवाद के खिलाफ जनयुद्ध को तेज किया। अपनी पार्टी के 5वें स्थापना दिवस के मौके पर हम इस संघर्ष को और भी तीखा करने और भी दृढ़ता से और उन्नत स्तर में पहुंचाने की शपथ लेंगे। विश्व सर्वहारा के क्रांतिकारी लाल झण्डे को ऊंचा उठाए रखकर लक्ष्य पूर्ति के लिए खुद को दोबारा समर्पित करेंगे।

(शेष पृष्ठ 42 में...)